॥ श्री महावीराय नमः ॥

प्राचीन जैन भजन संग्रह

[राग क्रम से अपूर्व भजन-संग्रह]

संग्रहकर्त्ता एवं प्रकाशक

गैन्दीलाल भाँवसा

मंत्रीः-बाल सहेली

लालजी सांड का रास्ता, जयपुर

प्रथमवार ५००	भाद्रपद २०१३	मूल्य २)

पुस्तक प्राप्ति स्थान :—

वीर पुस्तक भण्डार,

ठिकाना:—श्री वीर प्रेस,

मनिहारों का रास्ता, जयपुर

मुद्रक :—

श्री वीर प्रेस, जयपुर

प्रकाशकीय

आज से ठीक ५४ वर्ष पूर्व की बात है जब मेरी उम्र १६ वर्ष
की थी। श्रावण शुक्ला चतुर्दशी विक्रम संवत् १६७६ को शुक्रवार
की सहेली (बाल सहेली) की स्थापना हुई। जीवन के प्रारंभ से ही
ऐसे सयोग मिले कि जयपुर मे जहां कहीं मदिर मे भजन पूजन
आदि होते मैं मेरी पूज्य दादी के साथ जाया करता था। इससे
मेरे संस्कारों पर काफी प्रभाव पड़ा। मन मे यह विचार हुए कि
सांसारिक कार्यों के अतिरिक्त थोडासा समय ईश्वरोपासना-भगवद्-
भक्ति में भी क्यों न लगाया जावे। मेरे मित्र स्व० श्री छगनलालजी
बैनाडा (भगतजी) ने इसमें प्रेरणादी और स्व० श्री मांगीलालजी
श्रीमाल (भाई केवलचन्दजी श्रीमाल के बाबा) आदि कतिपय
अन्य सज्जनों के सहयोग से उक्त तिथि से जयपुर के प्रख्यात
मंदिर श्री महावीर स्वामी, जो कालाडेरा का मंदिर कहलाता है—
में रात्रि के समय प्रतिदिन ९॥ बजे तक भगवान महावीर की
मूर्त्ति के पीछे वाली वेदी मे विराजमान श्री चन्द्रप्रभु भगवान के
सामने भजन करने लगे। धीरे २ बहुत से सज्जन एकत्र होने लगे
और नियमित रूप से आने लगे। इस कार्यक्रम मे सम्मिलित होने
वालों की संख्या जब काफी बढ गई तो बाहर चौक मे बैठकर
भजन करने लगे।

कुछ दिनो तक यह कार्यक्रम चलता रहा। लोगो ने क
एक ही जगह हम रोज एकत्र होकर भजन करें इसकी अ
भिन्न २ मंदिरों मे चलें और पूजन तथा भजन दोनों का कार्य
रहे तो अच्छा। श्री छगनलालजी बाकलीवाल जोशी तथा
श्री सुगनचन्दजी पाटनी सोद्या ने कहाकि भजन सादा न
साजों के साथ होना चाहिए, जिससे सगीत के जानकार भी
लोग हों। पर इसके लिए शिक्षा लेना और अभ्यास
आवश्यक था। उस समय जयपुर मे शुक्रवार को सरकारी
होती थी। अत प्रत्येक शुक्रवार को मदिर चैत्यालय मे वहा
व्यवस्थापकों के निमत्रण पर पूजन होने लगी तथा रात्रि को
भजनों का कार्यक्रम हर शुक्रवार को होने लगा।

आसोज शुक्ला ५ स० १६६० को पाच सात व्यक्तियो
मारूजी के मदिर में सगीत की शिक्षा लेना प्रारभ
श्री गोविंदलालजी मुशी जो सगीत के अच्छे जानकार थे,
प्रतिदिन संभाल होती थी। श्री लूणकरणजी गोधा एव श्री ज
लालजी छाबडा भी सभालते थे। शिक्षा लेते हुए कुछ ही दिन
थे कि जयपुर मे प्लेग की बीमारी शुरू होगई। लोग इधर
होगये—पर पूजन तो, जहां कहीं भी हम लोग रहे अपने
तौर पर करते ही रहे। प्लेग समाप्त के बाद पुन' जब जयपुर
सब आगये तो पुन' पूर्ववत् कार्यक्रम चलने लगा। चैत्र
शुक्रवार सवत् १६६२ से जयपुर नगर व उसके आस पास
मदिर चैत्यालयों मे प्रत्येक शुक्रवार को प्रात 'पूजन और

मे नियमित रूप से करना प्रारंभ हुआ जो आजतक बराबर रहा है।

इस सहेलो के प्रारंभ करने मे जिन सज्जनों का सहयोग रहा नाम ये हैं—स्व० श्री मागीलालजी श्रीमाल, उनके पुत्र स्व० हीरालालजी श्रीमाल, स्व० श्री छिगनलालजी बैनाडा (भगतजी), श्री नेमीचन्दजी विनायका, स्व० श्री गुलाबचन्दजी बाकलीवाल श्री फूलचन्दजी भौसा (भट्टजी), स्व० श्री लूणकरणजी गोधा, श्री चादूलालजी सरणका, स्व० श्री जवाहरलालजी छावडा के पुत्र स्व० श्री फूलचन्दजी छावडा. स्व० श्री भकतावरलालजी वैद, स्व० श्री फतहलालजी कटारिया, स्व० श्री छुट्टनलालजी श्री छोगालालजी सोगाणी आदि थे जिनका स्वर्गवास हो चुका। इनके अतिरिक्त श्री मु० मालीलालजी कासलीवाल दीवान सुरजमलजी वाकीवाले, श्री लिछमणलालजी चोधरी, श्री छोगा लजी नू गावाले, श्री गुलाबचन्दजी ठोलिया सराफ, श्र सवालालजी ा, श्री छिगनलालजी बाकलीवाल जोशी, श्री चिरंजीलालजी वैद, भूरामलजी सेठी, श्री छीतरमलजी घीवाला, श्री रामसुखजी ला, श्री गुलाबचन्दजी लवाड्या (टोपलजी), श्री छिगनलालजी सलीवाल, श्री गोपीचन्दजी ठोलिया जौहरी, श्री मालीलाल जी णा, श्री दामोदरजी टूकडावाले, श्री गुलाबचन्दजी कोडीवाले, लखमीचन्दजी गगवाल, श्री चुन्नीलालजी भौंच, श्री गुलाबचदजी सुंठी पसारी, श्री लखमीचंदजी साह, श्री गूजरमलजी झांझरी, श्री गुलाबचन्दजी काला चांवलवाले, श्री म्होरीलालजी बिलाला, श्री केशरलालजी फागीवाले आदि का प्रारंभ में सहयोग था।

इनमे से कई सज्जनों का सहयोग तो अब भी पूर्ववत् चल रहा है और कइयों का बाहर इधर उधर चले जाने, अथवा समय न मिलने अथवा इधर रुचि न रहने से पूर्ववत् सहयोग तो नहीं है पर वे इस सहेली से दूर हैं, यह नहीं कहा जा सकता। समय समय पर बहुत से सज्जन इसमे सम्मिलित होते गये और कई पुरानों के सहयोग मे कमी होती गई। लगातार नियमित रूप से किसी कार्य को करते रहना बडा मुश्किल है चाहे वह छोटा ही क्यों न हो। धार्मिक कार्यों में कुछ ऐसा ही होता है। इसे काल दोष ही कहा जा सकता है। पर इस सहेली के इस कार्य क्रम मे उक्त तिथि से आजतक कभी एक भी दिन कमी नहीं आई, आधी तूफान वर्षा गर्मी शीत बीमारी आदि का हमारे इस कार्य-क्रम परकोई असर नहीं पडा।

सहेली के कारण हजारों जीवों को भजन पूजन एवं भगवद्भक्ति का लाभ तो हुआ ही साथ ही जयपुर के निकटवर्ती सभी मंदिरों की संभाल भी हुई। समय समय पर सहेली द्वारा होने वाले कलशाभिषेक आदि आयोजनों से मदिरों को आर्थिक लाभ और फलत' कई मदिरों का जीर्णोद्धार भी हुआ। सहेली के कारण समाज मे संगीत का प्रचार हुआ और नृत्य कला का भी। पर आज लोगों की रुचि शास्त्रीय सगीत की तरफ बहुत कम है। चलते ट्यूनटप्पे अधिक पसन्द होते हैं, यह अच्छा नहीं। हजारों जैन कवियों के अच्छी २ राग रागनियों मे भजन हैं- पर उनकी तरफ आज ध्यान बहुत कम जाता है। आज के पचास

वर्षपूर्व जितने प्राचीन भजन लोगों को याद थे आज नहीं के बराबर हैं। कुछ बन्धुओं की प्रेरणा हुई कि भजनों का एक संग्रह अगर हो जाय तो अच्छा है। फलत मुझे एव सहयोगी श्री छगनलालजी बाकलीवाल जोशी, श्री चिरजीलालजी वैद श्रीमूलचदजी खिन्दूका, श्री चिरजीलालजी टोंग्या, श्रीलखमीचदजी गगवाल, श्री भूरामलजी सेठी, श्री दासूलालजी छाबडा, श्री केवल चंदजी श्रीमाल आदि को जो भजन याद थे उनका संग्रह यह आप लोगों के सामने है। इस पुस्तक में सायकाल को राग से प्रारभ करके रात्रि भर की तथा दिन भर की मुख्य मुख्य राग रागनियों के भजन सिलसिलेवार दिये गये हैं ताकि गायक को सुविधा मिले। वैसेतो एकही भजन कई राग रागनियों मे गाया जा सकता है। रागवार जैन भजनों का संग्रह होना-यह प्रथम प्रयास है। जयपुर जैन समाज मे शास्त्रीय सगीत कुछ उठतासा जारहा है-यह उपेक्षा उचित नहीं है। इधर ध्यान देना आवश्यक है। आशा है यह पुस्तक पाठकों को पसन्द आवेगी।

इसकी प्रेस कापी श्रीमूलचदजी खिन्दूका, श्री छगनलालजी जोशी एव श्री चिरजीलालजी वैद ने तैय्यार की है-इसके लिए उन्हें धन्यवाद। इसका संशोधन आदि मेरे सुयोग्य पुत्र चि० भँवरलाल न्यायतीर्थ ने किया है।

अन्त में जिन सज्जनों के सहयोग से सहेली का कार्य अब तक अबाध रूप से चलता आया है उन सब सज्जनों को धन्यवाद है।

मेरी अब वृद्ध अवस्था है-जहाँ शरीर है वहाँ आधि व्याधियां भी हैं ही, पर आत्मा से इनका क्या सबन्ध ? मेरी कामना है-कि यह बाल सहेली का भजन और पूजन का कार्य-क्रम आगे निरन्तर चलता ही रहे। पर यह सब धर्म प्रेमी सज्जनों के सहयोग पर ही निर्भर है। आशा है सभी सज्जन सहयोग देंगे।

※ भगवान महावीर की जय ※

लालजी सांडका रास्ता जयपुर नगर श्रावण शुक्ला चतुर्दशी वि० स० २०१३	गैंदीलाल भॉवसा मत्री—बाल सहेली जयपुर।

विषय सूची

(अकारादि क्रम से)

पद

अरे भाई सुनरे चतुर नर होवे जगत मे
अरे मन बनिया बान न छोड़ै
अरे निज बतियां क्यों नहीं जानै
अब तो कुमति गम खा री हत्यारी
अरे मन पापन सों नित डरिये
अब जग जीता बे हो मानूं
अब पूरी कर नींदडी
अरज सुनो प्रभु करुणापति
अरजी चित्त धरो जिनन्द म्हारा
अब मेरे समकित सावन आयो
अरे इस दम का क्या भरोसा
अपने ही रंग मे रंगयो
अशरण शरण कृपाल लाल कैसे जाओगे

आ

आज कोऊ अद्भुत रचना रची
आज उछाह घनोजी हो म्हारे मन
आज भरोसो म्हाने थांको
आज जिन छवि दृगन में भरी
आज दुविधा मेरी मिटगईजी
आज महावीर स्वामी बन्दूं मन लाय के
आज कहीं नचत २ सुरन वृन्द आये

इ

पद	संख्या

क

पद	संख्या
जिन दर्शन तैं मोह काप्यो थरर	६१
जिनवर देख दृगन सुख पायो	११३
जियरा विरानी संग तू भयो	१२०
जगतपति कौन भांति तिरना	१२७
जग मे जीवन थोरा रे	१३६
जिस विध कीने करम चकचूर	१५८
जनम बिरथा न गमाओजी	१५३
जय शिव कामिनी कंतवीर	१६४
जगत गुरु कब निज आतम ध्याऊं	१६७
जियाजी थानैं किन विधि राखूं समझाय	१७६
जब आतम अनुभव आवै तब और कछु न सुहावै	२०१
जिया तुम चालो अपने देश	२१२
जिनवाणी माता दरशन की बलहारियां	२१६
जियारे या देह विरानी मति अपनावे	२४५
जिया तैं नामानी तूने केई वार समझायो	२४७
जिनवर देव सुहावै परम शान्ति रसभीनी मूरत	२६१
जिन नाम सुमरि मन बावरे	२६३
जातढंकी म्हे जानी छैजी राज	२६६
जब निज ज्ञान कला घट आवै	२७१
जगत में सम्यक् उत्तम भाई	२७६
जिनराज रहै अब लाज	२८८

पद	सख्या
जिनराज ना विसारो मति जन्म वादि हारो	२६७
जिसने छवि आपकी जिन देव निहारी होगी	३०७
जब ऐमाले गुजिस्ता को हम अपने याद करते हैं	३०६
जिया तुम चोरी त्यागोजी	३१८
जिया तजो पराई नारि येतो	३२२
जिया तू दुखसे काहे डरे रे	३४८
जिया जग धोके की टाटी	३५६
जिया तू तन में मत राचै	३६६
जिया तोहे समझायो सौ सौ वार	३६३
जिन वाणी सु मेरो मन लाग्योजी	४०८
जीव तू भ्रमत सदीव अकेला	४१२
जब निज ज्ञान कला घट आवै	४१४
जिन थाकी छवि मो मन भाई	४४०
जिनराज चरन मन मति विसरै	५०५
जम आन अचानक दावैगा	५०८
जिनवर संग हमरे दृग रलिया	५०६
जानो छोतो म्हारी सुन लीजो	५३६

ट

टुक नजर महर की करना	६२

ठ

ठाडी अरज करै राजुल नारी	३१४

पद संख्या

ड

त

पद	संख्या

पद संख्या

न

भ

पद	संख्या

पद	संख्या

ह

सूची राग क्रम से

❀ श्रीमहावीराय नम ❀

प्राचीन जैन भजन संग्रह

❀ मंगलाचरण ❀

[१—राग –श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

हो परम गुरु परम दयाल परमपद देनहार समरथ जिनराय।
पावन परम करन पावन अरु परमानन्द रूप राजत सब जीवन ताप बुझाय ॥१॥
परम ज्योति परमात्मा परम वैरागी परमऔदारिक काय।
परम विभूति निहारो निश्चय 'उदय' परमपद पाय ॥२॥

[२—श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

पायो हो अब ही जिनवर सरूप मैं जगतारक सुखकार ॥
आप समय गहि आन भाव तज वीतराग परणति मई होकर अर्थन जाननहार ॥१॥

जबलौं मैं तुम भेद लह्यो नहीं, तबलौं ही मैं परसे आन
लगायो तान ।
निरख "उदै" छवि भरम मिट्यो तब राखूं हिरदय माय ।
अब निश्चय उर तबलौं शिव निरधार ॥ २ ॥

[३—श्याम कल्याण व ईनन कल्याण]

माधोरी मूरत जिनपद सोहत सुन्दर उर धर सब दुख द्वन्द
नास्यो ।
राग द्वेष बिन शान्त पूरण गुण क्रांत लखि लखि शुद्धातम-
रूप भास्यो ॥१॥
केई ब्रह्म केई विष्णु केई ईश केई शीप केई शुद्ध केई बुद्ध
नाम प्रकास्यो ।
अर्थ भेद भिन्नते विरोध बीतत जात 'नैन' एक जैन को
उपास्यो ॥ २ ॥

[४—श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

माधोरी जिनवाणी चलोरी सुनिये ॥ टेर ॥
विपुलाचल पर बाजे बाजत, भनक परी मोरे कान ॥१॥
वर्द्धमान तीर्थंकर आये बंदे निज गुरु जान ।
जाके वंदत पैय्यत है री मुक्ति महा सुख-थान ॥१॥
सखियन संघ चेलना राणी करि है भक्ति उर आन ।
दर्शन करके भई प्रफुल्लित 'जग' प्रभु से हित ठान ॥३॥

[५—श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

पलकन से मग झारूं ए री हे महा जो मुनि आवे द्वार मेरे ।टेर।
कनक रतनमय कर ले झारी चरण कमल को पखालूं ॥१॥
कर पर कर धर अशन कराऊं, भव भव के अघ टारूं ।
जनम कृतारथ जब ही मेरो, 'जग' जिन रूप निहारूं ॥२॥

[६—श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

करमूंदा कुपेच मेरे है दुखदाइयां ॥ टेर ॥
कर्म हरण महिमा सुन आयो सुनतें मैंडी साइयां ॥१॥
कबहुक इन्द्र नरेन्द्र बनायो कबहुक रंक बनाइयां ।
कबहुक कीटक गयंद रचायो ऐसा नाच नचाइयां ॥२॥
जो कुछ भई सो तुम प्रभु जानो मैं जानत हूं नाइयां ।
ज्यां विध कर्म प्रभु तुमने काटे, सो 'बुध' मोहि बताइयां ॥३॥

[७—श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

हो जिन शरण गही मे तोरी ॥ टेर ॥
जग जीवन जिनराज जगतपति, शरण गही मैं तोरी ॥१॥
तारण तरण करन पावन जग, हरण करण भव फेरी ॥२॥
ढूंढत फिर्यो भ्रम्यो नाना दुख, कहुं न मिली सुख सेरी ।
याते तजी आन की सेवा, सेव रावरी हेरी ॥३॥
पर में मगन विसार्यो आतम फस्यो जाल जग केरी ।
यह मति तजूं भजूं परमातम, सो 'बुध' कीज्यो मेरी ॥४॥

[८—श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

हो मेरे जिन मन वसिया हो हो ॥ टेर ॥
हेजी चन्दाला जिय दिठलाजा, तैंडी मूरति की बलिहारी
हारी हारी ।
तोरी बाणी सुन सुन सुन मिथ्यामत गया बिसराय ॥१॥
हेजी लज्जाला जिन मन गीता, ऐसा जिनजी पर वारी ३ ।२।
तैंनु जाप्या सोहं सोहं सोहं, अच्छा'मन'पाया विसराम ॥२॥

[९—श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

सुन्दर जिनवर चरण कमलदा, मुझ पूजन दा चाव है ।टेर।
अघरज रहित दूर जडताते निज-पर-चिन्ह स्वभाव है ॥१॥
इन्द्र समवश्रृत मधि थापे तौ, अन्तरीक्ष परभाव है ।
'नैन' देख आताप मिटे सव शिव मारग दरशाव है ॥२॥

[१०—श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

अव म्हारे मन बसो सरस्वती माता ॥ टेर ॥
अर्हन् मुख अंबुजते निकसी, परमातम पद दाता ॥१॥
ग्यारह अंग अरु चौदह पूरव तेरो ही दरश विख्याता ।
स्याद्-वाद मय वचन तिहारो, 'नेम' लखें सो ही ज्ञाता ॥२॥

[११—श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

तुम प्रभु कहियत दीन दयाल ॥ टेर ॥
आपन जाय मुकति में बैठे हमजु रुलत जगजाल ॥१॥

तुमरो नाम जपैं हम नीके, मन वचतन तिहुँ काल ।
तुमतो हमको देत कछू नहिं हमरो कौन हवाल ॥२॥
भले बुरे हम भक्त तिहारे, जानत हो हम चाल ।
और कछू नहीं यह याचत हैं, राग द्वेष दोउ टाल ॥३॥
हमरी भूल भई सो बख्सो, तुम तो कृपाविशाल ।
'द्यानत' एक बार प्रभु जगतैं, हमको लेहु निकाल ॥४॥

[१२—श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

आज कोउ अद्भुत रचना रची ॥ टेर ॥
जुगल इन्द्र दोऊ चमर ढुरावे, नृत्य करत है शची ॥१॥
समवशरण महिमा देखन की, होडाहोड मची ।
स्वर्ग विमान तुल्य छवि जाकी, देखत मनन खची ॥२॥
जिन गुण रस स्वारस रस इनमें रींझत जात पची ।
'नवल' कहे उर आवत ऐसे, हर्ष धार के नची ॥३॥

[१३—श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

तुम सुधि आये मोरे आनन्द की उठत हियरा चाहिया हो-
तुम्हारे नामके जाप का फल, आगम में लेखा ।
सिंह स्याल वानर तिरे कहु कोलौं विशेखा ॥१॥
अपने जियाके काज का कोई न्याय न देखा ।
तुम ही हो प्रभु ई काल में सब विधि पेखा ॥ २ ॥

[१४—श्याम कल्याण व ईमन कल्याण]

भावन्दा जिन प्यारा मेनू, उरधर निज गुण गावन्दा ।टेर
निरखत शान्ति छवि भाव मिथ्यात्व नसावन्दा ।
वचन सुधा सम सुन सम्यक्ज्ञान पावन्दा ॥ १ ॥
काल अनादि भव भटके, विकार भावन्दा ।
अब शुभ योग बन्यो थिर होय ध्यान ध्यावन्दा ॥२॥
ये ही विधि पाय फिर आन कहूँ न जावन्दा ।
"नैन" निहार सुधि आतम माझ थावन्दा ॥ २ ॥

[१५—राग-भोपाली]

मोहे तारोजी पाँवा लाग्या, मेरी विनती यह सुन लीजे ।टेर
पाँवा लाग्या गुण अनुराग्या, आन देव सब त्याग्या ॥१॥
दुष्ट करमते भव भव माहीं निजगुण कबहुँ न जाग्या ॥२॥
अष्ट करम विध्वंसक तुम लख, मन वच शिव सुख पाग्या३

[१६—भोपाली]

ॐ पांचों परमेष्ठी ध्याऊं, सुमरि सुमरि कर हरपि हरपि कर बार बार शिर नाऊं ॥ टेर ॥

अरहंत सिद्ध आचारज स्वामी उवज्झाय साधु पंच पदनामी ।
सब जिन प्रतिमा और जिनवाणी कृत्रिम अकृत्रिम जिन गृह धामी ॥

इन सबको मैं घडी घडी पल पल बार बार सिरनाऊं ॥१॥
ये ही मंगल ये ही उत्तम, इनका शरणा धारण कर हम।
बीन मृदंग बांसुरी लेकर, गाय बजाय नृत्यहु ताण्डव ॥
सप्त सुरन अरु तीन ग्रामयुत, श्री जिनेन्द्र गुण गाऊं ॥२।
सा रे ग म प ध नी सा, सा नी ध प म ग रे सा ।
ग ग रे ग ग रे सा नि ध प म ग रे सा ।
ता थेई थेई ता ता थेई थेई ता,
नादिर दानी तुम तिर दानी, तुम तन तिरणा,
मंगल गान आनन्द सुकरना, 'बलदेव' प्रभुको मन वच तन
कर बार बार शिर नाऊं ॥ ३ ॥

[१७ – राग–केदारा]

तेरी गति कोउयन पावै, प्रभु मेरे कहत नहीं बन आवै ।टेर।
पचपच हारै सुरनर मुनि जन, कर कर जप तप भावै ॥१॥
रसना एक गुण बहु तेरे, ताको गणधर पार न पावै ।
तुम से तुम ही हो जग नायक, "चैन विजय" शिर नावै ॥२॥

[१८ केदारा]

तुम से जिनराज हितवा, तुम से जिनराज हितवा ।
लागी लवा, वेग बतावो शिव राह पियारे । तुम से जिन. ।टेर।
कनक कामिनी भावै न मोकूँ, सकल दोष तज दीने सारे ।

वीतराग सर्वज्ञ अमल द्युति, तत्त्व यथा विधि देशनहारे ॥२
'नैन' जान तुमरौ गुण नीके, आन शरण तज दीनी सारे ।३।

[१६—केदारा]

कितोक भार है या अँगुली में, एतो तौ न देख्यो गिरि-
वर में ॥टेर॥
गोवर्धन जिन सहज उठायो, सो हरि परो दरव में ॥१॥
बल करथके न सरकत क्योंही, पच हारयो हरि हिय में ।
जब कर एँच झुलायो स्वामी, फिर उतरयो घर में ॥२॥
तब पछतावत नारायण, इम वृथा करी सर भर में ।
"जगतराम" प्रभु नेमीश्वर को, सुयशभयो घर घर में ॥३॥

[२०—केदारा]

कीजिए नाथ प्रतिपाल मुझ दीन को मैं भयो दास चरण
केरो ॥टेर॥
प्रकट संसार में साख मैं तो सुनी, पतित पावन प्रभु
नाम तेरो ॥१॥
मनुज अटक्यो मेरो दूर कैसे सिन्धु की नाव जिम
खग बसेरो ।
"नवल" तुम नाम गुण धार उर में थक्यो अन्य नहीं कर
सके भ्रमण केरो ॥२॥

[२१—केदारा]

मंगल आधार विश्वं ज्ञातार सुखकार, आ आ आ आ ।

कर्म चार ने तार साकार यह तौंगी छवि न्यारी मैं वारी,
वलहारी परमातम पद धारी वाणी को विस्तारी तौ पै वारी ॥
पतित उधार लाखों तुम, 'चिमन' शरण राखो
विनती तोरी आ आ-करत खडे नर नारी ॥

[२२—केदारा]

तेरो मत सब रखवालो, प्रभु मेरे, काहू को न करत विगाडो।
स्थावर जंगम जीव जिते सब पालन तारन हारो ॥
पंच पाप जगमें दुखदायक, उपदेशक तुम दूर विडारो,
आतमरूप जनाय यथा विधि, 'नैन' परम सुखकारो ॥

[२३—दरबारी कान्हरा]

शुभ घडी शुभ दिन महूरत, नाभिनन्दन के चरण परसे।
अंग अंग हुलसे तन पुलकत, आनन्दके अति झड़ बरसे।१।
भव भव तुम दरशन विन साहिब, मो नैना अति ही तरसे।
गुणपूरण लख छविमें रावरी, 'उदय' भाग जब ही सरसे।२।

[२४—दरबारी कान्हरा]

तुम साहिब मैं चेरा, मेरा प्रभुजी हो ॥ टेक ॥
चूक चाकरी मो चेरा की, साहिब हो जिन मेरा ॥१॥
टहल यथाविधि बन नहीं आवे, करम रहे कर घेरा।
मेरो अवगुण इतनो ही लीजे, निश दिन सुमरन तेरा॥२॥

करो अनुग्रह अब मुझ ऊपर मेटो अब उरझेरा ।
'जगतराम' कर जोड वीनवै राखो चरणन नेरा ॥३॥

[२५—दरबारी कान्हरा]

तुम साहिब मैं चेरा—मेरा प्रभूजी हो ॥ टेक ॥
डूबत हूँ संसार कूप में, काढो मोहे सवेरा ॥१॥
नाती गोती सुखके साथी, चाहत हैं सुख सेरा ।
जम की तपत पडे तन ऊपर, कोई न आवे नेरा ।२।
मैं सेये सब देव जगत के, फन्द टरा नहीं मेरा ।
पर उपकारी हो जीवनके, नाम सुन्या मैं तेरा ॥३॥
ऐसो सुयश सुन्यो है रावरो, जिन चरणन चितचेरा ।
'साहिब'मो पर किरपा कीजे,फिर न लहूं भव फेरा ॥४॥

[२६— दरबारी कान्हरा]

प्रभु-तुम मूरत दृग सो निरखी हरपे मोरा जियरा ॥टेक॥
बुझत कपायानल पुनि उपजे ज्ञान सुधारस सियरा ।
वीतरागता प्रगट होत है, शिव थल दीसे नियरा ॥२॥
'भागचन्द' तुम चरण कमल में वसत सन्त जन हियरा॥३

[२७—दरबारी कान्हरा]

घडी घडी पल पल छिन छिन निशदिन प्रभुजीको सुमरण
करले रे ॥ टेक ॥
प्रभु सुमरे ते पाप कटतं हैं , जन्ममरणदुख हरले रे ।

मन वच काय लगाय चरण चित ज्ञान हिया विच धरले रे
'दौलतराम' धरम नौका चढ़ भवसागरमें तिरले रे ॥

[२८—दरबारी कान्हरा]

मेरे कब ह्वै या दिन की सुघरी ॥ टेर ॥
तन विन वसन असन विन वनमें, निवसों नासा दृष्टि धरी. १।
पुन्य पाप परसों कब विरचों परचों निज निधि चिर विसरी।
तज उपाधि सजि सहज समाधी सहौं घाम हिम मेघ झरी।
कब थिर जोग धरों ऐसो मोहि उपल जान मृग खाज हरी।
ध्यान कमान तान अनुभवशर छेदों किह दिन मोह अरी।३।
कब तृण कंचन एक गिनूं मे मणि जड़ितालय शैल दरी।
'दौलत' सत गुरु चरण सेयज्यूं पूरो आश यही हमरी॥४॥

[२६—दरबारी कान्हरा]

अब मोहे तार लेहु महावीर ॥ टेर ॥
सिद्धारथ नंदन जगवन्दन, पाप निकन्दन धीर ॥१॥
ज्ञानी ध्यानी दानी जानी, बानी गहन गंभीर।
मोक्ष के कारण दोष निवारण, रोष विदारण वीर ।२।
समता सूरत आनन्द पूरत, चूरत आपद पीर।
बालयती दृढव्रती समकिती दुख दावानल नीर ३॥
गुण अनन्त भगवन्त अन्त नहीं, शशि कपूर हिम हीर।
'द्यानत' एकहू गुण हम पावें, दूर करे भव भीर ॥ ४ ॥

[३०—छायानट]

परम दीन की अरज, दीनपति, परम दीन की अरज । टेक
महर नजर कर निरखे नाथ तुम, कटत कर्मको करज॥१॥
भक्ति रावरी सुधा पान कर, लेत तान अति लरज लरज ।
पूर्ण प्रेम 'नेम' मन धर कर, गावत अपनी गरज ॥२॥

[३१—छायानट]

तेरे ही दरबार अब तो हूँ आयो ॥ टेक ॥
न्याय न निबरत और ठौर मेरा, मौसे झगरत करम लबार ।१
मैं कहूँ मेरे बन्ध नाहीं ये कहे चार प्रकार ।
योग, कषाय हेतु तिनको, तेहु मेरे नाहीं विकार ॥ २ ॥
मैं चिन्मूरति यह जड रूपी, करिहूँ तुम निरधार ।
'जगतराम' प्रभु बिन नहीं कोई, ऐसा जातैं करूँ पुकार ।३।

[३२—छायानट]

लाग्यो तुम चरणन लार, अब तो मोहिं तारो, मेरे साईं
अब तो मोहि तारो ॥ टेक ॥
क्रोध, लोभ, म्हारी गैल न छांडत, अति ही सतावत मार॥१॥
दीन जानकर दयाजी धरोगे, हरोजी वेग दुख भार ।
कृपा यह तुम्हारी होय 'उदय' जब ही उतरूँ भव पार ॥२॥

[३३—अडाणा]

परम पदारथ पायो आज मैं परम पदारथ पायो ॥ टेक ॥
अशुभ गये शुभ प्रकट भये हैं सहज कल्पतरु छायो ।१।

ज्ञान दशा मेरी ऐसी जागी चेतन पद दरसायो ।
अष्ट कर्म रिपु योधा जीते शिव अंकुर जमायो ॥ २ ॥
'दौलतराम' निरख निज प्रभु को, आनन्द उर न समायो ।

[३४—छायानट] (बुधजन कृत)

याही घड़ी में रंग बन्यौ म्हारै याही घड़ी में रंग ॥टेक॥
तत्त्वारथ की चर्चा पाई, साधर्मी सत्संग ॥ २ ॥
श्री जिन चरण बसे उर मेरे, हर्ष भयो सब अंग ।
ऐसी विधि भव भव में मिलियो धर्मप्रशाद अभंग ॥२॥

[३५—अडाणा]

तोरी चितवन कर मन मन उमग्यो ही रहत है,
अब जिन बाधा हरो मेरी ॥ टेक ॥
राग दोष कर रहित छवि तोहू तीन लोक जिय चित उरभेरी
समवशरणमधि इन्द्र मुकुट की प्रभा परत लख ज्योति उजेरी॥
कोटि काम की द्युति लाजत है,चन्द्र सूर्य सब जात दुबेरी॥२।
श्रवण सुनत दिव्यध्वनि तुम्हरी पुनि सुनत नही कोउकी भेरी
मन वच तन कर शान्ति छवि लखि भव भव भ्रमण हनेरी।३।

[३६—काफी]

नाल निभा करिये जिन इस जगमें तोसा नजर न आवन्दा
आ आ आ जिन सैया मैंडे नालनिभा ॥ टेर ॥
निश दिन प्रभुतैंडा भजन करीजे,'लालुदे' नालनिभा करिये।

[३ —काफी]

पडा वे इन नैनूंदा ये ही स्वभाव ॥ टेर ॥
जिन दर्शन बिन छिन नहिं रहन्दा ऐसा अडीय अडाव अडावे
होत खुशी लख रूप-अनुपम भक्ति जंजीर जडाव जडावे ।
'नवल' कहै हम भयेजी पवित्तर पातक सकल झडाव झडावे२

[३८—काफी]

करदे सुलझेरा भला वे सैया तारण वाला जिनवर तुमही हो ।टेर
पार करोनीमिंडा वेग नवेडावे सैया तोसा साहिव औरन कोई हो
'लाल' कहै मोहि राखो न चेरा वे सैया मेंडा वाली व रिस
तुम-ही-हो ॥२॥

[३९—काफी]

म्हारे मनडे भाईया, अहो तू जिनवर मेंडा मोहे निभाना
जग-की बातों से दिल होत खफा ॥ टेर ॥
आन देव में भूलर सेये इनके सेयेसे कहो कौन नफा ॥१॥
मुद्रा नगन शान्तिरस पोषक देखत ही करदेत वफा ।
सतगुरु संग पाय दिलजामी सब सुखके प्रभु दायक मेरे
इनके ध्याये से विधि होत सफा ॥ २ ॥

[४०—काफी]

प्रभु जग तारन हार लखे हम नैनन सेती ॥ टेर ॥
वीतराग परणति अति अविचल परमातम अधिकार ॥१॥

जामें लोकालोक पदारथ झलकत त्रिधा अपार ।
तीन काल युगपत सब जानत केवलज्ञान मझार ॥२॥
भक्त भये मन वच तन तिनके, तिनको किये भव पार ।
'चैन' प्रतीति गुण नहीं अवगुण अपनो जान उवार ॥३॥

[४१—काफी]

अब तो म्हारी मानो मानोजी प्रभूजी म्हारी याही मानो॥टेर
भव भव में तुम दरशन चाहूँ सुपनेमें और नहीं जानू ।१।
काल अनादि गयो भटकत ही दुष्ट करम को दे भानो ।
तुम विन मेरी कहु काहू सों'बुधजन' मांगे शिवथानू ॥२॥

[४२—काफी]

नित मूरति तेरी आन विलोकूं भाइया हो मैनूं ॥ टेर ॥
तेरे देखन दी घनी अभिलाषा नित चहन्दा हो हमरा मना
नहीं भूला रयनू दिन तैनूं ॥१॥
जिया जिन बिन अति अकुलानो, नहीं रहन्दा हो इकहु
छिना, जिन देखा मिटत अचैनूं ॥ २ ॥
सुन लीजिये अरज कराछां यह अचलवास शिवदा मिले
ये 'नवल'-कहै मोहे दैनूं ॥ ३ ॥

[४३—काफी]

आज उछाव घनो घनोजी हो म्हारे मन ॥ टेक ॥
हियमें जियमें नयन वयन में कोलौं कहाय भनो ॥ १ ॥

शीतल चित्त भयो अब मेरो मिटगयो तपतपनों ।
या आनन्द की मैं ही जानो, मुखतें कहाय भनो ॥ २ ॥
सफल भयो तुम वदन विलोकत श्री जिनराजतनों ।
'नवल' नेह लाग्यो नहीं छूटै अद्भुत जोग बनो ॥ ३ ॥

[४४—काफी]

देखी थांकी शान्ति छवि अति प्यारी लागे म्हाने प्यारी लागे
आनन्दघन लागीजी थासूं प्रीति ॥ टेर ॥
तुम बिन भव वन भटक फिरयोजी कहुं नहिं पायो विश्राम
अब मत छोडो म्हाने मत छांडो आनन्दघन ॥१॥
तुम सेये तिरगये बहुतेरे पायो शिव सुखधाम ।
सब दुख भाज्या म्हाका दुख भाज्या आनन्द०॥ २ ॥
सेवक कूं हितकर अपनावो दीजो शिव सुखधाम ।
अरजी मोरी मानो विनति मेरी मानो आनन्द० ॥ ३ ॥

[४५—काफी]

निरखे नाभिकुमारजी मेरे नैन सफल भये ॥ टेर ॥
नये नये वर मंगल आवत पाई निज निधि सार ॥ १ ॥
रूप निहारन कारन मघवा कीने नेत्र हजार ।
वैरागी मुनि वर हू लखिकै ल्यावत हरष अपार ॥ २ ॥
भरम गयो तत्त्वारथ पायो, आवत ही दरबार ।
'बुधजन' चरण शरण गहि याचत, नहीं जाऊं पर द्वार ॥३॥

[४६—काफी]

संकट दूर करो प्रभु मेरो ॥ टेर ॥

दुखहरता मानो और न दिखता याते शरणो पकड्यो
मैं तेरो ॥ १ ॥

निश्चय साख सुनी ग्रंथन में अधम उधारक विरद वडेरो
वर्णो ही कष्ट पड्यो भक्तन पै 'नवल' ही आन किए सुरभेरो।

[४७—काफी]

सुलभा दीज्यो जिनराजजी म्हारी लटिया करम की
उलभ रही सुलभा दीज्यो जिनराज ॥

उलभ रही अब सुलभत नांही म्हारी थाने लाज ॥१॥

म्हे थांका थे साहिब म्हांका तारण तरण जिहाज ।

'पारसदास' निहारो निश्चय सिद्ध कीज्यो निज काज ।२।

[४८—काफी]

नीकी छै आज घड़ी हो सुज्ञानीडा नीकी छै आज घड़ी ।

प्रभु का गुण क्यों न गाओरे नीकी छै० ॥ टेर ॥

तू कांई प्राणीडा विषयन सेवै यह नहीं बात भली ॥ १ ॥

सब से बोलो हित मित बातें करुणाभाव धरी ।

जो सुख चाहो तो हित करल्यो श्री गुरु यह उचरी ॥२॥

[४९—काफी]

मत छेडोजी हो ना जी ना जी ना, परनारी नागन छै जी
हो ना जी ना जी ना ॥ टेर ॥

याको जोय जननी जन जोवें तिनही ने दुख पाय जी ।१।
अभिलाषत रावन व कीचक निज गुण को कियो क्षयजी
'धर्मपाल' भवि शीलको पालो तिनही की जग जयजी हो०।२।

[५० —काफी]

त्रिभुवननाथ हमारो अजी हे जी ये तो जगत उजियारो॥टेर॥
परमौदारिक देहके मांही परमातम हितकारो ॥ १ ॥
सहजै ही जग छाय रह्यो है दुष्ट मिथ्यात अंधियारो ।
ताकों हरन करन समकित रवि केवलज्ञान निहारो ॥ २ ॥
त्रिविधि शुद्ध भवि याकों पूजो, नाना भक्ति उचारो ।
कर्म काटि'बुधजन'शिव लहि हो तजि संसार दुखारो ॥३॥

[५१ —काफी]

चुपरे मूढ अजान हमसे क्या बतलावै ॥ टेर ॥
ऐसा कारिज कीना तैनैं जासों तेरी हान ॥ १ ॥
राम विना है मानुष जेते भ्रात तात सम मान ।
कर्कश वचन बकै मत भाई फूटत मेरे कान ॥ २ ॥
पूरव दुष्कृत किया था मैने उदय भया तैं आन ।
नाथ विछोहा हुवा यातैं पै मिलसी या थान ॥ ३ ॥
मेरे उरमें धीरज ऐसा पति आवै या ठान ।
तब ही निग्रह ह्वै है तेरा होनहार उर मान ॥ ४ ॥
कहां अजोध्या कहां यह लंका कहां सीता कहँ आन ।
'बुधजन' देखो विधिका कारज आगम मांहि बखान ॥५

5[५२—काफी]

न मानत यह जिय निपट अनारी, सिख देत सुगुरु हितकारी ।टेर
कुमति कुनार संग रति मानत सुमति सुनारि विसारी॥१॥
नर परजाय सुरेश चहै सो तजि विष विषय विगारी ।
त्याग अनाकुल ज्ञान चाह पर आकुलता विस्तारी ॥ २ ॥
अपना भूल आप समतानिधि भव दुख भरत भिखारी ।
पर द्रव्यन की परणति को शठ, वृथा बनत करतारी ॥३॥
जिस कषाय-दव जरत तहां अभिलाष छटा घृत डारी ।
दुखसे डरै करै दुख कारण तै नित प्रीति करारी ॥ ४ ॥
अति दुर्लभ जिन वैन श्रवण करि संशय मोह निवारी ।
'दौल' स्वपर हित अहित जानके होवहु शिव मगचारी ॥५॥

[५३—राग खमावच]

दीनानाथ कांटो करम की बेडी जी । टेर ।
हा हा करत तोरे पैय्यां पडत हूँ इतनी अरज सुन मेरीजी।१
मैं अनाथ इनके वश होय के भ्रम्यो चतुर्गति फेरीजी ॥२॥
मैं अब तुमरी शरण लई है राखो चर्णन नेरीजी ॥ ३ ॥
'बलदेव' को निज दास जानकर दीज्यो शिव सुख सेरीजी।४।

[५४—राग खमावच]

हो मोय डगर बतावो सुखकारीजी ॥ टेर ॥
तुमरे बिन मोय कुगुरु भ्रमायो कुगति लई दुखकारीजी।१।

तुमरे नाम मंत्रते उबरे साख भनै श्रुतधारीजी ॥ २ ॥
रत्नत्रय पद देहु हजूरी 'पारस' विनवै तोरीजी ॥३॥होमो०

[५५—राग खमावच]

नैना मोरे दरशन को उमंगे ॥ टे ॥
परम शान्तिरस भीनी मूरत हिय में हरष अगे ॥ १ ॥
नमन करत ही अति सुख उपजै सब दुख जात भगे ॥२॥
'नवल' पुण्यतें जोग मिलो है चरणा आन लगे ॥ ३ ॥

[५६—खमावच]

तिहारी छवि मो दृग समा रही तिहारी प्यारी या छवि
आन भान सबकी शरण दुखकी हरण सुख की करन
मो दृग समा रही ॥टेर॥
मनवा मेरा तुम डिग लगिया विनश जात मेरा कुगति गमन।
तुम गुण कह न सकैं सुरपतिसे मैं कैसे करहूँ बरणन ॥
कब गृह तजकर ध्याऊँ प्रभु 'पारश' तातैं मिलि है मुक्ति रमन।

[५७—खमावच]

हो मोहि चरण शरण जिन तोरी, हो प्रभु मोय वेग उतारो पार
सुखकर दुखहर तुम ही जग तारणहार ॥ टेर ॥
भ्रमत फिरयो मैं भव अनादितै छायरह्यो मेरे मोह मैल
शिवपुर की गैल मोय सूझ न परत तुमरे वैन सुझावनहार॥१
दरशन ज्ञान चरित्र दीजिये तीन रतन ये जग उद्धार।
मांगत 'जवाहर' ये बार बार मोहे कीजिये भवदधि पार ।२।

[५८—खमायच]

आज भरोसो म्हाने थांको छैजी श्री जिनराज, आज
भरोसो म्हानैं ॥ टेर ॥

कालकल्पदुख निकट न आवे हृदय वसैं छै थांको रूप॥१॥
तोसैं सुधासमुद प्रभु छांडके कौन भरैं जल कूप।
अष्ट पहर ठाडो ही रहत हैं, आनन्द वढे छै अनूप ॥२॥

[५६—खमायच]

अशुभ करम म्हारी लैराजी फिरैं छै शिवपुर जाने न देवैं
दीनानाथ ॥ टेर ॥

भवभवमें म्हारी गैल न छांडत दुख देता कछु नाहीजी डरैं छैं
ज्ञानादिक धनलूट लियो म्हारो नेकन मोपैं दयाजी धरैं छैं
जगत उदधितैं पार करीजे मम दुख संकट कौनजी हरैं छैं

[६०—खमायच]

साढे लाल गहलिया हो किती वे ॥ टेर ॥

और निहारतही निश्चयउर स्वाभाविक संपति दीठी ॥ १ ॥
लखि निज किंकर दयाजी करो मोपैं संसार व्याधि सव जीती
शरण 'उदय' गहि दीनवन्धु की फोज मोह रिपु जीती॥३॥

[६१—खमायच]

आज जिनकी छवि दृगनमें भरी व्याकुलभये मोहादि काम।टेर
तन मन हरप भरया न समावत मानो वैरागघनघटा भरी॥१
कुमता कुलटा विमुख होय विछुरी सुमता सुगुनी मोदभरी२
'चैन' पतित पर नजर महर कर तुमहो सब जीवन सुखकरी४

[६२—खमावच]

आज दुविधा मोरी मिटगई जी श्रीवीतराग को दरश देख
दुविधा मोरी ॥ टेर ॥
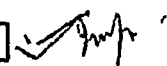
अष्ट द्रव्य ले पूजन आयो, मन मैं आनन्द हरष बढायो ।
मैं जिनवाणी काननते सुनी कलमल मोरी मिटगई जी॥१।
रसना सफल भई अब मेरी भक्ति उचार करूँ प्रभु तेरी ।
अब छाई आनन्दकी घटा तृष्णा मोरी मिटगई जी ॥२॥
अब मैं जन्म कृतारथ मान्यो गऊपद तुल्य भवोदधि जान्यो
अब पाई मुक्ति की डगर दुरगति मोरी टरगई जी ॥ ३ ॥
जब लग मुक्ति न आवै नेरी, तब लग भक्ति बसो उर मेरी ।
तेरी छवि 'चन्दन' के हिये तन मन सु लिपट गई हो ॥४॥

[६३ —खमावच]

तेरी वाणी की भनक जब मैंने सुनपाई दाता में सरंसार
हुवा ॥ टेर ॥

कुगुरुन को मैं गुरु कर माने, देव कुदेव नहीं पहिचाने ।
दया धरम में दूषण आने, भव भव माँही ख्वार हुवा ॥१॥
मिथ्या अविरत योग कषाई, इनने मेरी मति भरमाई ।
सातों विसना में लवलाई, यो जीना धिक्कार हुवा ॥ २ ॥
उलट पुलट च्यारों गति भटका, नरकन मांही औंधा लटका ।
अब आगे का मुझको खटका, यों जीना दुश्वार हुआ ।३॥

अबमें फि'ता फिरता हारा, आन लिया प्रभु शरण तिहारा।
करो 'नैन सुख' का निस्तारा मैं हाजिर दरबार हुआ ॥४॥

[६४—खमावच]

प्रभु म्हारी सुध करुणा कर लीजे ॥ टेर ॥
मेरे इक अवलंबन तुमही अब न विलंब करीजे ॥ १ ॥
आन देव में भूलर सेये, इनते निज गुण छीजे ॥ २ ॥
'भागचन्द' तुम शरण लई है अब निश्चल पद दीजे ॥३ ॥

[६५—खमावच]

तेनु नें नें नें नें थिर निजद्यो सुन दिल आहर ना दीन ।टेर।
इक रोज़ चोर ये हैं स्वपने की रैन वातें ।
वादा आता है छिनुम छिनुम ॥ १ ॥
तेरा कौन संग साथी महाराज नामबिन ।
तुझे होवे जो प्रसन्नी जो थान तोय ध्यावे ॥ २ ॥

[६६—खमावच]

तूतो गायरे आतम गायरे श्री जिनवर का ध्यान लगा
प्यारे दम दम ॥ टेर ॥
छांडि जग धन्धा मनवशकर अपना नाम जपो प्यारे दम
दम ॥ १ ॥
जिनके नाम से पाप कटत हैं कोटि भानु शशि चम २ ॥२॥
अबतो जान 'नैन' परमातम चिनमूरति प्यारे नम नम ॥३॥

[६७—खमावच]

नदियां में नैया डूबी जाय हेजी तुम सुनिये जिनजी हो ।टेर।

गहरी नदिया नाव पुराणी खेवटिया नहिं कोय ।
कौन भांति से पार लगेगी मझधारा गुमराह ॥ १ ॥

इस नदिया के विकट किनारे बल्ली बांस न थाह ।
लख चोरासी मगर फिरत हैं इनसे लेहु बचाय ॥ २ ॥

तुम समान खेवटिया कोई दूजा नांहि लखाय ।
'चिंतामणि' जब ही सुख पावैं जब तुमहोउ सहाय ॥३॥

[६८—खमावच] *

प्रभु करुणा करके वेग दिखा शिव गैली,
तेरे चर्ण शरण में आई है बाल सहेली ॥ टेर ॥

जो कालाडेरा श्री मंदिरजी नामी,
तहां वर्द्धमान प्रभु तीन भुवन के स्वामी ।

नित मनवचतन से प्रभु के मंगल गावैं,
अति भाव भक्ति से तेरे नित गुण गावैं ।

जो शुक्रवार को प्रति मंदिर में जावैं,
वसु द्रव्य लेयकर पूजन पाठ रचावैं ।

---

* जयपुर में कालाडेरा का (श्री महावीर स्वामी का) विख्यात है। शुक्रवार की सहेली ने, जिसकी ओर से यह भजन-ग्रह प्रकाशित किया गया है, इसी मंदिर में अपना कार्य-क्रम प्रारम्भ किया था ।

अति पुण्य उदय से गही पुन्य धन थैली ॥ १ ॥
जो करुणा सागर जगमें नाम कहावो।
अति दीन जान के चरण शरण रखावो,
वसु कर्ममहारिपु हमरे दूर हटावो।
संसार समुद्र से नैया पार लगावो,
प्रभु निर्विकार निज रूप संपदा दीजे।
गतिचार छुडाकर पंचम गतिमें लीजे,
अब 'चोथमल्ल' से तेरी ही भक्ति निभैली ॥ २ ॥

[६९—खमावच]

आज महावीर स्वामी बन्दूं मन लायके ॥ टेर ॥
सिद्धारथ राजा पिता त्रिशलादे राणी माता ।
कुन्डलपुर में जन्म उत्सव कीनो इन्द्र आयके ॥ १ ॥
सुर नर मुनिजन करत सेव हे प्रभु देवाधिदेव।
गणधरादि ध्यायके गुणानुवाद गायके ॥ २ ॥
मन वचन काय लाय 'बलदेव' तोरी शरण आय।
अष्ट अंग नमूं नमूं वार वार शिरनायके ॥३॥

[७०—खमावच]

ऐसे साधु सुगुरु कब मिलि हैं ॥ टेर ॥
आप तिरैं औरनकौं तारैं निष्प्रेही निर्मल हैं ॥ १ ॥
तिलतुषमात्र संग नहिं जाकैं ज्ञान-ध्यान-गुण-बल हैं ॥२॥
शांत दिगम्बर मुद्रा जिनकी मंदिर तुल्य अचल हैं ॥३॥

'भागचंद' तिनकों नित चाहै ज्यों कमलनिको अलि है ॥४॥

[७१—खमावच]

छवि जिनराई राजै छै ॥ टेर ॥

तरु अशोक तर सिंहासन पर बैठे धुनि घन गाजै छै ॥१॥

चमर छत्र भामंडल द्युति ये कोटिभानु शशि लाजै छै।

पुष्प वृष्टि सुरनभते दुंदुमी मधुर मधुर सुर बाजै छै ॥२॥

सुरनर मुनिजन वंदन आवै देखत मनडो छाजै छै।

तीन काल उपदेश होत है भवि 'बुधजन' के काजै छै ॥३॥

[७२—खमावच]

ऐसे मुनिवर देखे बनमें, जाके रागद्वेष नहिं तनमें ॥टेर॥

ग्रीषम धूप शिखर के ऊपर मगन रहे ध्यानन में ॥ १ ॥

चातुर्मास तरुतल ठाडे बूंद सहै छिन छिन में ॥ २ ॥

शीतमास दरियाके किनारे धीरज धारे तनमें ॥ ३ ॥

[७३—खमावच]

नेम जिनन्द मोरा मन वशकर मोरीआली रत्र पशुवन कारागारी नैना निरखि गिरवासी ये ॥ टेर ॥

नेम न आवे घरको कीना मनवश मेरी आली; उन विन कछु न सुहावे मोरी विनती जिनंद पियासों कहियो जाय ॥ १ ॥

बहुत काल लग भव भव चैन मिलकेरी, उनसे बिछुरना न भावै, अब मैंभी गिरवापे चढि तपस्या करूँगी जाय ॥ २ ॥

[७४—खमावच]

विसर मति जायरे तेरी काचीसी काया विनश जाय भोरारे।
काहेकी तेरी काचीसी काया, किसपर करत गुमान रे।
तेरा राखन वाला कोइयन रे भोरारे ॥ १ ॥
'लाल' कहै सुमरो जिनसैयां तन मन प्रीत लगाय ली रे
तेरा राखनवाला प्रभुजीरे भोरारे ॥ २ ॥

[७५—खमावच]

अरे हाँ रे तैं तो सुधरी बहुत बिगारी ॥ टेर ॥
ये गति मुक्ति महल की पौरी पाय रहत क्यों पिछारी ॥१॥
परकौं जानि मानि अपनो पद तजि ममता दुखकारी।
श्रावक कुल भवदधि तट आयो बूडत क्योंरे अनारी ॥२॥
अबहूँ चेत गयो कछु नांहीं राखि आपनी बारी,
शक्ति समान त्याग तप करिये तब 'बुधजन' सिरदारी ॥३॥

[७६—खमावच]

आज कहीं नचत नचत सुरन वृन्द आवे, आवे मन भावे।
घुघरु मधुर घुघरु मधुर घुघरु मधुर बाजे कहीं नचत नचत
नूपुर झनन झनझनाट किंकिट किंकिट किन किनाट।
फिरि फिरि फिरि फिरकी लहात, दुन्दुभी बजावें ॥ १ ॥
धप धप धप मृदंग जोर, पट पट पट पटा होत शोर
बानारसी नगर ओर शची इन्द्र आवै ॥ २ ॥

अश्वसेन कुल-उद्धार वामा उर जन्म धार
पारश पद नित 'जवाहर' झुक झुक शिर नवावे ॥ ३ ॥

[७७—राग झंझोटी]

जिन छवि पर जाऊँ वारिया ॥ टेर ॥
परम दिगम्बर मुद्राधारी अशुभ करम सब टारिया ॥१॥
आपा परकी विधि दरशावै भवि जीवन को तारिया ॥२॥
'राम' कहै यह छवि शिवकारण, बडे२ मुनि धारिया॥३॥

[७८—झंझोटी]

जिनवरजी मोहे द्यो दरशनवा ॥ टेर ॥
विरद तिहारो मैं सुन आयो अब मो मन तुम करो परसनवा।१
मोह तिमिरके दूर करनको नांहि दिवाकर तुम सब अनवा।२
अब सेवक हितकर गुणगावै उमग उमग परसे चरणनवा३

[७९—झंझोटी]

तूही तूही याद मोहे आवै दरद में ॥ टेर ॥
सुख सपतिमें सब कोई साथी,भीड पड्या भगजावे दरदमें ।
भाईबंधु अरु कुटुम्ब कबीला या संग मन ललचावे दरदमें।२
प्रेमदीवाना है मस्ताना सदा ज़िनंद गुणगावे दरद में ।३।

[८०—झंझोटी]

हुजूर तुमसें कहूँ मैं दिलकी बेजारपनमें जो बीती बतियां ।टेर
न थीर तन में खुशी न मनमें बेहालपनमें भरआई छतियां ।

सिद्धारथ त्रिशलाके नन्दन सुनिये कृपासिन्धु महावीर स्वामी
संसार वनमें कियो भ्रमणमैं चौरासी लख की यह चारों
गतिया ॥ २ ॥
कषाय कुमती कुकर्म मिलके देमार चारों तरफ से घेरा ।
सदा से इनकी बेजा सही है मैं मेरे मनमें उपाधि अतिया॥३
रही न बाकी विपति की बातें तुम क्या न जानो विशाल ज्ञानी
रहूँ शरण अब निहाल कीजे 'कपूर' लागी चरणोंमें मतिया४

[८१—झमोटी]

भयोरी मेरे आज सुफल दिन वामादेवी ने पुत्र जायो है ।टेर
घर घर मंगलाचार भयो है तीन लोक सुख पायो है ।१।
नगर बनारस स्थान जिन्होंका पारश नाम धरायो है,
अश्वसेन रामाके नंदन 'लालचन्द' जश गायो है ॥ २ ॥

[८२—झंझोटी]

देख्या गढ मांगी तूंगी का मेरा जनम सफल भया आज ।टेर
जा परवतपैं निन्यानवैं कोडी, मुक्तिगयेजी मुनिराज ॥ १ ॥
चन्द्रनाथ और पार्श्वप्रभूका मंदिर बनाजी शिवकार ॥२॥
आज सुफल दिन आज सुफल घडी दुष्ट करम गये भाज।३
अमोलक सुत 'हीराचंद' कहत है आज सरेजी सबकाज।४

[८३—झंझोटी]

गावैछैजी आज आली म्हारे मन भावना, आछो रंग
बढावना ॥ टेर ॥

घर घर मंगलाचार बाजे अवधि नगर में जनमे
अजित जिनंद विजया देवी सुख पावना ॥ १ ॥
राजा जीतशत्रु ने याचक किये हैं निहाल,
बाजे नोवत मृदंग गुन सुन जोश हरपावना ॥ २ ॥
नारी नर सब ही बालक चिरंजीव रहो,
हितकर मुख देखूं सफल भई जी मन कामना ॥३॥

॥ [८४—झंझोटी]

दर्शन दीज्योजी सेवक को जानके मोय दर्शन दीज्यो ।टेर
कुमति छांड़ सुमती मोहि दीज्यो यो जश लीज्योजी ॥१॥
या संसार असार जलधितें पार करीज्यो जी ॥ २ ॥
'लाल' कहै मेरी याही अरज है, शिवमग दीज्योजी ॥३॥

[८५—झंझोटी]

गिरवा पठाय दीज्योजी सहेलियो नेमपै मोय गिरवा पठाय दीज्यो ॥ टेर ॥
और काम कछु ना कर सजनी यह सुन लीज्यो ॥१॥
पशुवन कारन जोग लियो है, चिरंजीव रहज्यो ॥ २ ॥
मैं उनके संग 'राम' लखूंगी मोह न कीज्योजी ॥ ३ ॥

[८६—झंझोटी]

जिन चौवीसों को वन्दना हमारी ॥ टेर
भव दुख नाशक सुख परकाशक विघ्न विनाशक मंगलकारी ॥
तीनलोक तिहुँकालके मांही तुमसम और नहीं उपकारी ॥

पंच कल्याणक महिमा लखकर अद्भुत पुन्य लहो नरनारी।
'द्यानत' इनकी कौन चलावै, बिंब देख भये सम्यक्धारी।४

[८७—झमोटी]

लागीजी म्हारा नैनारी डोरी ॥ टेर ॥
सोहनी सूरत मोहनी मूरत जब देखो जब तोरी ॥ १ ॥
तुम गुण महिमा कह न सकत हूं मो मैं है बुधि थोरी ॥२॥
'चन्द्रखुशाल' दोऊ करजोडे मेटो भव भव फेरी ॥ ३ ॥

[८८—झमोटी]

हम आये जी महाराज तोरे वन्दन कौं ॥ टेर ॥
पूजों ध्याओं मन लाय पाप निकन्दन कौं ॥ १ ॥
चहुँ गति ते लेहु छुडाय काटो फन्दन कौं ॥ २ ॥
'द्यानत' पर होउ सहाय जैसे नन्दन कौं ॥ ३ ॥

[८९—झमोटी]

चलोरी सखी छबि देखन कौं रथचढि जादुनंदन आवत हैं।टेर
मोर मुकट केशरिया जामा गिरनारी को जावत हैं ॥ १ ॥
तीन छत्र और तीन सिंहासन चौसठि चमर ढुरावत हैं ।२
'लालचंद' की याही अरज है सब सखि मंगल गावत हैं।३

[९०—झमोटी]

चलियें जिनेश्वर जिनेश्वर, जिनेश्वर पूजिये चंदाप्रभु महाराज।टेर
जल चंदन शुभ अक्षत लीजिये चोथा पुष्प मिलाय ॥१॥

चरु अरु सुदीप सुधूप फल लीजिये, ताकौं अरघ बनाय।२।
'केवलराम' दोऊ कर जोडिये आवागमन मिटाय ॥ ३ ॥

[६१—झंझोटी]

जिन दर्शनते मोह काप्यो थर रररररै ॥ टेर ॥
इन्द्रियवशकर सुधि जो लगाई सुधहीको लाग्यो मानौं तीर
निकस्यो सर ररररर ॥ १ ॥
अशुभ प्रकृति में रस सब विनस्यो शुभ में पडगयो नीर,
देखो अररररर ॥ २ ॥
'पारश' जप तप तब ही बनत है मस्तक रहो दृढ वीर
गाज्यो घर रररर ।३।

[६२—झंझोटी]

टुक नजर महर की करना ॥ टेर ॥
मैं हूँ अधम पाप की मूरत मेरा दोष न धरना ॥ १ ॥
आपन तो कैलाश पधारे मेरा कौन हवलना ॥ २ ॥
'भूधरदास'आश चरणन की मोहे पार ले चलना ॥३॥

[६३—झंझोटी]

थांकी शान्ति छवि मन बसगई जी नहीं रुचे और छवि
नैननमें ॥ टेर ॥
निर्विकार निर्ग्रंथ दिगम्बर देखत कुमति विनशगईजी ॥१॥
चिर मिथ्यातम दूर करनको चन्द्रकला सी दरश रहीजी॥२॥

'मानिक' मन मयूर हरषन को मेघघटासी दरश रहीजी ॥३॥

[६४—झंझोटी]

विषयारे नीडे मत जाय सुज्ञानी जियारे ॥ टेर ॥

जो जो या की लैरॉ लाग्यो सो सो अति दुख पाय ॥१॥

तीन खंड को राजा रावण पर तिरिया लई छै चुराय ।२।

जो माने तो सीख भली है सतगुरु दई छै बताय ॥ ३ ॥

[६५—झंझोटी]

छैजी अज्ञानी मनडो हो श्रीजी म्हारो छै जी अज्ञानी मनडो ॥ टेर ॥

हूँतो ल्यावत तुम पद पूजन को यो नहीं आवत है बगडोजी ॥ १ ॥

याकौं सुभाव सुधार दयानिधि मांचिरहो मोटो झगडोजी ।२

'बुधजन' की विनती सुनलीजे दीजे शिवपुर को डगरोजी।३

[६६—झंझोटी]

मग बतलाना मानूजी हेजी मोक्षदा वे साईयाँ ॥ टेर ॥

तिहारे चरण का बे इक शरणा हे मेरे ताईं मोकूं भी पार उतारना बे साइयां ॥ १ ॥

भवदधि भारीसे तू उतरा है मेरे सॉई हाथ पकडके उबारना बेसाईया ॥ २ ॥

'बुधजन' चेरा को विधि जकडावे मेन्डे साई औरोंसे नाहीं पुकारना वे साईया ३ ॥

[९७—झंझोटी]

रखिये रखिये शरण मोहे जिनवरजी,
ल्यायो ल्यायो हुजूर या मेरी अरजी
भ्रमता अनादिकाल से गति च्यार धारके
कीने अपार पाप में हितको विसारके ॥ १ ॥
संसार की सराय में गाफिल मैं सोरहा,
निज ज्ञानको गमाय के मैं रंक हो रहा ॥२॥
करुणानिधान नाम सुन मैं शरण आया हूँ,
भवसे उबार लीजिये मैं शीश नाया हूँ ॥३॥
दुखिया सु दीन जानके करुणा मेरी करो।
निज दास 'चोथमल्ल'की विपदा सभी हरो ॥४॥

[९८—झंझोटी]

वासपूज्य महाराज बिराजो चंपापुर में ॥ टेर ॥
अरुण वरण अविकार मनोहर देखत आनन्द पाय
दर्शन पायो अब मैं ॥ १ ॥
गणधर—फणधर और असनधर खगपति पूजे पाय,
धारूं निर्मल मन मैं ॥२॥
फागण बुदी तेरस दिन बन्दौं नेम मनोरथ काज।
सुमिरूं पल पल छिन छिन मैं ॥ ३ ॥

[९९—झंझोटी]

थे अरजी मोरी सैयां मोहि तारलो गहि बइयां ॥ टेर ॥

मैं तारण तरण सुनो छै मैं यातें शरणै गईयां,
मैं नाहिं जानूं सैया ॥ १ ॥
इन करमन के वश हो के मैं भटक्यो चहुँ गति मईयां,
इनतें उधार लईया ॥ २ ॥
'हितकर' के दास निहोरे करजोड पड़ू मैं पईया।
शिव देहु क्यों ना सईया ॥ ३ ॥

[१००—झंझोटी]

मैंने खोया है योंही जनम अपना जासों सुख न पाया
कभी सपना ॥ टेर ॥
अष्ट करम देते दुख भारी इनने लूटी है निधि सारी,
याही सें दुख पाये ॥ १ ॥
कुमता के संग सदा ही रहता,सुमताके संग कभी न जाता,
इनको प्रभु तुम मेटो ॥२॥
'चिमन' प्रभु को निशि दिन ध्यावें,याही तैं निश्चय सुखपावे
याही में बलिहारी ॥ ३ ॥

[१०१—झंझोटी]

हो जिनराजा दर्शन दीज्यो ॥ टेर ॥
लख चौरासी में भटकत हूं,महर की प्रभु तुम अर्पन कीज्यो ॥१
अष्ट करम मोरी गिरद फिरत हैं, इनका प्रभु तुम करपण
कीज्यो ॥२॥

दुःख अनन्ता मैंने पाये इनको प्रभु तुम करपण कीजो ।३
सूख रहा है 'चिमन' कोमका अबतो प्रभु तुम सरसन कीज्यो।।४

[१०२—झंझोटी]

बसोजी मेरे नैनन में महाराजा ॥ टेर ॥
सोहनी सूरत मोहनी मूरत तारण तरण जिहाजा ॥ १ ॥
वाणी सुधारस पीत उपजो, सम्यक्-दरश महाराजा ।२।
'चैनविजय' कर जोड वीनवैं, केवल ज्ञान सिरताजा ॥३॥

[१०३—झंझोटी]

करुणा लीज्योजी अजी मुक्तिरा गामीजी, करुणालीज्योजी।टेर
लख चौरासी माहीं मोकूं करमोंने भरमायो है जी ।
अब कोई पुण्य उदय से दर्शन थांका पायाजी ॥ १ ॥
जन्म जरा मृत्यु नाशन कारन गंगाजल में भरकर लायो ।
भवाताप प्रभु मेटो म्हारी चन्दन चढाऊँजी ॥ २ ॥
अक्षय पदके कारण में तो शुभ अक्षत ले कर में आयो ।
काम बाण प्रभु मेटो म्हारो पुष्प चढाऊँजी ॥ ३ ॥
भव भव मांही क्षुधा सतावैं, नैवेद्य में लेकर आयो ।
मोह तिमिर के दूर करन को दीप चढाऊँजी ॥ ४ ॥
अष्ट करमके नाशन कारण धूप दशांगी लेकर आयो ।
उत्तम फल में लेकर आयो मोक्ष पठावोजी ॥ ५ ॥
'नोन्दराम' प्रभु अर्घ बनावै, थांही का चरणा में चढावैं ।
चौरासी दुख मेटो जगमें फेर न आऊँजी ॥ ६ ॥

[१०४—झंझोटी]

मोरा सैयां ने जोग विचारो री, पशुवन की सुन किलकारी
वो गये गिरनारी वो जाय तप धारी ॥टेर॥
या संसार असार सखीरी यामैं जन्म मरण दुख भारोरी ।१
अब मैं भी सब छांड परिग्रह संजम लूं सुखकारोरी ॥२॥
मैं उनके संग 'राम' लखूंगी पाऊंगी भवदधि पारो री ॥३॥

[१०५—झंझोटी]

हो जी हो गुरां जी हो म्हाका राज थां ही का वचन म्हाने
प्यारा लागै छै जी हो गुरांजी हो म्हाका राज ॥ टेर ॥
वाणी तो सुनाद्यो गुरां म्हानै थांकी तत्त्व की जचाद्यो हो ।१
रागी संगधारी सुनाई वाणी खोटी,एकान्तनय तजाद्यो हो।२
'पारश'को जचांद्यो निज परिणति में,परपरणतिसे बचाद्यो।३

[१०६—झंझोटी]

बाल स्हैली आई तेरे शरणा,म्हाका अशुभ करम सब हरणा ।
समवशरण की छबि अति सुन्दर,देखत ही मन हरणाजी ।१
श्यामवरण तुम रूप मनोहर, सुरनर पूजैं चरणा ॥ २ ॥
अष्ट करम मोहे घेर रहे हैं, इनका क्षय तुम करणा ॥ ३ ॥
भवभव में स्हैली यह याचत, शरण तुम्हारी रखना ॥४॥

[१०७—झंझोटी]

कोलौं कहूँ सैयां बतियां भ्रमण की ॥ टेर ॥

नारक दुख सुन छतिया फटत है, तिर्यञ्चगति जैसे नदिया सावण की ॥ १ ॥
मानुष गतिमें इष्ट अनिष्ट है, कष्ट बहुत सहे नाहीं कहनकी॥ २
स्वर्गनमें पर संपदा देखी झाल उठै जैसे अग्नि पतन की ।३
चारों गति दुख सहे अनादिके ज्ञान मांही प्रभु जानो सबनकी।४
अब मोकूं तारोगे 'हितकर' शरण लही प्रभु तिहारे चरणकी।५

[१०८—राग झंझोटी]

दरश तेरा नैनूं भावंदा हो ॥ टेर ॥
या छवि सुन्दर निरखन कारण सुरपति नैन हजार बनूंदा,
निशदिन मो हिये मांहीं बसत हो लखि २ मूरत जिया हरषावन्दा ॥ २ ॥
अब सेवक 'हितकर' चरणन दी सेवा दीजिये शिवसुखपावंदा तेरा नैनूं भावन्दा ॥ ३ ॥

[१०९—झंझोटी]

कांई गुनाह भयोरी सखी पिया आज बनकूं गये मोरा ।टेर
पशुवन को मिसकर रथ फेरयो याही बात लखी ॥ १ ॥
सब यादव समझावत हारे अपनी टेक रखी ॥ २ ॥
जगत जाल तज रजमतिं शिवलो हितकी बात भखी ॥ ३ ॥

[११०—झंझोटी]

दीन को दयाल जान चरण शरण आयो ॥ टेर ॥
भक्तन को कष्ट देख ढीलहु न लायो ।

समस्त दुःख भार एक क्षणक में मिटायो ॥ १ ॥
मैं तो काम अन्ध तेरो भेद नाहीं पायो ;
क्रोध मान माया लोभ मोहमें फँसायो ॥ २ ॥
ऊंच और नीच कछु भेद ना करायो ।
'नवल' गही शरण ताको मर्व भय नशायो ॥ ३ ॥

[१११—झंझोटी]

रखावो प्रभु शरण गहे की लाज ॥ टेर ॥
चारों गति में भ्रमते भ्रमते, जन्ममरण नित करते करते ।
दुखही दुख हम भरते भरते, बहुत हुई कठिनाई ॥ १ ॥
नरकगती में दुःख सहे हम, मारण ताडण छेदन भेदन ।
करे जात नहीं मुखसे वरणन, कोऊ न मिला सहाई ॥२॥
तिर्यंञ्चगती में लादें बांधें, मार मार कर जूडा कांधे ।
भूखे प्यासे राखे निश दिन, तोहु दया नहीं आई ॥३॥
देवगती में परसंपतको, देख देख यों झूरत मनको ।
तीन लोक की सारी संपति, मेरे क्यों नहीं आई ॥ ४ ॥
मानुष भव यह दुर्लभ पाया, यहां भी विषयोंमें विलमाया ।
तो भी प्रभुका गुण नहीं गाया, योंही आयु गमाई ॥५॥

[११२—झंझोटी]

देखन दे री मुखचन्द दृगन भररी ॥ टेर ॥
माता मरुदेवी के उदर तुम जाये ऋषभ जिनन्द ॥ १ ॥

जाके दर्शनतैं सुख उपजत मिटजावे दुख फन्द ॥ २ ॥
वाकैं मुखपर वारूँ मैं 'हितकर', चिरंजीव रहो तेरा नन्द।३।

[११३—झंझोटी]

जिनवर देख दृगन सुख पायो ॥ टेर ॥
आकुलता मिट सुख भयो मेरे अंग अँग हुलसाईया।
कुमति भगेन्दिया सुमति प्रवेश ॥ १ ॥
अब मैं जानी मैंडा करम नशाया, सुगरु वचन मन भाया,
शिवमग लैंदिया हित उपदेश ॥ २ ॥

[११४—झंझोटी]

तिहारी लाग रही लौ जी ॥ टेर ॥
सुन्दर मूरति लखि लखि प्यारी, धारूं हिवडा बीच ॥१॥
मिथ्यामतके वैन विसारे, छांडी अब गति नीच ॥२॥
'राम' रीति पाई अब नीकी, शिवकी राह नजीक ॥३॥

[११५—झंझोटी]

काहे को रंग डारोरी नेमजी गिरिको गये हैं ॥ टेर ॥
चोहा चंदनको अवसर नाहीं, हिया वैराग विचारोरी ॥१॥
ह साँचा वाकों दोष नहीं है, पशुवन शोर कियो भारोरी।२।
मैं उनके चरणनकी दासी, उन विन जग अंधियारोरी ।४।
एक बात पिया की न हम जानी, कैसे नेह निवारोरी ॥४॥
मैं उनके संग 'राम' लखूंगी, पाऊँगी भवदधि पारोरी ।५।

[११६—झझोटी]

थोडेसे दिनन की तोरी जिन्दगानी ॥ टेर ॥

जब यम तोकूं आन गहेगो,काहेकी ओट करेगो भविप्राणी॥१

या देही को गर्व न कीजे,विनश जाय जैसे ओसको पानी॥२।

'जादुराय'की याही अरज है,आतमकाज करो भवि प्राणी॥३।

[११७—झझोटी]

सुनि जिन वैन श्रवन सुख पायो ॥ टेर ॥

नस्यो तत्त्व-दुर-अभिनिवेश[1] तम,स्याद्-उजास कहायो ।
चिर विसरयो लह्यो आतमरैन[2] ॥ १ ॥

दह्यो अनादि असंजम दवतैं, लहि व्रत सुधा सिरायो ।
धीर धरी मन जीतन मैन[3] ॥ २ ॥

भए विभाव अभाव सकल अब, सकल रूप चित लायो ।
'दौल' लह्यो अब अविचल चैन ॥३॥

[११८—झझोटी]

हो तुम त्रिभुवनतारी हो जिनजी, मो भव-जलधि क्यों न
तारत हो ॥ टेर ॥

अंजन कियो निरंजन[4] तातैं अधम-उधारविरद धारत हो ।

हरि[5] वराह[6] मर्कट[7] झट तारे, मेरी वेर ढील पारत हो ॥ १ ॥

यों बहु अधम उधारे तुमतो,मैं कहा अधम न मुहि टारत हो

१. आग्रह, २. रतन, ३. कामदेव, ४. कर्म रहित, ५ सिंह,
६ सूअर, ७ वानर,

तुमको करनो परत न कछु शिव-पथलगाय भव्यनि सारतहो।२
तुमछवि निरखत सहज टरे अघ,गुणचिन्तत विधिरज झारतहो।
'दौल' न और चहै मोहे दीजै, जैसी आप भावनारत हो।३

[११९—झंझोटी]

श्री जिन पार लगावो मोरी नैया ॥ टेर ॥
हो करुणाकर त्रिभुवनस्वामी,तुमबिन और न लाज रखैया।१
भवभव भ्रमत सुन्यो यश तेरो,तुमहो जगमें शरण रखैया।२
'चोथमल्ल'चरणन शिरनावै,मोकू शिवपुर वास वसैया ।३।

[१२०—झंझोटी]

जियरा बिरानी संग तू भयो, तजके मोकू रे ॥ टेक ॥
विषय-लगनमें बहुत लुभायो, काल अनादि वृथा खोयो।१
सुमति कहै पियां निज घर आवोजी,परस्थानकचित तैं दियो २
कुमति रमन तैं सदन,रमनमें निज अनुभव चित ना दियो।३

[१२१—झंझोटी]

चलि सखी देखन नाभिरायघर, नाचत हरि[१] नटवा ।टेर।
अद्भुत ताल मान स्वर लययुत चवत[२]राग षटवा[३] ।
मनिमय नूपुरादि भूषणदुति,युत सुरंग पटवा[४] ॥१॥
हरिकर[५]-नखन नखनपै सुरतिय, पग फेरत कटवा[६] ॥२॥

१—इन्द्र रूपी नट, २—गाते हैं, ३—छहराग, ४ वस्त्र, ५—इन्द्र के हाथों के नाखूनोंपर, ६—कमर,

किन्नर करधर बीन बजावत, लावत लय झटवा ।
'दौलत' ताहि लखत चख[१] तृपते सूझत शिव बटवा[२] ।३।

[१२२—जंगला]

हमें छोड कित गये नेम गिरनारी गये गये जी ॥ टेर ॥
छप्पन कोड जादू चढे हलधर कृष्ण मुरारजी ।
तोरण से रथ फेर चले प्रभु, सुन पशुवन की पुकारजी ।१।
हाथ जोडकर राजुल ठाडी, सुनो नाथ मोरी बातजी ।
नव भव की मैं चेरी थांकी दशवें भव राखो लारजी ॥२॥
टूटी नाव समुद बिच बेडा, अधबिच भंवर लहीजी ।
'सेवक' की प्रभु पार लगैयो, नातर जात वहीजी ॥ ३ ॥

[१२३—जगला]

मूरति निरखी साँवरी, नींद उचट गई सगरी मोहकी ।टेर।
नेमीश्वर के पद परसत ही, पायो मैं विसराम री ॥ १ ॥
ध्यानारूढ निहार छवि कों, छूटत भव दुखधाम री ॥ २ ॥
मुनिजन याकौं ध्यान धरत ही, पायो आतमराम री ॥३॥

[१२४—जगला]

देखो देखो नेम प्यारे, गहीलो रथ फेरचो, प्रभुने मोरी
सुध न तनक लहीजी ॥ टेर ॥
ब्याहन आये जी, सब मन भायेजी ।

१—नेत्र, २—मोक्षमार्ग ।

पशु शोर सुनैया, उलट रथ गईया,

जाय गिरवर तप धर दिया जी ॥ १ ॥

हमसे नेहा तोडा जी, शिवसे नेहा जोडा जी।

उनही के संग जईया उनही के गुण गइया,

'बलदेव' नेम चरण शरण गहीजी ॥ २ ॥

[१२५—जंगला]

किस विधि किये करम चकचूर, थांकी उत्तम क्षमायें

अचंभो म्हाने आवैजी ॥ टेर ॥

एक तो प्रभु तुम परम दिगंबर, पास न तिलतुष मात्र हजूर।
दूजे जीवदयाके सागर, तीजै संतोषी भरपूर ॥ १ ॥
चोथे प्रभु तुम हित उपदेशी, तारण तरण जगत मशहूर।
कोमल वचन सरल सम वक्ता, निर्लोभी संजम तप शूर ।२।
कैसे ज्ञानावरण निवारथो, कैसे गेरथो अदर्शन चूर।
कैसे मोहमल्ल तुम जीते, कैसे किये च्यारौं घातिया दूर ।३।
त्याग उपाधि हो तुम साहिब, आकिंचन व्रतधारी मूल।
दोष अठारह दूषण तजके, कैसे जीते काम क्रूर ॥ ४ ॥
कैसे केवल ज्ञान उपायो, अन्तराय कैसे कियो निर्मूल।
सुरनर मुनिसेवै चरण तिहारे, तो भी नहीं प्रभु तुमको गरूर।
करत दास अरदास 'नैनसुख' येही वर दीजे मोहे दान जरूर।५।
जन्म जन्म पद-पंकज सेऊं और नहीं कछु चाहूँ हजूर ॥ ६ ॥

[१२६—जगला]

लगन मोहे लागी देखन की उमंग उठी घट माहिं अनोखी
मूरत श्री जिनकी ॥ टेर ॥

अनन्त चतुष्टय प्रातिहार्ययुत, पुनि अशोक धारी ।
तारण तरण चिदानन्द स्वामी, सब दूषण हारी ॥ १ ॥
बिन आभूषण झलक जोति अति, कोटि भानु रवि की ।
समोशरण की देख गिनत क्या सुरपुर से अधिकी ॥२॥
वाणी सुनत हनत करमन को, उर आनन्द आवै ।
भर्म मिटै निज आतम प्रगटै भूली निधि पावै ॥ ३ ॥
चंचलता तज अचल चित्त कर, लीना मन वश में ।
तीनकाल पर्याय द्रव्य गुण झलकत हैं उनमें ॥ ४ ॥
मेरे घट–सर–सुमन-कमल में, चरण बसो जिनका ।
'बुधजन' की अरदास यही है दास सदा जिनका ॥ ५ ॥

[१२७—जगला]

जगतपति कौन भांति तिरणा, दुखी फिरत संसार चतुर्गति
सो तुमसे निरणा ॥ टेर ॥

घोराघोर नरक के भीतर, नाना दुख भरना ।
मारन ताडन छेदन भेदन और न देह धरना ॥ १ ।
कबहु तिर्यञ्च योनि पायके, गले फांसि धरना ।
छुधा तृषा और शीत उष्णता, पीठ भार लदना ॥ २ ।

देव विभूति पाय अति सुन्दर, अधिक देख झुरना ।
जब माला मुरझावन लागी सोच किया मरना ॥ ३ ॥
मानुष जन्म पाय अब विसरचो, विषय भोग रचना ।
राव रंक छिन मॉहीं दीखे, जन्म मरण भरना ॥ ४ ॥
ईं विधि अनन्तकाल भव भटक्यो, कहूं नाहिं शरणा ।
'साहिब' अब शरणागत राखो, जन्म मरण हरना ॥५॥
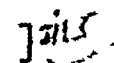
[१२८—जंगला]

अरी हेरी बताओरी पिया क्यों रूस गये हमसे,गये तजके,
क्यों आया था बना बन, व्याहने सब साजको सजके ।टेर।
सुना री शोर पशुवन का, प्रभूजी ने,
विचारी भावना मनमें, दया धरके छुडा दीने ॥ १ ॥
लखा री ठाठ झूंठा है जगत सारा,
लहा री भार संजम का, नग्न होय लोंच करडारा ॥ २ ॥
मिलादे री मुझे भी, नेम प्यारे से,
अभी ले चल, सखी आनन्द से अब कहूँ तिहारे से ॥ ३ ॥
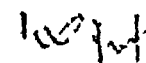
[१२९—जंगला]

म्हारा कंथा[१] बालम राज तोकूं नाहिं भूलूंगी ॥ टेर ॥
तोरण से रथ फेर चले प्रभु भये महाव्रत धारी ।
कौन गुनाह हम किया पियारे, लीजे दया हमारी ॥ १ ॥
पशुवन की तुम करुणा कीनी, हमरी सुध न संभारी ।

१—कंथा=पति ।

नव भव से मैं संघ तिहारी, शिव तिय ओर निहारी ॥२॥
अब हमको भी संग लीजिये, गह्यो शरण तिहारी।
अन्तर आतम 'राम' लखूंगी बाहर जप तप धारी ॥ ३ ॥

[१३० — जंगला]

ल्याओरी समझाय मोरे पिया, मैं खड़ी, निहारूं बाट
बाँकी सुन एरी, ल्याओरी समझाय ॥ टेर ॥
ब्याहन आये, सब मन भाये, तोरण से फिर फिर क्यों जाय १
म्हारे मन और करी उन औरही सूरत मो मन रही लुभाय।२
राजुल कहै अब 'हितकर' मोकूं नेम पिया मोय दरश
दिखाय ॥ ३ ॥

[१३१—जंगला]

नहिं गोरो नहि कारो चेतन, अपनो रूप निहारो ॥ टेर ॥
दर्शन ज्ञान मई चिन्मूरत, सकल करमते न्यारो रे ॥१॥
जाके विन पहिचान जगतमें सह्यो महा दुख भारोरे।
जाके लखे उदय हो तत्क्षण, केवल ज्ञान उजारो रे ॥२॥
कर्मजनित पर्याय पायके कीनों तहां पसारो रे।
आपापरको रूप न जान्यो, तातें भव उरझारो रे ॥ ३ ॥
अब निजमें निजकूं अवलोकूं जो हो भव सुलझारो रे।
'जगतराम' सब विधि सुख सागर पद पाऊं अविकारोरे।४

[१३२—जंगला]

तुम लाज राख प्रभु मोरी करुणानिधि स्वामी जी।
दुख वचन-अगोचर भुगते चहुँ गति के मांही जी ॥ टेर ॥
पड वैतरणी के मांही बहु गोते खायेजी ।
मुझे छोंका, तला, बंदारा, नरकन के मांही जी ॥ १ ॥
कपि श्वान सूर भया भैंसा, दुष्टों ने नाथ डारीजी ।
तहां भूख प्यास अति भुगती, तिर्यंचगति मांहीजी ॥ २ ॥
भया नारि नपुंसक भंजा, अथवा बहिरा नकटाजी ।
नव मास अधोमुख भूला, मानुषगति मांहीजी ॥ ३ ॥
देवियन के संग बहुराच्यो, पर संपत देख भूराजी ।
तहां हाहाकार मैं कीना, स्वर्गनके मांहीजी ॥ ४ ॥
अब काल-लब्धि कारणतैं, तुम वचन कान धारेजी ।
प्रभु अविनाशी पद दीज्यो, पंचमगति मांहीजी ॥ ५ ॥

[१३३—जंगला]

मैने स्वामी तन मन तुम पर वार दिया आ आ तुम पर
वार दिया ॥ टेर ॥
सुयश तुम्हारा सुनकर आया,
लीज्यो नाथ खबरिया तुम पर वार दिया ॥ १ ॥
मेरे काज आप पर निर्भर,
अब हो महर नजरिया तुम पर वार दिया ॥ २ ॥
सेवक की विनती सुन लीज्यो, बीती जात उमरिया ॥ ३ ॥

[१३४—जंगला]

होरी हो रही हो नगर में ॥ टेर ॥
मेरे पिया चेतन घर नाहीं मोकूं होरी को ॥ १ ॥
सोऊ कुमति संग राच रह्यो किहि विधि ल्यावत सो ।२॥
'द्यानत' कहै सुमति सखियन को तुम कछु शिक्षा द्यो ।३।

[१३५—जंगला]

मैं निज आतम कब ध्याऊँगा ॥ टेक ॥
रागादिक परिणाम त्यागकै समता सौं लौ लाऊँगा ॥१॥
मन वच काय योग थिर करकै ज्ञान समाधि लगाऊँगा ।१
कबहौं क्षपक श्रेणि चढ़ ध्याऊँ चारित मोह नशाऊँगा ॥२॥
चारों करम घातिया खनकर परमातम पद पाऊँगा ।
ज्ञान दरश सुख बल भंडारा, चार अघाति बहाऊँगा ॥३॥
परम निरंजन सिद्ध शुद्धपद परमानन्द कहाऊंगा ।
'द्यानत' यह सम्पति जब पाऊँ बहुरि न जगमें आऊँगा ।४।

[१३६—जंगला]

जगमें जीवन थोरा रे अज्ञानी जागि ॥ टेर ॥
जन्म ताड तरुतें पडै फल संसारी जीव ।
मौत महीमें आय हैं और न ठौर सदीव ॥ १ ॥
गिर-सिर दिवला जोइया रे, चहुँदिशि बाजै पौन ।
बलत अचंभा मानिया, बुझत अचंभा कौन ॥ २ ॥
जो छिन जाय सो आयुमें निशिदिन ढूकै काल ।

बांधि सकै तो है भला पानी पहिली पाल ॥ ३ ॥
मानुष भव दुर्लभ्य है मति चूकै यह दाव ।
"भूधर" राजुल कंत की, शरण सिताबी आव ॥४॥

[१३७—जंगला]

मानुष गति नींथ्या मिली छै आय ॥ टेक ॥
काक ताल और अन्ध बटेरी, उपमा कौन बनाय ॥ १ ॥
यह गति दान महा तप कारण, अजर अमर पद दाय ।
सो तू भोग बिसन में खोवै, अमृत तज विष खाय ॥२॥
नरक मांहि बहु विपति भरी है, ज्ञान पशु न लहाय ।
देव ऊंच गति हूं याचै कब होऊँ नर आय ॥ ३ ॥
अंजुलि जल ज्यो आयु घटत है, करले बेग उपाय ।
'बुधजन' बारंबार कहत है, शठ सो नाहिं बसाय ॥ ४ ॥

[१३८—जंगला]

मैं लखा किया करूँ दगवा मोरा ईरादी ॥ टेर ॥
निशिवासर से वैना मैं रखा किया करूं ॥ १ ॥
अमृतवाण सेवैना नित, चखा किया करूँ ॥ २ ॥
रतनत्रय निधि देना नफा किया करूँ ॥ ३ ॥

[१३९—जंगला]

वादिन को कर सोच जिय ! मनमें, वादिन ॥ टेक ॥
विणज किया व्यापारी तैंने टाँडा लादा भारी रे ।
ओछी पूंजी जुआं खेली आखिर बाजी हारी रे ।

आखिर बाजी हारी, करले चलने की तैयारी ।
इक दिन डेरा होयगा वनमें ॥ १ ॥
झूँठा नैना उलफत बांधी, किसका सोना किसकी चांदी ।
इक दिन पौन चलेगी आंधी, किसकी बीबी किसकी बांदी ।
नाहक चित्त लगावेरे इनमें २ ॥
मूरख सेती मूरख मिलिया ज्ञानी से ज्ञानी ।
पानी सेती पानी मिलिया माटी से माटी ॥
वा माटी है तेरे तनमें ॥ ३ ॥
कहत "बनारसि" सुन भवि प्राणी यह पद है निर्वाणा रे ॥
जीवन मरण की आशा नाहीं शिर पर काल निशाना रे ।
खबर तो पडेगी बुढापापन में ॥ ४ ॥
[१४७—जगला]
लिया ऋषभ देव अवतार, नृत्य सुरपति ने किया आके ।
नृत्य किया आके हरषाके, प्रभुजीके दशभव को दरशाके ।
सरर सरर कर सारंगी तम्बूरा बाजे, पोरी पोरी मटकाके ।टेर।
प्रथम प्रकाशी वानै इन्द्रजाल विद्या ऐसी ।
आजलौं जगतमें सुनी न काहू देखी ऐसी ।
आयो है छबीलो चटकीलो यो मुकुटचन्द ।
छम्मदेसी कूद्यो मानो आकूद्यो पूनम को चन्द ।
मनको हरत गति भरत प्रभुको पूजे धरणी से शिर नाके ।१।
भुजों पै चढाये हैं हजारों देवी देव जानै ।

हाथों की हथेली पै जमाये हैं अखाडे तानें।
ताधिन्ना ताधिन्ना किटकिटधित्ता उनकी प्यारी लागैं।
धुमकिट धुमकिट बाजै तबला नाचैं प्रभुजी के आगैं।
सैनों में समझावें तिरछी एड लगावें उडजावें भजन गाके॥२
छिनमें जा बन्दे वो तो नंदीश्वर द्वीप आप ।
पांचों मेरु बंदि आ मृदंग पै लगावे थाप ॥
बन्दें ढाई द्वीप तेरह द्वीपके सकल चैत्य ।
तीन लोक मांही पूज आवें बिम्ब नित्य नित्य ॥
आवैं वो झपट सम ही पै तोडा लेने दम ।
करे छुम करे छुम छनननन मन मोहैजी मुसकाके ॥३॥
अमृत की लागी झड बरपे रतन धारा ।
सीरी सीरी चालै पौन, करैं देव जय जय कारा ॥
भर भर झोरी बरसावे फूल दे दे ताल ।
महके सुगन्ध मो चंग बाजै पटताल ॥
जन्मे जिनन्द भयो, नाभिके आनन्द
"नैनानन्द" यों सुरेन्द गयो भक्ति को दरशा के ॥४॥

[१४१—जंगला]

मुसाफिर चौकस रहियो रे, ठग लाग्या थारी लार ॥टेर॥
भाई बन्धु अरु कुटुम्ब-कबीला सब मतलब के यार ॥१॥
घर की नारी सबसे प्यारी वाहू न चाले थारी लार ॥२॥
बारबार सतगुरु समझावे, प्रभु भज उतरो पार ॥३॥

[१४२—जगला]

धिक् धिक् जीवन तोरी भक्ति विना ॥ टेर ॥
जैसे वेगारी दरजी को पर घर कपडा का सिवना ॥ १॥
मुकट विना जैसे अम्बर पहरे, जैसे भोजन घिरत विना ।२
'द्यानत' भूर विना जो सेना जैसे मन्दिर नींव विना । ३॥

[१४३—जगला]

धिक् धिक् जीवन सम्यक्त्व विना ॥ टेर ॥
दान-शील-तप-व्रत श्रुत पूजा, आतम हेत न एक गिना॥१॥
ज्यों विन कन्त कामिनी शोभा,अम्बुज विन सरवर सूना ।
जैसे विना एकडे विन्दी, त्यों समकित विन सर्व गुना ॥२॥
जैसे भूप विना सब सेना, नींव विना मन्दिर चुनना ।
जैसे चन्द विहूनी रजनी, इन्हें आदि जानो निपुना ॥३॥
देव जिनेन्द्र साधु गुरु करुणा, धर्मराग व्यवहार भना ।
निश्चय देव धर्म गुरु आतम,"द्यानत"गहि मन वचन तना४

[१४४—जगला]

तुम देखोजी मेरी ओरिया,में शरणगहिंदा प्रभु तोरिया ।टेक
अष्ट कर्म भव भव मांही करी बहुत बरजोरिया ॥ १ ॥
जन्म जरा मृत्यु रोग मिटावो,यह विनती है मोरिया ॥२॥
निज आतम ध्याऊँ शिव कारण,'हितकर'उरमें ओरिया॥३

[१४५—जगला]

श्याम विन रही अकेली जी, मेरा न जगमें कोय ॥टेर॥
सेवादे उर अवतरे समुदविजयजीरा नन्द ।

मो हिरदय ऐसे बसो जैसे कदली कन्द ॥ १ ॥
तीन लोक में सुख करन सकल हरन दुख दंद ।
मोहे छोडी यों तडपती, ज्यों चकोर रवि चन्द ॥ २ ॥
श्याम वरण तन सोहनो, लखत शंख पद चिन्ह ।
रतनत्रयनिधिके धणी मोहे करो निर्फंद ॥ ३ ॥

[१४६—जगला]

मनडोजी थाँकी ओरी[1] नै लुभानोजी हो जिनराज ॥ टेर ॥
आन विषय सब विरस विनाशेजी, तुमगुण में सरसानोजी ।१
वीतराग मूरति लखि सुन्दरजी, देखत नैनन अघानोजी ॥२॥
शिवमारग उपदेशक तुम लखिजी, पायलहौं शिवथानोजी ।३

[१४७—जंगला]

तुभ्यं नमस्ते स्वामी शांति जिनन्दाजी ।
दृग देखे परम आनंदा, मुख पूनमचंदाजी ॥टेर॥
जन्मे जिन शांति सुधा री जग फेरी निवारी जी ।
प्रभु तीन ज्ञान हितकारी, नरदेही धारीजी ॥१॥
तुम बिन प्रभु कोई न मेरा, तुम साहिब मेराजी ।
हरो मिथ्या शोक हमेरा, काटो भवफेराजी ॥२॥
तुम दीनदयाल जगपाला, लालन के लालाजी ।
मैं सदा जपूं गुणमाला, धरि हिरदय लीनाजी ॥३॥

---

१ तरफ

तुम कल्पवृक्ष हितकारी, चिन्तामणि धारीजी ।
प्रभु पूरो आश हमारी, फिर खुशी तिहारीजी ॥४॥

[१४८—जंगला]

ज्ञान बिन थान न पावोगे, गति गति फिरोगे अजान ॥टेर॥
गुरु उपदेश लह्यो नहिं उरमें, गह्यो नहीं सरधान ॥१॥
विषय भोग में राचि रहे करि आरत रौद्र कुध्यान ।
आन-आन लखि आन भये तुम, परणति करलइ आन ॥२
निपट कठिन मानुषभव पायो, और मिले गुणवान ।
अब 'बुधजन'' जिनमत को धारो, करिआपा पहिचान ।३।

[१४९ – जगला]

चेतन तैं करुणा न करी रे ॥ टेर ॥
यातैं आयु अल्प पावत है, आरम्भ रीति हिये पकरी रे ।१।
आप न दुःख सहे तिनका[1] सम, औरनि मारत ले लकडी रे ।२
"द्यानत'' सब जिय आप समाने, कुन्थुवादिक[2] अन्त करी रे

२० [१५०—जंगला]

जिस विधि कीने करम चकचूर—सो विधि बतलाऊँ तेरा
भरम मिटाऊँ बीरा, जिस विधि कीने करम चकचूर ।टेर।

---

१ तृण के समान २ चींटी आदि से लेकर हथी तक ।

सुनो संत अर्हंत पंथ जन, स्वपर दया जिस घट भरपूर ।
त्याग प्रपंच निरीह करैं तप, ते नर जीते कर्म करूर ॥१॥
तोडे क्रोध निठुरता अघ नग,कपट क्रूर सिर डारी धूर ।
असत अंग कर भंग बतावे, ते नर जीते कर्मकरूर ॥२॥
लोभ कंदरा के मुखमें भर, काठ असंजम लाय जरूर ।
विषयकुशील कुशाचल फूंके, ते नर जीते करम करूर ॥३॥
परम क्षमा मृदुभाव प्रकाशे, सरलवृत्ति निरवांछक पूर ।
धर संजम तप त्याग जगत सब,ध्यावैं सतचित केवलनूर।४
यह शिवपंथ सनातन संतो, सादि अनादि अटल मशहूर ।
या मारग "नैनानन्द"हु पायो,इस विधिजीते कर्म करूर।५

[१५१—जगला]

मै तो अयाना तैनू न जाना जाना ते भला जियासो ॥टेर॥
बिनजाने दुख गतिगतिमाहीं लहे,काल अनंता की तू जाना१
जे जानेते शिवपुर माही गये,बहुरि जनम अब न पाना ।२।
अब शिरनायके'बुधजन'याचत हैं सैया अष्टकर्मकोदेभाना ३

[१५२—जगला]

अब मैं शरण लह्योजी अजी लह्योजी जिनन्द म्हाका राज।टेर
अबलौं तुम गुण भेद न पायो भागन गुरु उपदेश दयोजी।१
जपतप संयम बनत न मोसूं,निशिदिन नाम उचार लयोजी २
निज आतम ध्याऊँ शिवकारण,'हितकर'तुमपद शीस नयोजी३

[१५३—जंगला]

जनम विरथा न गमाओजी, पायो तरस तरस नर भव दुर्लभ
ऐ विरथा न गमावो जी ॥ टेर ॥
मत ना मीत विषय तरु बोवैं, मत शूली चढ निर्भय सोवै।
तज चारों[1] पाचों[2] सातों[3], मत पाप कमाओ जी ॥ १ ॥
त्रि[4] षट[5] द्रव्य षटजीव[6] चितारो, झटपट षट[7] अरु पांच[8] विचारो।
द्वादश-[9]बाण चतुर[10] शर धर, तेरह[11] मन ध्यावोजी ॥ २ ॥
यही मोक्षको मूल बतायो, अरिहंतादि महंतन गायो।
कर प्रतीत बरतो सम्यक्त्व सच्चे कहलावोजी ॥ ३ ॥
तज चोबीस[12] अठाइस[13] धारो, पाय पचीस[14] छत्तीस[15] संभारो।
ले छियालीस[16] खपाय आठों[17] सीधे शिव जावोजी ॥ ४ ॥
जो तू नाम 'नैनसुख' पायो, तो तैं निज पर क्यों न लखायो।
तज परमारथ निज अर्थ गहो, मत नाम लजावोजी ॥५॥

---

१ चार कषाय। २ पांच पाप। ३ सात व्यसन। ४ सम्यग्दर्शन, ज्ञान चारित्र ये तीन। ५ छह द्रव्य। ६ छह कायके जीव। ७ छह लेश्या। ८ पांच महाव्रत, अथवा पाच ज्ञान अथवा पांच समिति। ९ बारह अनुप्रेक्षा। १० चार आराधना रूपी बाण। ११ तेरह चारित्र १२ चौवीस परिग्रह। १३ मुनियोंके २८ मूलगुण। १४ उपाध्यायके २५ गुण। १५ आचार्य के ३६ गुण। १६ अरिहन्त के छियालिस गुण। १७ आठों कर्म।

[१५४ – लावणी]

चंदनाथ पद चंद-चिह्न है चंदचरण पुर चंद पती ।
चंद जगत के भये कुटुम्ब में चंद छोड सुख भये जती ।टेर
शील दया समता धीरजता, ज्ञान क्षमा उरमाँहि मती ।
तृष्णा कुमता क्रोध लोभ छल, मोहमानकी करी गती ।१।
भये निरन्तर अन्तरजामी, कर्म अरी तत्काल हती ।
केवल ज्ञान-उपाय लहे शिव, थान भये हैं इन्द्रपती ॥२॥
अञ्जन से तुम अधम उधारे, पशु दादर की करी गती ।
'रतन'बेर या ढील करो मति,मोक्ष दिवाबो सुन विनती।३।

[१५५ – लावणी]

सुनो नाथ इक अरज हमारी, दर्शन मुझको देजाना ।
नव भवसे मैं संघ तिहारी,कर निराश अब मत जाना । टेर
इस संसार असार जलधि में, तीर्थङ्करपद का पाना ।
जीवों के उपकार हेतु प्रभु, दया मेरी भी चित लाना ॥१॥
उत्तम कुलमें जेष्ठ कृष्णने, राज लोभ के हेत करी ।
स्वामि तिहारे विवाह की विधि,ऐसी माया रची खरी ॥२॥
बालापनसे ब्रह्मचर्य तुम, अब क्या चितमें चाह लगी ।
छोड मुझे शिवरमणी को चाहो;क्या अरूपि से प्रीति लगी।३
तुम विन शून्य 'चिमन'मोहे दीसै,मात पिता परिवार सही ।
जब लग मुक्ति मिलै नहीं संचित,भक्तिचरणकी मिलै सही।४

[१५६—लावणी]

मेरी त्रास देख चहुँगति की हरी नाहि पीडा हमरी ।
किस कारण तुम नाम दयानिधि, सब जग भजे सेवा तुमरी। टेर
मुझे अपावन जान नाथ तुम, जो नहि कोमलता ठानो ।
अरि गुण युत आरज मानव लखि, ह्वै दयाल तुम दुख भानों।
तो सम रसगुण दूषण कारण, भाव सराग लखे दृगमें ।
अरु पतितन तारण उज्ज्वल यशसो, क्यों मलीन होवे जगमें।
यह नय स्याद्वादतैं बाधित नय एकान्त विधिकी गुमरी ।१।
तेरे कथन मथन में शिववर श्रुतिऋषिराज उचारे हैं ।
काल लब्धि कारण अनवनते नहिं शिववाम निहारे हैं ।
काललब्धि पर ही हम रहते, वृथा सेव तुम क्यूं करते ।
अरु नृप भोग सदन प्रियजन तज क्यों निर्जनवन तपधरते।
ये दूषण त्रिकालनहिं तुममें, फिर तारणकी विधि गुमरी ।२।
हमरे मन नीके हम जानी काललब्धि दाता तुमही ।
तुमही पतित उद्धारण नायक, ज्ञायक लोक अलोक सही ।
मैं तुमको निज अनुभव करके, नहिं सुमरण सेवा ठानी ।
विन भावन सब क्रिया अलूणी, मेरी भूल मुझे दुखदानी ।
'चैन' होय जाविधि मुझसो, कर मुझ अपराध सबै खिमरी।३

[१५७—लावणी]

मेरे सनम से यों जा कहियो क्या मुझमें तकसीर पडी ।टेर
तुमको हैगी कसम हमारी किसने तुमपै वोली डारी ॥

किस कारण तुम दीक्षा धारी, मुझे उतारो पार, मेरे भर्तार,
मझधारा में आन पडी ॥ १ ॥
पशु छुडावन को मिस कीनो, सोकन[1] मुक्तीको वश कीनो ।
लोग बतावैं जोग मुक्तिके लोग की तृष्णा क्यों न मरी।२।
पूरी भई तुम्हारी दिक्षा पशुवनकी तुमकीनी रक्षा,
हमको भी प्रभुदीजे शिक्षा, तुमहो दीनदयाल, करो प्रतिपाल,
कि मुझमें विपत पडी ॥ ३ ॥
'नैनसुख' प्रभु दास तिहारो, मेरो करो वेग निस्तारो,
ये दुनिया है द्वन्द्व पसारो, दिया जगत को छोड, लिया
मुख मोड, विधाता कैसी करी ॥ ४ ॥

[१५८—लावणी]

श्री शान्तिनाथ महाराज अरज मेरे मनकी ।
तुम खेचौं हमरी डोर तुरत दरशन की ॥ टेर ॥
दरशन की लग रही आश, कछु ना सुहावै ।
दिन पडत चैन नहीं रैन नींद नहिं आवै ॥१॥
पाटनपुरि इक अजब शहर झालौं का ।
वहां बसें सेठ साहूकार विणज लाखों का ॥ २ ॥
पाटन पुरी इक अजब शहर कहलावै ।
तहां दीनानाथको ध्याय अमरपद पावै ॥ ३ ॥
इक "गौरीलाल" सुत प्यारीलाल गुण गावै ।
लख चोरासी का फंद फेर नहिं पावै ॥४॥

१—मुक्तिरूपी सौंतको ।

[१५६—लावणी]

अब पकडे पद जिननाथ सुपारश तेरे ।
सब हटे कलुष दुख द्वन्द्व मिटे भव फेरे ॥ टेर ॥
तुम बिन चतुरानन सही त्रास अति भारी ।
करकर विलास पुद्गल प्रकाशतै यारी ॥
नहिं लख्यो चिदानन्द अलख सकल सुखदाई ।
तब बढी प्यास पर आश विथा दुखदाई ॥१॥
पर में कर इष्टानिष्ट कल्पना जारी ।
कर राग द्वेषके फंद भयो जु भिखारी ।
चहुँ गति चोरासी लक्ष स्वांग धर–धरके ।
बहु नच्यो विमुख निज शक्ति पच्यो मरमरके ॥२॥
इम भ्रमत भ्रमत शुभ उदय मिली तुम वाणी ।
ता सुनत जीव पुद्गल की एकता भानी ।
मैं गहूँ ज्ञान दरशन सुभाव पर नाहीं ।
तब लहूँ 'चैन'' तुम निकट आय शिव माहीं ॥३॥

[१६०—लावणी]

सुनो प्रभुजी अर्ज हमारी मेरा काज तुमसो अटका ।
भवसागर में रुलत फिराहूं लख चोरासी में भटका ॥टेर॥
गर्भवेदना सही जो मैंने, औंधे मुँह करके लटका ।
गर्भकूपसे मुझे निकाला, फिर जमीन में धर पटका ।

बालपने अरु तरुण अवस्था वृद्धपने में है झटका।
तीनों पन मे यूंही खोये, पापलिये आया अटका ॥२॥
अष्टकर्मने खूब नचाया, ऊपरसे मारा सटका ॥
जो फल कियो सोही फल पायो,ख्याल घुमाया है नटका॥३
दीनदयाल दयानिधि स्वामी, चरण शरण का है चसका।
हाथजोड कर विनति यही है, मेटो प्रभु मेरा खटका ॥४॥
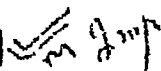
[१६१—लावणी]

धन्य धन्य है घडी आज की, जिन धुनि श्रवण पडी।
तत्त्व प्रतीति भई अब मेरे, मिथ्यादृष्टि टरी ॥ टेर ॥
जडतैं भिन्न लखी चिन्मूरति, चेतन स्वरस भरी।
अहंकार ममकार बुद्धि पुनि, परमें सब परिहरी ॥ १ ॥
पाप पुन्य विधि बंध अवस्था, भासी अति दुःख भरी।
वीतराग विज्ञान भावमय,परनति अति विस्तरी ॥ २ ॥
चाह दाह बिनशी बरसी पुनि समता मेघ झरी।
बाढी प्रीति निराकुल पदसों "भागचन्द" हमरी ॥ ३ ॥

[१६२—लावणी]

तीन लोकमें है जिनमन्दिर, तिनप्रति ढोक त्रिकाल हमारी।
कृत्रिम अकृत्रिम राजत जेते तिनकी महिमा अगम अपारी।टेर
प्रथम भवनमें लक्ष बहत्तर, सप्तकोटि की संख्या सारी।
मध्यलोक में च्यारसे-ठावन, वरने वेद पुराण मंझारी ।१।

स्वर्गलोक में चोरासी लख,सहस सत्याणवे अग्र के टारी।
बीसतीन सब अधिके जानो, राजत भविजन तारणहारी।२
ज्योतिष व्यन्तर मॉहि असंख्य राजत निरत करत सुरनारी।
अष्टापद आदिक भू जगमें 'जोधा'वंदित शिवसुखकारी।३।

[१६३—लावणी]

चिनमूरति दृगधारीकी मोहे रीति लगत है अटापटी ।।टेर।।
बाहिर नारकिकृत दुख भोगे, अन्तर सुखरस गटागटी।
रमत अनेक सुरनिसंग पैं, तिसपरनतितैं नित हटाहटी ।।१।।
ज्ञान विराग शक्तितें विधिफल, भोगत पैं विधि घटाघटी।
सदन निवासी तदपि उदासी तातैं आश्रव छटाछटी ।।२।।
जे भवहेतु अबुध केते तस करत बंध की झटाझटी ।
नारक पशु तिय पंढ विकलत्रय प्रकृतिन की ह्वै कटाकटी।३
संयम धर न सकै पै संयम धारक की उर चटाचटी।
तासु सुयश गुनकी 'दौलत'के लगी रही नित रटारटी।४।

[१६४—जंगला]

जय शिवकामिनी कंत वीर भगवंत अनन्त सुखाकर हैं।
विधिगिरि[१] गंजन बुधमनरंजन भ्रमतम भंजन भाकर[२] हैं।टेर

१-कर्मरूपी पर्वत को नष्ट करने वाले। २-सूर्य।

जिन उपदेश्यो दुविध धर्म जो सो सुरसिद्धि रमाकर[३] हैं।
भवि उर कुमुदनि मोहन[४] भवतप हरन अनूप निशाकर[५] हैं।१।
परम विरागि रहैं जगत तैं पैं जगतजंतु रत्नाकर हैं।
इन्द्र फनीन्द्र खगेन्द्र चन्द्र जग ठाकर ताके चाकर हैं ॥२॥
तासु अनन्त सुगुण मणिगन नित,गनतैं गुनी[६] गन थाकर है।
जा प्रभु पद नव केवल लब्धिसु कमला को कमलाकर हैं३
जाके ध्यान कृपान[७] राग रुप, पास हरण समताकर[८] हैं।
'दौल'नमैं करजोड हरन भव बाधा शिवराधा कर हैं ॥४॥

[१६५—लावणी]

हे जिन तेरो सुजश उजागर गावत हैं मुनिजन ज्ञानी ।टेर।
दुर्जय मोह महाभट जानै, निज वश कीने जग प्राणी।
सो तुम ध्यान कृपान पानिगहि तत छिन ताकी थितिभानी।१
सप्त अनादि अविद्या निद्रा,जिन जन निज सुधि विसरानी।

३—स्वर्ग मोक्ष लक्ष्मी का करनेवाला। ४—भव्यों की हृदयरूपी कुमुदिनी को प्रफुल्लित करने वाले। ५—चन्द्रमा। ६—गणधर। ७—ध्यान रूपी खड्ग से राग रोष की फांसी को काटने वाले। ८—समता के खजाने।

ह्वै सचेत तिनि निज निधि पाई, श्रवण सुनी जब तुम वानी।।२
मंगलमय तू जगमें उत्तम, तुही शरन शिवमगदानी।
तुम पद सेवा परम औषधी, जन्मजरामृत-गद हानी ।।३।।
तुमरे पंच कल्यानक माहीं, त्रिभुवन मोद दशा ठानी ।
विष्णु विदंबर जिष्णु दिगम्बर, बुध शिव कहि ध्यावत ध्यानी४
सर्व-दर्व-गुन-परजय-परनति, तुम सुबोधमें नहिं छानी ।
तातैं-'दौलदास' उरआशा, प्रगट करो निज रससानी ।।५।।

[१६६—राग दुर्गा]

सुनि सुजान ! पांचों रिपु वश करि,
सुहित करण असमर्थ अवश करि ।। टेर ।।
जैसे जड खंखार कोकीडा, सुहित सम्हाल सकैं नहिं फंस करि।१
पांचन को मुखिया मन चंचल, पहले ताहि पकड तू कसकरि ।
समझ देखि नायक के जीते, जैहैं भजि सहज सब लशकरि।२
इन्द्रिय-लीन जनम सब खोयो, बाकी चलो जात है खस-करि ।
'भूधर' सीख मान सतगुरुकी, इनसों प्रीति तोरि अब वशकरि३

23 [१६७—दुर्गा]

जगत गुरु कब निज आतम ध्याऊँ ।। टेर ।।
नग्न दिगम्बर मुद्रा धरके कब निज आतम ध्याऊँ ।
ऐसी लब्धि होय कब मोकूं, जो वांछित को पाऊँ ।।१।।
कब गृह त्याग होऊँ बनवासी, परम पुरुष लौ लाऊँ ।
रहूँ अडोल जोड पद्मासन, करम कलंक खपाऊँ ।। २ ।।

केवल ज्ञान प्रकट कर अपनो, लोकालोक लखाऊँ ।
जन्म जरा दुख देत जलांजलि हो कब सिद्ध कहाऊँ ।।३।।
सुख अनन्त विलसूं तिंह थानक, काल अनन्त गमाऊँ ।
'मानसिंह' महिमा निज प्रकटे,बहुरि न भवमें आऊँ ।।४।।

[१६८—मांढ]

लगै छवि नीकीजी मैं भरभर दग निरखूं ।। टेर ।।
सिद्धारथ त्रिशला के नन्दन पूजत हिय हरखूं ।
आन देव तज सेऊँ चरण जिन, तुमसे प्रेम रखूं ।। १ ।।
अष्ट द्रव्य शुचि हेमथाल भर, झारी भर झरखूं ।
सुरधर गान नाट्य नानाविधि, सकल अंग पलखूं ।। २ ।।
वसु विधि भव भव में दुखदाई यातैं जिय लरखूं ।
श्री जिनराज रतन चिन्तामणि याचत पल परखूं ।।३।।

[१६६—मांढ]

म्हारा तो नैनामें रही छाय, होजी हो जिनन्द थांकी मूरति,
म्हारा तो नैनामें रही छाय ।।टेर।।
जो सुख मो उर मांहि भयो है,सो सुख कहियो न जाय।१
उपमा रहित विराजत हो प्रभु, मौतैं वरणन न जाय ।
ऐसी सुन्दर छवि जाके ढिग,कोटि विघन टल जाय ।।२।।
तनमनधन निछरावल करहूँ, भक्ति करूं गुण गाय ।
यह विनती सुन लेहु 'नवल'की, आवागमन मिटाय ।।३।।

[१७०—मांढ]

करूँ प्रणाम करूँ प्रणाम, नाभिके नंदा शिव सुख चंदा
मिलके सब ।
शिव सुखदायक श्री जिनदेव, सुरनर मुनिजन करत सेव ।
कर्मोंको जलाना, जीवों को तिराना, मोक्षमें लेजाना
तुम्हारा काम ।
श्री जिनेन्द्र कर्मोंके फंद काऽऽटो । आया 'चिमन' शरण
जगत तिरण कुमति हरण जीवन अधार ॥ १ ॥

[१७१—माढ]

मनाजी[1] जिन श्रुत सुनवाने थे नित प्रति आवोजी,
सुरज्ञानी जी मना ॥टेर॥
मनाजी कठिन कठिन कर मनुष्य देही थे पाईजी,
सुरज्ञानीजी मना फिर यो जोग मिलण को नाहीं,
याही समझो जी मना ॥ १ ॥
मनाजी नरक गतिमें नारकी, केई बार हुवा सुरज्ञानी जी मना,
मारन ताडन छेदन भेदन भुगते जी घना ॥ २ ॥
मनाजी मायातैं तिर्यञ्च जून[2] लहाईजी, सुरज्ञानी जी मना
भूख प्यास पीडा उर अन्तर सही जी मना ॥ ३ ॥

---

१ मनको सम्बोधित किया गया है । २—योनि ।

मनाजी स्वर्गनमें परसंपति देखर झूराजी, सुरज्ञानी जी मना
झाल उठैजिमि अगनि पंतनकी थे, देखीजी मना ॥ ४ ॥
मनाजी 'संपत' कहै यो जोग मिलण को नाहींजी, सुर-
ज्ञानी जी मना,
यो साधर्म्या को संघ मिलन को नाहीं जी मना ॥ १ ॥

[१७२—मांढ]

सुनरी सखी हमारी मुझे नेमि पियाने विसारी ॥ टेर ॥
प्रभु व्याहन को जब आये, पशुवन ने शोर सुनाये ।
प्रभु करुणा उरमें धारी ॥१॥
प्रभु तोरण से रथ मोडा, आभूषण सब ही तोडा ।
प्रभु जाय चढे गिरनारी ॥२॥
अब हमको संघ लीजे, ज्ञानामृत रस दीजे ।
प्रभु सेवक शरण तिहारी ॥३॥

[१७३—मांढ]

प्यारो म्हाने लागै हे मां ! मुनिवर भेष ॥ टेर ॥
नगन रूप दोऊ हाथ झुलाये, राग द्वेष नहीं लेश ॥१॥
छहों काय जीवन के रक्षक, देत धर्म उपदेश ॥ २ ॥
ऐसे मुनिको मन वच तनकर, ध्यावत सुर नर शेष ॥३॥

[१७४ - मांढ]

हो परमात्मा जिनन्द कोई थाके म्हारे कर्मांही री आंटो, हो
परमात्मा जिनंद ॥टेर॥

जाति रूप कुल नाम सब तुम हम एकामेक ।
व्यक्ति शक्ति कर भेद दोउ कीने कर्म अनेक ॥१॥
तुमतो वसुविधि हानिके भये केवलानन्द ।
मैं वसुविधि वश होरहो, मोहे करो निर्फन्द ॥२॥
अधम उधारक विरद लखि, 'पारस' शरण गहीन ।
बत्ती दीप समान प्रभु मोहे आप सम कीन ॥३॥

[१७५—मांढ]

थासों प्रभु म्हारो मन रह्यो जी लुभाय ॥ टेर ॥
वीतराग छवि निरख रावरी मिथ्या देव दिये छिटकाय ।१।
तुमहो सब जगके बांधव प्रभु, विन कारण सबकों सुखदाय।२
तुम पदपंकज को प्रभु अब मैं सेऊं, मन वच तन लौं लाय।३
तुमको दीनदयाल जानके, 'बलदेव' शरण गही तोरी आय।४

[१७६—माढ]

जियाजी थानैं किनविधि राखूं समझाय ॥ टेर ॥
घणा दिना का विगड्या तीवण कुमति रही छै लिपटाय।१।
यातो थानै पर घर राखै, लालच व्यसन लगाय ।
मोह मदिरा में कियाजी वावला, लीना रतन-चुराय ॥२॥
एकस्यात मम रूप निहारो, निज घर मांही आय ।
'बुधजन' अविचल सुख पावोगे भव-संकट टरिजाय ॥३॥

[१७७—मांढ]

एजी थाने आवेजी अनादि नींद जरा टुक जोवो तो सही।टेर
मोहमद छकरही नींद अनादि, टोवो तो सही।
जरा ज्ञानादिक जललेय दृगन-पट धोवो तो सही ॥१॥
काम क्रोध मद लोभ विषय वश, होवो क्यों सही ॥
अजी थे चतुर्गतिको बीज चतुर थे बोवो क्यों सही ॥२॥
काल अनन्त दुख देत पिया क्यों मोहो छो सही।
अजी थे कुमति सखी संग बैट पैठ क्यों खोवोछो सही।३।
सत-मत-मुक्ता-माल प्रेम धर पोवो तो सही।
अजी थे निज गुण सेज सुधार सुघड नर पोढो तो सही।४।

[१७८—मांढ]

अरे कर्मन की रेखा न्यारी रे विधिना टारी नाहिं टरै।टेर
रावण तीन खण्ड को राजा छिनमें नरक पडै।
छप्पन कोट परिवार कृष्णके वनमें जाय मरे ॥ १ ॥
हनुमान की मात अञ्जना वन वन रुदन करै।
भरत बाहुबलि दोऊ भाई कैसा युद्ध करै ॥ २ ॥
राम अरु लक्ष्मण दोनों भाई सिय की संग वन में फिरे।
सीता महा सती पतिव्रता जलती अगनि पडे ॥ ३ ॥
पांडव महाबली सा योद्धा तिनकी त्रिया को हरै।
कृष्ण रुक्मणी के सुत प्रद्युम्न जनमत देव हरै ॥ ४ ॥

को लग कथनी कीजे इनकी, लिखता ग्रंथ भरै ।
धर्म सहित ये करम कौनसा 'बुधजन' यों उचरे ॥५॥

[१७ —माढ]

दर्शन देजाजो स्वामीजी अपने दास को ॥ टेर ॥
नव भव से मैं संघ हूँजी करिये जरा विचार ।
बेतकसीर छांडकर मुझको क्यों करते निर्धार ॥१॥
छप्पन कोटि जादू संग लेकर खूब बनाई बरात ।
पशुवन की तुम दया विचारी, मेरी चितमें न लात ॥२॥
राज्यादिक के लोभ से रच्यो जाल भरपूर ।
मैं नहीं जानूं ऊँच गोत्रमें ऐसे नर छलपूर ॥ ३ ॥
धिक् है ऐसी बुद्धि को जो नहीं हिताहित ज्ञान ।
बिन पुण्य-उदय नहीं मिलै, यह निश्चय चित जान ॥४॥
बालापन से ब्रह्मचर्य तुम, सर्व जगत विख्यात ।
छांड मुझे शिव रमणी चाहो, दुनिया करसी बात ॥५॥
कर्मों का फल भोगस्यूं जी सुनो हमारे नाथ ।
त्याग 'चिमन' मैं जोग धरूंगी लीज्यो मुझको साथ ।६।

[१८०—मांढ]

सांची तो कहो ना प्राणी कोडै थारो देश ॥ टेर ॥
जन्म लिया छै प्राणी, भूरा आया केश ।
स्याही से सफेदी आई, अजहूं क्यों न चेत ॥१॥

उठारा संघाती थाका अटै दीखै न एक ।
कठीनै जावोला प्राणी, अमताई एक ॥ २ ॥
सुखमें संघाती घणा दुःखमें न एक ।
वृथा ही पचोछो प्राणी निगह कर देख ॥ ३ ॥
धर्म तो संघाती सच्चा, झूंठा है अनेक ।
'रूपचन्द' साहिब को सुमरो राखै थारी टेक ॥४॥

[१८१—माढ]

हो महाराजा स्वामी थे तो म्हानै त्यारोजी म्हांका राज ।टेर
थे ही तारण तरण छो जी, थे छो गरीबनिवाज ।
पतित उधारन जानि थारी, शरण गही छै राज ॥१॥
जीव अनन्ता तारिया जी, जाका वार न पार ।
अधमादिक तिर्यञ्चको जी, तुरत किया भव पार ॥२॥
ऐसी सुनकरि साख तिहारी आयो छूं महाराज ।
भवदधि डूबत काढ लीजो, शर्ण आया की लाज ॥३॥
हाथ जोड मैं अरज करूँ, प्रभु विनऊँ वारम्बार ।
'वलदेव'को निज दास जानि करि वेग उतारोपार ॥४॥

[१८२—माढ]

छवि नैन पियारी जी देखत मन मोहै मूरति आपकी ।टेर
श्यामवर्ण और सुन्दरमूरति सिंहासन के मांहि
म्हारा प्रभु जी सिंहासन के मांहि ।

सिंहासन के मांही मूरति सोहनी ।
नृत्य करत है सब ही सभा मन मोहनी ॥१॥
ठाडो इन्द्र नृत्य करत है देख रहे नरनारी म्हाराप्रभुजी,
देख रहे नरनारि । देख रहे नरनारी के मनमें चाव है ।
ताल मृदंग अरु घुघरु सब ही बजाव है ॥ २ ॥
ठाडो सेवक अरज करैछै सुनज्यो गरीबनिवाज, म्हाराप्रभुजी
सुनज्यो गरीबनिवाज ।सुनज्यो गरीबनिवाज कि थ्यावस दीजिये
आन पड्यो मोहे दुःख दूर कर दीजिये ॥ ३ ॥

[१८३—मांढ]

म्हारो जन्म मरण दुख मेटो महाराज श्री जिनजी,
मोहे तारो महाराज० ॥ टेर ॥
लख चोरासी में अति दुख पायो,
मैं तो आयो तुम दरबार महाराज०॥ १ ॥
आन देव मैं भूल के सेयो,
म्हारो सरियो न एकहु काज महाराज०॥ २ ॥
सेवक की अरजी सुन लीज्यो,
कोई दीज्यो शिवपुर वास महाराज०॥ ३ ॥

[१८४—माढ]

निपट अयाना तैंने आपा नहिं जाना, नाहक भरम भुलाना वे।टेर
पीय अनादि मोह मद मोह्यो, परपद को निज माना वे ।
भ्रमत फिरयो संसार महावन, कबहुं न थिर चित ठानावे।१

चेतन चिन्ह भिन्न जडतासों, ज्ञान दरश रस-साना वे।
तनमें छिप्यो लिप्यो न तदपि ज्यों जलमें कजदल माना वे।२
सकलभाव निजनिज परणतिमय, कोई न होय बिराना वे
तू दुखिया पर कृत्य मान ज्यों,नभ ताडन श्रम ठाना वे॥३।
अजगनमें हरि भूल अपनपो, भयो दीन हैराना वे।
'दौल'सुगुरु धुनिसुनि निजमें निज पाय लहो शिवथाना वे।४

८५ [१८५—माढ]

अब हम आतम को पहिचाना ॥ टेर ॥
जैसा सिद्ध क्षेत्र में राजै, तैसा घट में जाना ॥१॥
देहादिक परद्रव्य, न मेरे, मेरा चेतन बाना ॥२॥
'द्यानत' जो जानै सो सयाना,नहिं जानै सो अयाना ॥३॥

८६ [१८६—मांढ]

अब हम देखा आतम रामा ॥ टेर ॥
रूप फरस रस गंध न जामें, ज्ञान दरश रस साना ।
नित्य निरंजन, जाके नाहीं—क्रोध लोभ छल कामा॥१॥
भूख प्यास सुख दुख नहिं जाके, नाहीं बन पुर ग्रामा ।
नहिं चाकर नहिं ठाकर भाई, नहीं तात नहिं मामा ।२।
भूल अनादि थकी बहु भटको मैं ले पुद्गल का जामा।
'बुधजन' सतगुरुकी संगतिसे,मैं पायो मुझ ठाना ॥३॥

[१८७—माढ]

आज प्रभू मोराजी हठीलो गिरपर चढ गयोजी ।
छप्पन कोडि जादू संग लेकर हलधर कृष्ण मुरारीजी ॥१।
तोरण से रथ फेर चले कोई सुन पशुवन किलकारीजी ।२।
जेठ कृष्णने राज-लोभसे करी बहुत दुख स्वारीजी ॥३॥
पूरव भवका फल लहा कोई किसको देऊँ अब दोपजी ।
मर्व 'चिमन' तज जोग धरूँगी कोई चढहुँ गढ गिरनारीजी ।४।

[१८८ माढ]

परभव में जाना तुझको एकला जाकी सांतर करले । टेर ॥
दया धर्म की[2] बहेल बनाले, ज्ञानका बैल्या[3] जोलें ।
जुविवल की[4] तू जोन घालले, शील चोधरी धरलें ॥ १ ॥
क्षमाभावकी गिद्दी बिछाले, समकित तकिया लगाले ।
शुद्ध मारगमें चाल प्राणी, विषय कंट नहीं लागै ॥ २ ॥
दरश ज्ञानको कलेवा लेलें, चारित खरची धरले ।
'संपति' ऐसी सांतर करले मोक्षमारग में चलनारे ॥ ३ ॥

[१८९—मांढ]

सुनि ठगनी माया, तैं सब जग ठग खाया ।
इक विश्वास किया जिन तेरा सो मूरख पछताया ॥१॥

१—सामग्री २-रथ । ३-बैल । ४-जूड़ा बांधने का पटिया ।

आभा[५] तनक दिखाय विज्जु[६] ज्यों मूढमती ललचाया ।
करि मद अंध धर्म हर लीनों, अन्त नरक पहुँचाया ॥२॥
केते कंथ किये तैं कुलटा, तो भी मन न अघाया ।
किसहीसौं नहिं प्रीति निभाई, वह तजि और लुभाया ।३।
'भूधर' छलत फिरत यह सबकों भौंदू करि जग पाया ।
जो इस ठगनी को ठग बैठे, मैं तिनको शिर नाया ॥४॥

[१९०—मांढा]

हमारा कहा मानूजी जियाजी ॥ टेर ॥
जियाजी काहे को चुनाये ऊँचे महल, जंगल रम जावोला ।१।
जियाजी मत करो देहीरो गुमान, देही तो जल जावेगी ।२।
जियाजी छांड कुमति केरो संग, सुमति संग राचोला ।३।
जियाजी भज पारस भगवान विघन टल जावेला ॥४॥

[१९१—माढ]

सारथी रामजी सों कहियो जाय ॥ टेर ॥
लोक लाजतैं मुझको छांडी धरम न छांडो मोरें नाथ॥१॥
करम कमाया सो फल पाया तुम सुखी रहो दिन रात ।
ध्यानथकी ता मन धर सीता मन्त्र जपो नवकार ॥२॥

५-आभा=ज्योति । ६-विज्जु=बिजली ।

[१६२—माढ]

कुमती बेशरमी निर्लज्ज जरा तू परी सरक जाये । टेर ।
मान मगनमें नाहक छक रही अपकीरति से डरिये ॥ १ ॥
निगोदवास में पीहर थारो नरकनमें घर वास ॥ २ ॥
झूंठा को संग छोड पापिनी, फिर मत मुख दिखलावै ।३।

[१६३—मांड]

मैं करूं निछरावल तुमपें जी मोतियन के थाल भरकोटेर।
जब जिनवर के दरशन पाऊं, नैना ये अति हरपे ॥ १ ॥
धन्य घडी मोहे साधु मिलनकी, हिवडे आनन्द बरपे।२।
सम्यक्दृष्टी श्रावक मिलिया सम्यक् चारित्र धरके ॥३॥

[१६४ - माढ]

गिरनारी जाता राखलीज्यो हे, हे मॉहे नेमीश्वर वनडा ने
गिरनारी जाता राख लीज्यो हे । टेर ।
छप्पन कोड जादू चढ्या हे, मॉ हे हलधर कृष्ण मुरारि ।
ऊँची चढ झांख लीज्यो हे ॥ १ ॥
रथ चढ तोरण आइया हे मॉ हे पशुवन करी छै पुकार,
पाछा रथ फेरिया हे ॥ २ ॥
तोड्या छै कंकण डोरडा हे, मॉ हे तोड्या छै नोसर हार,
दीचाव्रत आ धरया हे ॥३॥

ठाडी राजुल अर्ज करै है माँ हे संजम लेस्याँ धार,
कर्म फन्द काटस्याँ हे ॥४॥

[१६५—मांढ]

दरशन म्हाने दीज्योजी हो महाराज श्री जिनवर म्हाने
आज ॥ टेर ॥

समुद विजयजीरा लाडला, सेवादेवीरा नन्द ।
नायक तीनों लोक में जैसे पूनम चन्द ॥ १ ॥
नेमकँवर ब्याहन चढे, पशुवन करी पुकार ।
तोरण से रथ फेर चले, जाय चढे गिरनार ॥ २ ॥
राजुल तो स्वर्गां गई, नेम गये निर्वाण ।
प्रभु से मेरी बीनती, वेग उतारो पार ॥ ३ ॥
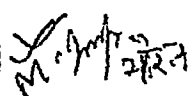
[१६६—मांढ]

अब हम अमर भये न मरैंगे ॥ टेर ॥
कारण मिथ्यात्व दियो तज, क्यों करि देह धरैंगे ॥१॥
उपजे मरै कालतैं प्राणी, तातैं काल हरैंगे ।
राग द्वेष जग बंध करत हैं, इनको नाश करैंगे ॥ २ ॥
देह विनाशी मैं अविनाशी, भेद ग्यान पकडैंगे ।
नासी जासी हम थिरवासी, चोखे हो निखरैंगे ॥ ३ ॥
मरे अनन्त बार बिन समझे, अब सब दुख विसरैंगे ।
'द्यानत' निपट निकट दो अक्षर, बिन सुमरैं सुमरैंगे ॥४॥

[१६७—माढ]

भजन विन योंही जनम गमायो ।। टेर ।।
पानी पहली पाज न बांधी फिर पीछे पछतायो ।।१।।
राग मोह मय दिन खोवत, आशा पाश बंधायो ।
जप तप संजम दान न दीनो मानुष जनम हरायो ।।२।।
देह शीस जब हालन लागी, दशन चलाचल थायो ।
लागी आग बुझावन कारण, चाहत कूप खुदायो ।।३।।
काल अनादि गुमायो भ्रमता, कबहु न थिर चित लायो ।
हरि विषय सुख भरम भुलायो, मृग तृष्णावत धायो ।४

[१६८—मांढ]

सुनि चेतन प्यारे काहे को पडे हो जग कूपमें ।। टेर ।।
तेरा रूप तो अरूप रे चेतन, किसने लगाया रंगरूपमें ।१।
तेरा शुद्धतो स्वरूपरे चेतन, किसने गिराया जगरूप में ।२।
पर परणति तज 'न्यामत' ध्यान तो लगावो निजरूप में ।३।

[१६९—माढ]

म्हारा प्रभुने घणी क्षमा, क्षमा समभाय राखोनैं,
एरी मेरी आलीरी मीठा बोलियो, म्हारा प्रभुने घणी क्षमा।टेर
उन लीन्ही दिक्षा सुखकारी हो, हम किम भवबन भ्रमा ।१।
मैं उनके संग ही तप करस्यूं करम शत्रु को हना ।। २ ।।

मैं उनके चरणन की चेरी, निज आतम में रमा ॥ ३ ॥

[२०० — मांढ]

अरे ओ रे चेतन तैंने बरजैछी, कुमता के रंग मत राचै ।टेर
तेरी कुमति घटी तेरी सुमति घटी, तेरी घटगई जोत दिवा-
करसी ॥१॥
माया मोह जडी इन्हे फेंक परी, कम्मजरं जैसे लकडीसी।२
तुनें 'चिमन' कही तू मान सही, संपति भावे शिवपुरसी ।३

[२०१ — माढ]

जब आतम अनुभव आवै, तब और कछु ना सुहावै ।टेर।
रस नीरस हो जात ततक्षिण, अच्छ विषय नहीं भावैं ।१।
गोष्ठी कथा कुतूहल विघटे पुद्गल प्रीति नशावैं ॥२॥
राग दोष जुग चपल पक्षयुत, मनपक्षी मर जावै ॥ ३ ॥
ज्ञानानन्द सुधारस उमगै, घट अन्तर न समावैं ॥ ४ ॥
'भागचंद' ऐसे अनुभव को हाथ जोरि शिर नावैं ॥ ५ ॥

[२०२ — माढ]

सुनि ज्ञानी प्राणी श्री गुरु सीख सयानी ॥ टेक ॥
नर भव पाय विषय मत सेवो, यह दुरगति अगवानी ।१।
यह भव कुल यह तेरी महिमा, फिर समझी जिनवाणी ।
इस अवसर में यह चपलाई, कौन समझ उर आनी ॥२॥

चंदन काठ-कनक के भाजन, भरि गंगा का पानी।
तिल खल रांधत मंदमती जो, तुभक्या रीस विरानी ॥३॥
"भूधर" जो कथनी सो करनी, यह बुधि है सुखदानी।
ज्यो मशालची आप न देखै, सो मति करैं कहानी ॥४॥

[२०३—माढ]

हो म्हारा नेमीसुर गिरवरया, कोई म्हाने भी ले चालो
थाँकी लार ॥टेर।

नवभव केरी प्रीतडी वाला, परत न तोडी जाय।
करुणा कर दिल में बसो, म्हासें तरस न देख्यो जाय ॥१॥
चरण कमल सेवा करूँ, म्हारा थे छो जीवन प्राण।
था बिन घडीय न आवडेजी, सुन्दर श्याम सुजान ॥२॥
पशुवन की करुणा करीजी, जादव केरी साथ।
सेवक मिल अरजी करैं, म्हारी एक न मानी बात ॥३॥

[२०४—माढ]

अष्ट करम म्हारो कांई करसीजी, मैं म्हारै घर राखूँ राम ।टेर
इन्द्री द्वारे चित दौरत हैं तिन वश ह्वै नहीं करस्यूं काम ॥१॥
इन को जोर इतोही मुझपे, दुख दिखलावै इन्द्री ग्राम।
जाको ज्ञानू मैं नहीं मानूं, भेद विज्ञान करूँ विश्राम ॥२॥

कहू राग कहु दोष करत थो, तब विधि आते मेरे धाम ।
सो विभाव नहीं धारूँ कबहू, शुद्ध स्वभाव रहू अभिराम ॥३॥
जिनवर मुनि गुरु की बलि जाऊँ, जिन बतलाया मेरा ठाम ।
सुखी रहत हूँ दुख नहिं व्यापत, 'बुधजन' हरपत आठों जाम ।४

[२०५—मांढ]

कीनी रक्षा हो जादुपति हो, हेजी हो लखाजी म्हाका राज ॥टेर
हेजी राणी रजमति करैछै पुकार,
शिवपुर चाला थॉकी लार, हो मत छांडो म्हा का राज ॥१॥
हेजी राणी रजमति रा भरतार ।
भवदधि डूबत तारो तारो हो, पार उतारो, म्हा का राज ॥२
एजी, राणी रजमतिरा भर्तार, पशु जी छुडाये अपार ।
'पारश दास' का उतारो हो भव दुखभार, म्हा का राज ॥३॥

[२०६—मांढ]

हे प्रभु अबतो दरशन देना, शरण में तोरी आयो ॥टेर ॥
दरशन बिन प्रभुजी तेरे मैं जग में खूब भ्रमायो ॥१॥
खोटे देवन की सेवा कर, मैं बहु पाप कमायो ।
हे प्रभु अबतो पाप विनाशो, शरण में तोरी आयो ॥२॥
अष्ट करम ने इस भव बनमें, मोकूं खूब भ्रमायो ।
प्रभु करमन का करि नाश शरण में तोरी आयो ॥३॥

धर्म कार्य कछु करते नांही, हम बहु पाप कमावै ।
प्रभु अबतो सुधि बुधि देना, शरण में तोरी आयो ॥४॥
हाथ जोड चरणन के मांही, दास "कपूर" सुनावै ।
हे प्रभु अबतो रखिये लाज, शरण में तोरी आयो ॥५॥

3। [२०७—मांढ]

हमतो कबहु न निजघर आये, पर घर फिरत बहुत दिन
बीते, नाम अनेक धराये । टेर ।
परपद निजपद मान मगन ह्वै, पर परणति लिपटाये ।
शुद्ध बुद्ध सुख कंद मनोहर, चेतन भाव न भाये ॥१॥
नर पशु देव नरक निज जान्यो, परजय बुद्धि लहाये ।
अमल अखंड अतुल अविनाशी, आतम गुण नहिं गाये ।२
यह बहु भूल भई हमरी फिर, कहा काज पछताये ।
'दौल' तजो अजहू विषयन को, सतगुरु वचन सुनाये ॥३॥

[२०८—माढ]

मुजरा हमारा लीजै, मुझे भव भव में सुख दीजे ॥टेर॥
तुमतो वीतराग आनंदघन हमको भी अब कीजे ॥१॥
जग के देव सब रागी द्वेषी, यातै निजगुण छीजे ॥२॥
आदि देव तुम समान हमको, वेग अचल पद दीजे ॥३॥

[२०६—मांढ]

आगे कहा करसी भैया, आजासी जब कालरे ॥टेर॥
ह्यां तो तैंने पोल मचाई, ह्वां तो होय संभालरे ॥१॥
झूठ कपट कर जीव सताये, हरथा हराया मालरे।
संपति सेती धाप्या नाहीं, तकी बिरानी बालरे ॥२॥
सदा भोगमें मगन रह्या तू, लखा नहीं निज हालरे।
सुमरण दान किया नहिं भाई, होजासी पैमालरे ॥३॥
यौवन में युवती संग भूल्या, भूल्या जब था बालरे।
अबहूँ धारो 'बुधजन' समता, सदा रहो खुशहालरे ॥४॥

[२१०—माढ]

सुज्ञानीडाजी हालो मंदिर चालो म्हाका राज ॥टेर॥
मंदिर चालो दरशन करज्यो, छबि या निरखोजी राज।
दरशन करके पूजा करज्यो द्रव्य चढावोजी राज ॥१॥
अर्घ उतारो पाठ पढो थे, शांति करो थे राज।
सुमति कहै छै संपति आवै सब सुख पावोजी राज ॥२॥

[२११—माढ]

आयारे बुढापा मानी, सुधि बुधि बिसरानी ॥टेर॥
श्रवण की शक्ति घटी, चाल चलै अटपटी।
देह लटी भूख घटी, लोचन झरत पानी ॥१॥

दांतन की पंक्ति टूटी, हाडन की संधि छूटी।
काया की नगरि लूटी, जात नहीं पहचानी ॥२॥
बालों ने वरण फेरा, रोग ने शरीर घेरा।
पुत्रहु न आवै नेरा, औरों की कहा कहानी ॥३॥
'भूधर' समुझि अब, स्वहित करोगे कब।
यह गति ह्वै है जब, तब पिछतै है प्राणी ॥४॥

[२१२—मांढ]

जिया तुम चालो अपने देश, शिवपुर थारो शुभ थान। टेर।
लख चौरासी में बहु भटके, लख्यो न सुखरो लेश ॥१॥
मिथ्या रूप धरे बहुतेरे, भटके बहुत विदेश ॥२॥
विषयादिक से बहु दुख पाये, भुगते बहुत कलेश ॥३॥
भयो तिर्यंच नारकी नर सुर, करि करि नाना भेष ॥४॥
'दौलत राम' तोड जग नाता, सुनो सुगरु उपदेश ॥५॥

[२१३—मांढ]

सखिरी मेरो जादुपति सरदार, हठीलो रंगभीनो छलकीनो
मनहर लीनो हमारो रे ॥टेर॥
समुदविजयजी का लाडला, सेवा देवी रा नन्द।
श्याम वरण सुहावनो मुख पूनम को चंद ॥१॥

तोरण पर जब आईया ले जादुदल लार ।
पशुवन की सुन वीनती, जाय चढे गिरनार ॥२॥
तोड्या कांकण डोरडा, तोड्या नवसर हार ।
सहसावन में सांवरा, लीनो संजम धार ॥३॥
मुझे छांडि प्रभु मुक्ति सिधारे, आवागमन निवार ।
"चंद कपूरा" वीनवै, चरण शरण आधार ॥४॥

[१४—माढ]

तुम त्यागोजी अनादि भूल, चतुर सुविचारोतो सही । टेर।
मोह भरम तम भूल, अनादि तोडो तो सही ।
एजी निज हित का रख ज्ञान, दगन सुधारो तो सही ॥१॥
जीवादिक सततत्व स्वरूप विचारोतो सही ।
निश्चय अरु व्यवहार सुरुचि उर धारो तो सही ॥२॥
विपय महा विष त्याग सुसंजम धारो तो सही ।
चहुंगति दुख का वीज, सुवंध विदारो तो सही ॥३॥
सब विभाव परत्यागि सुभाव विचारो तो सही ।
परमातम पद पाय, 'जिनेश्वर' तारो तो सही ॥४॥

[२१५—मांढ]

मुनिसुव्रत स्वामी, थाही का चरणारो, जिनंद म्हाके आसरो
हो राज ॥टेर॥
अव्रतरूप क्रिया भईजी मोह करम परभाव ।

ता ही को जो उदय भयो जी, होय असाताजी भाव,
काल सब यों गुजरो म्हा का राज ॥१॥
देव नरक पशु गतिन में संजम व्रत नाल खाय,
व्रत बिन मुक्ति लहै नहींजी, किह विधि मिटेजी फिराव,
मनुष भव अब मिल्यो म्हा का राज ॥२॥
अब अरदास जु दास की जी मन में तिष्ठो आज।
निज गुण अरनिज नाम कीजी संपति द्यो जिनराज,
'चैन' जिन सुख करो जिन राज ॥३॥

[२१६—मांढ]

श्री जिनजी भाग तो उदयजी म्हारो आयोजी ॥ टेर ॥
जिनवर थाने पूजस्यां, अष्ट द्रव्य भर थाल,
नेक नजर मोंपै कीजिये भव दधि उतरों पार ॥१॥
दुर्लभ नर भव पाय कैं, श्रावक कुल अवतार।
पूरब पुण्य उदय से दर्शन तुम जिनवर सर्दार ॥२॥
अर्ज करूं कर जोड कैं सुन त्रिभुवन पतिराय
निजानंद सुख दीजिये नमत जवाहर पाय ॥३॥

[२१७—मांढ]

सुमति कहै छै हो जियरा जी, म्हारे मन्दिर होता जाज्यो
राज। टेर।
म्हारे मन्दिर दया धरम रो चालो हिंसारो मुंह कालो ॥१॥

म्हारे मंदिर दसों धरम विधि खेती सोलहकारण सेती ॥२

म्हारे मंदिर सप्त विसन का त्यागी वह भी बड़भागी ॥३॥

म्हारे मंदिर तीन रतन का धारी, वह भी समता धारी॥४॥

म्हारे मंदिर सो सोही जिय आवे, 'किशना' स्योपुर पावे ।५।

[२१८—माढ]

अज्ञानी पाप धतूरा न बोय । टेर ।

फल चाखन की बार भरे दृग मर है मूरख होय ॥१॥

किंचित् विषयनिके सुख कारण, दुर्लभ देह न खोय ।

ऐसा अवसर फिर न मिलेगा, इस नींदंडिय न सोय ॥२॥

इस विरियां में धरम कल्प तरु, सींचत स्याने लोय ।

तू विष बोवन लागत तो सम, और अभागा कोय ॥३॥

जे जगमें दुख दायक बेरस, इसही के फल सोय ।

यों मन "भूधर" जानि कै भाई, फिर क्यों भोंदू होय ॥४॥

[२१९—मांढ]

जिनवाणी माता दर्शन की बलहारियाँ ॥ टेर ॥

जिनवर सुमरूँ सरस्वती जी गणधरजी नै ध्याऊँ ।

कुन्दकुन्द आचार्य जिन्हों के चरणां शीश नमाऊँ ॥१॥

जूस लाख चोरासी मांही भ्रमता महा दुख पायो ।

तारण विरद सुन्यो मैं माता शरण तिहारी आयो ॥२॥

जो जीव थारो शरणो लीनो अष्ट करम क्षय कीनो ।
जामन मरण मेट कर माता मोक्ष वास तैं दीनो ॥३॥
बार बार मैं विनऊँ माता महरजी मो पर कीजे ।
"पारसदास" दोऊ कर जोडे अष्ट करम क्षय कीजे ॥४॥

[२२०—सोरठ]

राज म्हानें दरश दिखाओ हो, साँवरियाजी हो । टेर ।
मो मन की सब वांच्छा पूरो, नेह की रीति जतावो ॥१॥
ये अँखियाँ दरशन की प्यासी, सींच सुधामृत पावो ।
'नवल' नेह लाग्यो नहिं छूटै, अब मत विलंब कराओ ॥२॥

[२२१—सोरठ]

वा घडी कौनसी हो देखूँ जिन नैना । टेर ।
जाके तन दुति ऊपर सजनी वारूँ कोटिक नैना ॥१॥
शान्ति छवि पदमासन राजत स्वर्ग मुक्ति सुख दैना ।
बिन देख्या 'जोधा' अति तडफत देखत अति सुख चैना ॥२

[२२२—सोरठ]

वेग मोरा पियासू मिलावोरी, मैं धरूँगी जोगनियारो वेप । टेर
व्याहे बिन तज गये गिरनारी, रंच कियो न दरेग[1] ॥१॥

१—दरेग-हिचकिचाहट ।

मैं तो एक पलक ना रहूंगी, तुम मत राखो न हेत ॥२॥

आनंद से हो जाऊं अर्जिका, येही हमारा नेग[२] ॥३॥

[२२३—सोरठ]

पिया पैं मैं भी जाऊंगी, हे सखि अब ले चल गिरनारी
दरशन कर सुख पाऊंगी । टेर ।

वे तो छोडगये निर्मोही, मैं तो नेह निभाऊंगी ॥१॥
अब मैं भी सब छोड परिग्रह, बारह भावन भाऊंगी ॥२॥
'आनन्द' से मनवचन काय करि, उनही के गुण गाऊंगी ॥३॥

[२२४—सोरठ]

ना बोले नेम पियारा मो से नाहि बोलै । टेर ।
जाय चढे गिरनार शिखरपर, किस विधि मौन न खोलै ॥१॥
पशुवन की उन करुणा कीनी, हमरी सुधि ना संभालै ॥२॥
जादुराय कहे कर जोरै, आवागमन धकेलै ॥३॥

३५ [२२५—सोरठ]

भगवंत भजन क्यों भूलारे, भगवंत भजन० । टेर ।

यह संसार रैन का सुपना, तन धन वारि-बबूला[१] ॥१॥

२—नेग-कर्त्तव्य । १—जल के बुद बुदे के समान ।

इस जीवन का कौन भरोसा, पावक में तृणपूलारे[2]।
काल कुदार[3] लिये सिर ठाडा, क्या समझै मन फूलारे ॥२॥
स्वारथ साधै पाच[4] पॉव तू, परमारथ को लूलारे।
कहु कैसे सुख पैं हैं प्राणी, काम करै दुखमूलारे ॥३॥
मोह पिशाच छल्यो मति मारे निजकर कंध वसूलारे।
भज श्रीराजमतीवर[5] "भूधर" दो दुरमति सिर धूलारे ॥४॥

[२२६—सोरठ] ✓

भलो चेत्यो वीर नर तू, भलो चेत्यो वीर। टेर।
समुझि प्रभु के शरण आयो, मिल्यो ज्ञान वजीर ॥१॥
जगत में यह जन्म हीरा, फिर कहां थो धीर।
भली वार विचार छांड्यो, कुमति कामिनि सीर[6] ॥२॥
धन्य धन्य दयाल श्री गुरु, सुमरि गुण गंभीर।
नरक परतैं राखि लीनों, बहुत कीनी भीर ॥३॥
भक्ति नौका लही भागनि, कितक भवदधिनीर।
ढील अब क्यों करत 'भूधर' पहुंच पैली तीर ॥४॥

२–अग्नि में घास का गट्ठा। ३–कुदाली काटने का एक औज़ार।
४–पांच इन्द्रिय। ५–नेमिनाथ। ६–साझा। ७–सहायता।

[२२७—सोरठ]

विपत्ति में धर धीर रे नर । टेर ।

संपदा ज्यों आपदा है, विनश जै है वीर ॥१॥

धूप छांहि घटै चढ़ै ज्यों त्योंही सुख दुख पीर ।

दोष "द्यानत" देय किसको तोरि कर्म जंजीर ॥२॥

[२२८—सोरठ]

कैसे होरी खेलूं होरी खेल न आवै । टेर ।

प्रथम पाप हिंसा जा मांही दूजे झूठ जु पावै ॥१॥

तीजे चोर कलाविद जामें नैंक न रस चुप जावै ॥२॥

चौथो परनारी सौं परचै शील वरत मल लावै ।

तृष्णा पाप पाचऊ जामैं, छिन छिन अधिक चढावै ॥३॥

सबविधि अशुभ रूपजे कारिज, करत ही चित चपलावै ।

अक्षर ब्रह्म खेल अति नीको, खेलत हिये हुलसावै ॥४॥

जगतराम सोही खेल खेलिये, जो जिन धर्म बढावै ॥५॥

[२२९—सोरठ]

ऐसे होरी खेलो हो चतुर खिलारि । टेर ।

धर्म थान जहँ सब सज्जन जन, मिलि बैठो इकठार ॥१॥

ज्ञान सलिल पूरण पिचकारी, बानी बरषा धार ।

झेलत प्रेम प्रीति सौ जेते, धोवत करम विकार ॥२॥

तत्त्वन की चरचा शुभ फोगो, चरचौ बारंबार।
राग गुलाल अबीर त्याग भरि रंग रंगो सुविचार ॥३॥
अनहद नाद अलापो जामें, सोहै सुर झंकार।
रीझ मगनता दान त्याग पर धर्मपाल सुनि धार ॥४॥

[२३० — सोरठ]

आइ इन्द्र नार कर कर शृंगार,
ठाडी समुद द्वार सेवा देवी माय।
चरणन में लाय मस्तक धर दीनो । टेर।
सुत भयोरी नेम लख धर्योरी प्रेम,
तनक्रांति हेम, गल मोर जेम, अतिउर प्रमोद धरकर करलीनो॥१
दृग दश हजार जिन मुख निहार,
कर नमस्कार हरि गोद धार,
पुल कंत गात्र गज चढ चल दीनो ॥२॥
गिर शीसधार कर नमन धार,
नाटक विथार वलि वलि जवार,
द्वारावती में भयो हरप नवीनो ॥३॥

[२३१ — सोरठ]

श्री शांतिनाथ त्रिभुवन आधार,
गुण गण अगार सोहे निर्विकार,
कल्याण कार जग अति उदार,

म्हे उनही को शिर नावाँ नावाँ नावाँ ॥टेर॥
सोहै शान्ति रूप देवाधिदेवं,
सुर नर विद्याधर करत सेव,
गुणगण अनंत महिमा अछेव,
जिन देव प्रभू के शरण आय
मन वचन काय गुणगावां गावां गावां ॥१॥
जिननाम मंत्र तैं अघ नशात,
वसु कर्म महा रिपु विलय जात,
सुखस्वर्ग मोक्ष करतल वसात,
दिन रात सुरासुर नमत गात,
म्हे उनहीं प्रभु को ध्यावां ध्यावां ध्यावां ॥२॥
कर जोड अरज तुमसे जिनेश,
देओ चरणकमल भक्ती हमेश,
चहै चोथमल्ल शिवपुर प्रवेश,
त्रिभुवन नरेश तोहे शीश नाय,
म्हे अजरअमर पद पावां पावां पावां ॥३॥

[२३२—सोरठ]

आली मोरा जियाकी न पिया सुनते गये । टेर ।
सुन पुकार पशुवन की मग में रस करुणा चित होगये ॥१॥

रथ हमरे मंदिर तें मोडा गढ गिरनारी चढगये ॥२॥
मात तात परियन न सुहावें, खान पान विप हु गये ॥३॥
अब हमकूं घरमें नहीं रहना चित दरशन विन वह गये ॥४॥
सो उन कीन्ही सो हम चीन्ही जोग धरम चित धर गये ।
पारशदास रजमति सी नारी उत्तम तप कर स्वर्ग गये ॥५॥

[२३३—सोरठ]

पगिया प्यारे नेम से दिल लाग्या चरणोनाल । टेर ।
विन देखे देख नही मानू जब लाग्या भगिया ॥१॥
जब ही मैंने नैनन देखू दुख दगिया भगिया ॥२॥
चैन विजय विन देख्या म्हारी, दिन रतिया जगिया ॥३॥

[२३४—सोरठ]

कर प्रथम पंच पद नमस्कार,
फिर तिनके गुण हिरदय में धार ।
मनवचन काय उर प्रीति लाय,
में तो श्रीजिन के गुण गाऊँ गाऊँ गाऊँ । टेर ।
अर्हंत सिद्ध अचार्य वन्द,
उवझाय साध नमि धरि आनंद ।
गुण छियालीस वसु छतिस महंत,
पणवीस अठाईस गुण धरंत ।

यह मंगल उत्तम शरण जान,
मैं तो इनही को अब ध्याऊँ ध्याऊँ ध्याऊँ ॥१॥

सब जिन प्रतिमाको कर प्रणाम,
सब तीर्थंकर नमूं विरहमान।
नमूं द्वादशांग जिनवाणी माय,
तीन घाट नोकौडि मुनि को नाय ॥
श्री मुक्ति शिला पर सिद्ध बिराजैं,
मैं तो जिनपद को शिर नाऊँ नाऊँ नाऊँ ॥२।

सम्मेदादिक सिद्ध क्षेत्र जान,
अरु रत्नत्रय व्रत नमि महान।
इन सब को बंदूं धरि के ध्यान,
सुरि सप्त ही सुधी कर तीन ग्राम ॥
करि मंगल गान आनन्द धार,
परमेष्ठी प्रथम मैं नाऊँ नाऊँ नाऊँ ॥३॥

अब वीन मुरिज बंसरि बजाय,
सा रे गम प ध ना सा दिक मिलाय।
नागरदानी तुम तन नन तान गाय,
ताथेई थेई तन संगीत नचाय ॥
यों प्रभु के गुण गावत हैं बलदेव,
निजानन्द सुख पाऊँ पाऊँ पाऊँ ॥४॥

[२३५—सोरठ]

हो विषयारा हो सुवादी थे जान कुमति संग राच रह्या। टेर।।
थारा हित की तू नहीं लखदी, लखदी एकहु न बात ।।
काल खडा रै कवादी ।।१।।
उत्तम नर भव पाय अनूपम केसर खरको खवादी।
आपा जान भजो जिन साहिब रस चख शान्ति नवादी ।।२।।

[२३६—सोरठ]

शीतल शरण विना, गति गति चिद्वर भ्रमत फिरयो मैं ।टेर।
सुख पूरित जिनराज आनन्द घन देखे नैनन नां ।।१।।
ज्यों मकडी उरझत निज तंतुसैं अपना अबुध तना।
त्यों मिथ्याती अघ कमाय के भटकत भव भ्रमणा ।।२।।
धन्य घडी धन भाग हमारो आन पड्यो चरणा।
साहिब मोहे शरणागत राखो चैन नमैं चरणा ।।३।।

[२३७—सोरठ]

आपा नहीं जांना तूने कैसा ज्ञान धारीरे। टेर।
देहाश्रित कर क्रिया आपको, मानत शिव मगचारीरे।१।
निज निवेद विन घोर परीषह, विफल कही जिन सारीरे ।।२।।
शिव चाहै तो द्विविध धर्म तैं, कर निज परणति न्यारीरे ।।३।
'दौलत' जिन जिन भाव पिछान्यो, तिन भव विपति
विदारीरे ।।४।।

[२३८—सोरठ]

वांकडी[1] करम गति जाय ना कही हो महा। टेर।
चिंतत और बनत कछु और ही होनहार सो होय सही॥१॥
सीता सती बडी पतिव्रता जानत सकल मही।
झूँठो दोष दियो रघुपति ने पावककुंड में डार दई॥२॥
सकल साज सजियो व्याहन को राजुलकी चित चाव ठई।
सुनी नेम गिरनार सिधारे विलख वदन मुरझाय रही॥३॥
क्षायिक सम्यक्दृष्टी श्रेणिक कोणिक निज सुत बंध हुई।
सुधि बुधि विसर गई नरपति की आपन ही अपघात लई॥४॥
छिन में रंक छिनक मे राजा अकथ कथा मोतैं जाय ना कही।
उलट पलट बाजी नटकीसी 'नवल' जगत में व्यापरही॥५॥

[२३९—सोरठ]

नवभव दुर्लभ नरभव दुर्लभ नरभव दुर्लभ सुज्ञानी जिया। टेर
निजपद तजकर, पर में रमकर, ज्ञान ध्यान सब भूल भुलाकर।
भोगविलासी हो, संवर सुख सब खो, करम के दुख कांटे मत बो
जिनमत रुचिकर, हिंसा मतकर, ज्ञान बढाकर शिव पदपा,
गुरु अनुभव दीनोरे॥ १ ॥

१—टेढी।

[२४०—सोरठ]

कुमति तैंने मोसैं वैर कियो । टेर ।
रत्नत्रय धन मेरे पतिको, सो तैं छीन लीयो ॥ १ ॥
सुमति कहैं सखि तेरो अवगुण जानत मेरो हियो ॥ २ ॥
जो जो जोधा तोकूं जीते, तिन को सफल जियो ॥ ३ ॥

[२४१—सोरठ]

ऐसी समझ के शिर धूल ऐसी० ॥ टेर ॥
धर्म उपजन हेत हिंसा, आचरैं अघमूल ॥ १ ॥
छके मत मद-पान पीके रहे मन में फूल ।
आम चाखन चहैं भोंदू, बोय पेड बंबूल ॥ २ ॥
देव रागी लालची गुरु सेय सुख हित भूल ।
धर्म नग की परख नाहीं भ्रम हिंडोले झूल ॥ ३ ॥
लाभ कारण रतन विणजे परख को नहीं सूल[१] ।
करत इहि विधि वणिज 'भूधर' विनशजै है मूल ॥४॥

३८ [२४२—सोरठ]

नहिं ऐसो जनम बारंबार ॥ टेर ॥
कठिन कठिन लह्यो मनुष भव, विषय भजि मतिहार ॥१॥

---

[१]—सूल-शऊर-तमीज ।

पाय चिंतामणि रतन शठ छिपत उदधि मंझार।
अध हाथ बटेर आई तजत ताहि गंवार ॥ २ ॥
कबहु नरक तिर्यंज कबहू कबहु स्वर्ग विहार।
जगत महि चिरकाल रुलियो, दुर्लभ नर अवतार ॥ ३ ॥
पाय अमृत पाँय धोवै, कहत सुगुरु पुकार।
तजो विषय कषाय "द्यानत", ज्यों लहो भव पार ॥ ४ ॥

[२४३—सोरठ]

मत भोगन राचोजी, भव भव में दुख देत घना। टेर।
इनके कारण गति गति मांही नाहक नाचोजी।
झूठे सुख के काज धरम में, पाडो खांचोजी ॥ १ ॥
पूरव पुन्य उदय सुख आया, राजो मांचो जी।
पाप उदय पीडा भोगन में, क्यों मन काचोजी ॥ २ ॥
सुख अनन्त के धारक तुमही, पर क्यों याचो जी।
'बुधजन' गुरु का वचन हिया में जानो सांचोजी ॥ ३ ॥

[२४४—सोरठ]

मेरो मन तिरपत क्यों नहिं होय, मेरो मन। टेर।
अनादि काल तैं विषयन राच्यो, अपना सरवस खोय ॥१
नेक चाख के फिर न बाहुडे, अधिक लंपटी होय।
झंपा पात लेत पतंग जो, जल बल भस्मी होय ॥ २ ॥

ज्यों ज्यों भोग मिले त्यों तृष्णा अधिकी अधिकी होय ।
जैसे घृत डारे तैं पावक, अधिक वलत है सोय ॥ ३ ॥
नरकन माहीं बहु सागर लौं, दुख भुगतेगो कोय ।
चाह भोग की त्यागो 'बुधजन' अविचल शिव सुख होय ॥४॥

[२४५—सोरठ]

जियारे या देह बिरानी मति अपनावे । टेर ।
सप्त धातु मल मूत्र अवै है देखत महा घिन आवै ॥ १ ॥
काल अनंत गयो याके संग, दुरगति में दुख पावै ।
आपा जान भजो जिन साहिब, ज्यों शिव सुख दरशावै ॥२

[२४६—सोरठ]

मनमेरे राग भाव निवार । टेर ।
राग चिक्कण तैं लगत हैं, करमधूलि अपार ॥ १ ॥
राग आश्रव मूल है, वैराग्य संवर धार ।
जिन न जान्यो भेद यह वह गयो नरभव हार ॥ २ ॥
दान पूजा शील जपतप, भाव विविध प्रकार ।
रागविन शिव सुख करत हैं, रागतैं संसार ॥ ३ ॥
वीतराग कहा कियो यह, बात प्रगट निहार ।
सोई कर सुख हेत 'द्यानत,' शुद्ध अनुभव सार । ४ ॥

[२४७—सोरठ]

जिया तैं ना मानी, तूनै केई बार समझायो पर तैं न मानी । टेर
धर्म ध्यान में चित न लगायो, विषयन सों रतिसानी ॥१॥
कुगुरु कुदेव सेव तजि भाई, व्रत तप कर सुख दानी ॥२॥
शिव सुख कारण गुरु यह भाषी, हित कर ध्या जिनवाणी ॥३॥

[२४८—सोरठ]

गुरां म्हानै जातरूप तुमरो यह रूढो लागै । टेर ।
रूढो लागै चोखो लागै, अशुभ करम सब भागै ॥१॥
पर परणति तज निज परणति लख आतमहित प्रति छाजैं ॥२
कब गृह तजकर, पाऊँ "पारश" शिवपुर को अनुरागै ॥३।

[२४९—सोरठ]

प्यारा म्हाने लागो छो जी नेम कुंवार । टेर ।
सूरत थांकी सोहनी जी देखत नैन संवार ।
और बडाई थांकी कॉई करूं जी पुण्य बढै अघ जाय ॥१॥
भोग रोग सब जान के दिये सर्व छिटकाय ।
बालपनै दीक्षा धरी सब जग अथिर लखाय ॥२॥
निज आतम रस पीयकै भये त्रिभुवन के राय ।
तुम पद पंकजको सदाजी "नवल" नमै शिरनाय ॥३॥

[२५० — सोरठ]

प्रभु तुम बिन कौन सुनै पीर मेरी । टेर ।
मीन को जोर जल दुष्ट को जोर छल,
भक्त को जोर तुम चरण नेरी ॥ १ ॥
करम वैरी चहुँ ओर मोहे घेर के,
कामक्रूर आय मोहे देत है घमेरी ।
जगतपति जान तोहे कहतु हौं राख मोहे,
देख हो देख जिन दास ओरी ॥२॥

[२५१ — सोरठ]

म्हारे मन भाया छोजी नेम जिनन्द । टेर ।
अद्भुत रूप अनुपम राजत, कोटि मदन किये मन्द ॥१॥
राग दोष तें रहित हो स्वामी, तारे भविजन वृन्द ।
जग जीवन प्रभु तुम गुण गावै, पावै शिव सुख कन्द ॥२॥

[२५२ — सोरठ]

म्हेतो थाकी लैरा, म्हेतो थाकी लैरा राज म्हे तो थाकी लैरा,
हेजी चालस्याजी हो शिव रमणीरा वर । टेर ।
दया क्षमा दोउ साथ ही लेस्यां, शील संयम व्रत पालस्या ।१
पंच महा व्रत दुद्धर धरस्यां, अष्ट कर्म रिपु जारस्या ।
चैन विजय राजुल इम विनवै, म्हेतो थाको संगन छांडस्या ।२

[२५३—सोरठ]

मुक्ति की आशा लगी, निज ब्रह्म को जाना नहीं । टेर ।
घर छोड के योगी हुवा, अनुभाव को ठाना नहीं ।
जिन धर्म को अपना सगा, अज्ञान तैं माना नहीं ॥१॥
जाहिर मैं तू त्यागी हुवा, बातिन तेरा छाना नहीं ।
ऐ यार अपनी भूल से, विष वेल फल खाना नहीं ॥२॥
संसार को त्यागे विना, निर्वाण पद पाना नहीं ।
संतोष विन अब 'नैनसुख' तुमको मजा आना नहीं ॥३॥

२५४—सोरठ]

थारा तो भला की जिया याही जान । टेर ।
कर श्रद्धान जिनेसुर वाणी, समकित हिरदय आन ॥१॥
तज कषाय त्याग परिग्रह, कर्म रिपुन को भान ।
जगत राम सुभ गति पावन को, जग में येही पिछान ॥२॥

[२५५—सोरठ]

भजन विन योंही जनम गमायो । टेर ।
पानी पहली पाल न बांधी, फिर पीछै पछतायो ॥१॥
रामा-मोह भये दिग खोवत, आशा पाश बंधायो ।
जपतप संजमदान नही दीनो मानुप जनम हरायो ॥२॥
देह शिस जब कॉपन लागी, दसन चलाचल थायो ।
लागी आगि बुझावन कारन चाहत कूप खदायो ॥३॥

काल अनादि गुमायो भ्रमतां, कबहुं न थिर चित लायो ।
हरी विषय सुख भरम भुलानो, मृग तृष्णा वशि धायो ॥४॥

[२५६—सोरठ]

विदा होने के बाजे बजने लगे । टेर ।
तार खबर हिचकी जब आई, कल पुर्जे सब हिलने लगे ।१।
चार जने मिल मतो उपायो, काठ की गुडया सजने लगे ।२।
घरके बाहर खडे जो बराती चलोजी चलो सब कहने लगे ।३।
जा जंगल में होली लगाई अपने अपने ठिकाने लगे ।४।
परमेश्वर का भजन करो नर, इस दुनिया में कोई न सगे ।५।

[२५७—सोरठ]

तन मन सारे जी साँवरिया तुम पर वारना जी । टेर ।
बालापन में कमठ निवारो, अग्नि में जलतो नाग उबारो ।
वैरी करमंन तुमने मारो, तप बल धारनाजी ॥ १॥
जीवाजीव द्रव्य बतलाये, सब जीवन के भरम मिटाये ।
शिव मारग दरशाये दुख परिहारना जी ॥२॥
स्याद्वाद सत भंग सुनाये, नय प्रमाण निक्षेप बताये ।
झूठे मत किये खंडन सत को धारनाजी ॥३॥
'न्यामत' जिन पारश गुणगाये, पुनि पुनि चर्णन शीश नमाये,
वीतराग सर्वज्ञ तूही हितकारनाजी ॥४॥

[२५८—सोरठ]

भज जिन चतुर्विंशति नाम । १ ।
जे भजे ते उतरि भवदधि, लयो शिव सुख धाम ॥ १ ॥
ऋपभ अजित संभव जिन स्वामी अभिनन्दन अभिराम ।
सुमति पद्म सुपार्श्व चंदा पुष्पदंत प्रणाम ॥ २ ॥
शीतल श्रेयाँश वासुपूज्य विमल अनंत सुनाम ।
धर्म शान्ति जु कुन्थ अरहा मल्लि राखै माम ॥ ३ ॥
मुनिसुव्रत नमि नेमिनाथा, पार्स सन्मति स्वाम ।
राखि निश्चय जपो 'बुधजन' पुरै सब की काम ॥ ४ ॥

[२५९—सोरठ]

सम्मेद शिखर चलिरे जियरा, बीस जिनेश मुकति पुर-
पहोंचे—जहां से मोखि नगर नियरा । टेर ।
नरक पशु दो गति जिन मेटी, भेटी भूमि हरख हियरा ॥१॥
चार दिशा में पूरब उत्तम, जहां सु आवे धन पियरा ॥२॥
वृंदावन धन जिस वन आवे, सो पावै सुख अति सियरा ॥३॥

[२६०—सोरठ]

सुनरे गँवार, नितके लबार, तेरे घट मंझार परगट दिदार,
मत फिरै ख्वार उरझी को सुरझाले । टेर ।
तजि मन विकार, अनुभव कूं धारे ।

कर बार बार निज पर विचार,
तूहै समयसार अपने ही गुण गाले ॥१॥
तूही भव स्वरूप, तुही शिव सरुप, होके भ्रम रूप पड़ा नर्ककूप
विषयन के तूप सेती मन को हटाले ॥ २ ॥
कहै दास नैन आनंद दैन, सुन जैन बैन जासु होत चैन ।
तजि मोह सेन, नर भो फल पाले ॥ ३ ॥

[२६१—सोरठ]

जिनवर देव सुहावैं, परम शान्तिरस भीनी मूरत,
निरखि नैन ललचावैं । टेर ।
सुरतिय नृत्य करत नित जावे, नेक न चित चपलावैं ।
आप राग तें रहित विरागी पर कूं राग बढावैं ॥ १ ॥
अक्षर रहित खिरै धुनि जाकी सब संदेह मिटावै ।
महिमा वचन अगोचर कहाँ लौं, 'जगत राम' जस गावैं ॥२॥

[२६२—सोरठ]

गलतानमता कब आवेगा । टेर ।
राग दोष परणति मिट जैहै, तब जियरा सुख पावैगा ।१
मैं ही ज्ञाता ज्ञान ज्ञेय मैं तीनों भेद मिटावेगा ।
करता किरिया करम भेद मिटि एक दरब लौं लावेगा ।२।
निहचै अमल मलिन व्योहारी, दोनों पक्ष नशावेगा ।
भेद गुणी गुण को नहिं ह्वै है गुरु शिप कौन कहावेगा ।३।

'द्यानत' साधक साधि एक करि, दुविधा दूर बहावेगा ।
वचन भेद कहवत सब मिटई ज्यों का त्यों ठहरावेगा ।४।

[२६३—सोरठ]

जिन नाम सुमरि मन बावरे, कहा इत उत भटके ।
विषय प्रगट विष वेल है इन मैं मत भटकै ॥ टेर ॥
दुरलभ नरभव पाय के नगसो मत पटकै ।
फिर पीछै पछतायगा, अवसर जब सटकै ॥ १ ॥
एक घडी है सफल जो प्रभु-गुण रस गटकै ।
कोटि वरष जीवो वृथा जो थोथा फटकै ॥ २ ॥
'द्यानत' उत्तम भजन है कीजै मन रटकै ।
भव भवके पातक सबै जैहैं तो कटकै ॥ ३ ॥

[२६४—राग उभाज जोगी रासा]

मत भूलेरे रामा उत्तम नर भव पायके मत भूलेरे रामा । टेर
कीट पशू का तन जब पाया तब तू रह्या निकामा ।
अब नर देही पाय सयाने, क्यों न भजै प्रभु नामा ॥१॥
सुरपति जाकी चाह करत उर कब पाऊँ नर जामा ।
ऐसो रतन पाय के भाई क्यों खोवत बिन कामा ॥२॥
धन जोवन तन सुंदर पाया, मगन भया लख भामा ।
काल अचानक झट करवायेगा, परै रहेंगे ठामा ॥३॥

अपने स्वामी के पद पंकज, धरो हिये विसरामा।
मेटि कपट भ्रम अपना 'बुधजन' ज्यों पावो शिवधामा ॥४॥

[२६५—रागउभाज जोगीरासा]

दुनिया मतलब की गरजी अब मोहे जान पडी। टेर।
हरे वृक्ष पे पंछी बैठा रटता नाम हरी।
प्रात भय पंछी उड चालै जग की रीति खरी ॥ १ ॥
जब लग बैल वहे बनिया का तब लग चाह घनी।
थके बैल को कोई न पूछै फिरता गली गली ॥ २ ॥
सत्त बांध सती उठ चाली मोह के फंद पडी।
'द्यानत' कहे प्रभु नही सुमरयो मुर्दा संग जली ॥ ३ ॥

[२६६—राग उभाज जोगीरासा]

सु कृत करलेरे मूंजी, थारी पडी रहेली पूंजी। टेर।
हाल तो म्हारी तरुण अवस्था विषय भोग सुख लेहूंजी।
वृद्धपना में धर्म करूंलो हाल घना दिन जीऊंजी ॥१॥
धर्म करूं तो म्हारी माया छीजै, पाछे कांई करूंजी।
बेटा बेटी कुटुंब कबीलो, कैसे पेट भरूंजी ॥२॥
शिर को पसीनो पगतले आयो, जब पैदाइश करीजी।
थे तो सारा सांचा बोलो मैं तो ना खरचूंजी ॥३॥
कहता ज्ञानी सुन मेरे प्राणी, ऐसा करता क्यों जी।
काल अचानक अचक खायगो, छोडचलेगो पूंजी ॥४॥

[२६७—राग उभाज जोगीरासा]

मानोजी चेतनजी मोरी बात, छोडो छोडो कुमति केरो साथ ।टेर
कुमती तोय दिढावत कूडी, यातैं जग भरमात ॥१॥
या संग दुःख सहे भव वन में, ता संग फिर क्यूं जात ॥२॥
चेतन ज्ञान समझ अपनावो, यातैं शिवपुर जात ॥३॥

[२६८—राग उभाज जोगीरासा]

यो कांई बावोरे बावो थारो मिट्यो न आवो जावो । टेर ।
एक गोद में एक बगल में, एकजु लैरा लाग्यो ।
मोह कुटी में तु जल मूवो नीसर क्यों ना भागो ॥१॥
छापा तिलक लगाय जगत में दुनिया रिझावन लागो ।
धर्म ध्यान को मर्म न जान्यो, यो कांई मूंड मुंडावो ॥२॥
परनारी सू नेह लगावें, धन लेबाने आगो ।
फिर पीछे मूरख पछतावै, जम कूटै थारो झापो ॥३॥
ब्याज बट्टो तू नीका लगावैं, शुभ करणी ने त्यागो ।
देवी दास कहै या विधि से, यो नरकन को जावो ॥४॥

[२६९—राग उभाज जोगीरासा]

जातडली म्हे जानी छैजी राज होजी हो जियाजी थाकी
आज । टेर ।
नय प्रमाण से निश्चय करके प्रकृति पिछानी छैजी राज ॥१॥
साम्य भाव से मोह विजय कर निज पद माणीछैजी राज ॥२॥

[२७०—राग उमाज जोगीरासा]

प्रभु नें सुमरोजी गेहलां थाने सतगुरु देई हेला ॥टेर॥
मानुष जनम पदारथ पायो कर संतन सूं मेला।
ठोर ठोर से सूरत समेटो, तब हो मन का फैला ॥१॥
कुटुम्ब कबीलो अपनो कीनो, येतो सब है पैला।
जम का दूत पकड़ ले जासी माथे मृदगर देला ॥२॥
धन जोबन में छटक्यो डोले, मन में बन रयो छैला।
सुख संपति में सब हो सीरी, दुख में दूर रहेला ॥३॥
धन जोबन का गर्ब न कीजे, ये दोऊ थिर न रहेला।
कह जिनदास सुनो भवि जीवो आगम पंथ का गैला ॥४॥

[२७१—राग उमाज जोगीरासा]

जब निज ज्ञान कला घट आवें-तब भोग जगत ना सुहावें।
मैं तन-मय अरु तन है मेरा, फिर यह बात न भावें ॥१॥
खाज खुजातमधुरसी लागत फिरत न अति दुखपावें।
त्यों यह विषय जान विषवत तज काल अनंत भ्रमावें ॥२॥
सुपनेवत सब जग की माया, तामें नाहिं लुभावें।
चैन छांड मन की कुटिलाई ते शीघ्रही शिव जावें ॥३॥

[२७२—राग उमाज जोगीरासा]

प्रभुजी में थाने पूजन आयो, म्हारी अरज सुनो दीनानाथ,
जगत पति मैं थानें। टेर।
जल चंदन अक्षत शुभ लेकर तामें पुष्प मिलायो ॥१॥

चरु वरु दीप धूप फल लेकर ताको अरघ बनायो ॥२॥
अर्घ बनाय गाय गुणमाला, चंदा शर्ण तब आयो ॥३॥

[२७३—राग उभाज जोगीरासा]

चिदानंद भूलि रह्यो सुधिसारी, तू तो करत फिरै म्हारी २।
मोह उदय तैं सबही तिहारी जनक मात सुत नारी।
मोह दूरि कर नेत्र उघारो, इन में कोई न तिहारी ॥१॥
भाग समान जीवना जोवन परवत नाला कारी।
धनपति रंक समान सबनको जात न लागे वारी ॥२॥
जुवां मांस मधु अरु वेश्या, हिंसा चौरी जारी।
सप्त व्यसन में रत्त होय के निजकुल कीन्ही कारी ॥३॥
पुन्य पाप दोउ लार चलत हैं यह निश्चय उरधारी।
धर्म द्रव्य तोय स्वर्ग पठावै पाप नरक में डारी ॥४॥
आतम रूप निहार भजो जिन धर्म मुक्ति सुखकारी।
बुधमहाचंद जानि यह निश्चय, जिनवर नाम सुम्हारी ॥५॥

[२७४—राग उभाज जोगीरासा]

इक जोगी असन बनावै, तम भखत असन अघ नसन
होत। टेर।

ज्ञान सुधारस जल भरला वैं, चून्हा शील बनावे।
कर्म काष्ट को चुग चुग वालै, ध्यान अग्नि प्रजलावैं ॥१॥

अनुभव भाजन, निजगुण तंदुल समता क्षीर मिलावै ।
सोहं मिष्ट निशांकित भोजन, समकित छौंक लगावै ॥२॥
स्याद्वाद सत भंग मसाले गिणती पार न पावै ।
निश्चय नय का चमचा फेरे, विरद भावना भावे ॥३॥
आप पकावैं आपहि खावै खावत नाहि अघावैं ।
तदपि मुक्ति पद पंकज सेवै 'नयनानंद' शिरनावै ॥४॥

[७५—राग कमाज जोगी रासा]

मत कीज्यो जी यारी, घिनगेह देह जड जान के। टेर ।
मात तात रज वीरजसौं यह, उपजी मल फुलवारी ।
अस्थिमाल पलन सा-जालकी, लाल लाल जलक्यारी ॥१॥
कस्मकुरंग थली पुतली यह, मूत्रपुरीप भंडारी ।
चर्मभंडी रिपुकर्म घड़ी धन, धर्म चुरावनहारी ॥२॥
जे जे पावन वस्तु जगत में तें इन सर्व बिगारी ।
स्वेद मेद कफ क्लेदमयी बहु मदगदव्याल पिटारी ॥३॥
जा संयोग रोगभव तौलौं, जा वियोग शिवकारी ।
बुध तासौं न ममत्व करैं यह मूढ़मतिनको प्यारी ॥४॥
जिन पोपी ते भये सदोपी, तिन पाये दुख भारी ।
जिन तप ठान ध्यानकर शोपी, तिन परनी शिवनारी ॥५॥
सुरधनु शरदजलद जलबुदवुद, त्यौं झट विनशनहारी ।
यातैं भिन्न जान निज चेतन, 'दौल' होहु शमधारी ॥६॥

[२७६—राग उभाज जोगीरासा]

निज घर नाहिं पिछान्यारे, मोह उदय होने तैं मिथ्या
भर्म भुलानारे । टेर ।

तू तो नित्य अनादि अरूपी सिद्ध समानारे ।
पुद्गल जड़में राचि भयो तू मूर्ख प्रधानारे ॥ १ ॥
तन धन जोवन पुत्र वधू आदिक निज मानारे ।
यह सब जाय रहन के नांही समझ सयानारे ॥ २ ॥
बालपने लड़कन संग जोबन त्रिया जवानारे ।
वृद्ध भयो सब सुधि गई अब धर्म भुलानारे ॥ ३ ॥
गई गई अब राख रही तू समझ सियानारे ।
बुद्ध महाचन्द विचारिके निज पद नित्य रमानारे ॥ ४ ॥

३७ [२७७— राग उभाज जोगीरासा]

सुधि लीज्यो जी म्हारी, मोहि भवदुखदुखिया जानके । टेर ।
तीनलोकस्वामी नामी तुम, त्रिभुवन के दुखहारी ।
गनधरादि तुम शरन लई लख, लीनी शरन तिहारी ॥ १ ॥
जो विधि अरी करी हमरी गति, सो तुम जानत सारी ।
याद किये दुख होत हिये ज्यौं, लागत कोटि कटारी ॥२॥
लब्धि अपर्यापत निगोद में, एक उसास मंझारी ।
जनम मरण नवदुगुन बिथाकी, कथा न जात उचारी ॥३॥
भूजल, ज्वलन, पवन प्रतेक तरु, विकलत्रय, तनधारी ।
पंचेंद्री पशु नारक नर सुर, विपति भरी भयकारी ॥ ४ ॥

मोह महारिपु नेक न सुखमय, हो न दई सुधि थारी।
सो दुठ मंद भयो भागनतैं, पाये तुम जगतारी ॥ ५ ॥
यदपि विरागि तदपि तुम शिव मग, सहज प्रगट करतारी।
ज्यौं रवि किरन सहज मग दर्शक यह निमित्त अनिवारी।६
नाग छाग जग वाघ भील दुठ, तारे अधम उधारी।
शीश नमाय पुकारत अबके 'दौल' अधम की बारी ॥ ७ ॥

[२७८—राग जैजैवंती]

मुनि वन आयेजी वना । टेर ।
शिव बनरी ब्याहन को उमगे मोहित भविकजना ॥१॥
रतन त्रय शिर सेहरा बांधे सजि संवर वसना।
संग बराती द्वादश भावन, अरुदश धर्मपना ॥ २ ॥
सुमति नारि मिलि मंगल गावत अजपागीत घना।
राग दोष की आतिश बाजी छूटत अगनि कना ॥३॥
दुविधि कर्म का दान बटत हैं तोषित लोकमना।
शुक्ल ध्यान को अगनि जलाकर होमे कर्म घना ॥४॥
शुभ वेला शिव नारि वरी मुनि अद्भुत हरष बना।
निज मंदिर में निश्चल राजत 'बुधजन' त्याग घना ॥५॥

[२७६—राग जैजैवती]

जगत में सम्यक् उत्तम भाई ॥ टेर ॥
सम्यक् सहित प्रधान नरक में, धिक शठ सुरगति पाई ॥१॥

श्रावक व्रत मुनिव्रत जे पालैं, ममता बुद्धि अधिकाई।
तिनतैं अधिक 'असंजम चारी, जिन आतम लव लाई ॥२॥
पंच परावर्तन तैं कीनैं, बहुत बार दुखदाई।
लख चौरासि स्वांग धरि नाच्यौ, ज्ञानकला नहिं आई ॥३॥
सम्यक बिन तिहुं जग दुखदाई, जहं भावैं तहं जाई।
द्यानत सम्यक आतम अनुभव, सद्गुरु सीख बताई ॥४॥

[२८०—राग ख्याल तमाशा व गजल]

मन मूरख पन्थी, उस मारग मति जायरे ॥ टेर ॥
कामिनी तन कांतार[1] जहां है, कुच परवत दुखदायरे ॥१॥
काम किरात[2] बसै तिह थानक, सरवस लेत छिनाय रे।
खाय खता[3] कीचकसे बैठे, अरु रावण से राय रे ॥२॥
और अनेक लुटे इस पैंडे[4], बरनैं कौन बढ़ाय रे।
बरजत हों बरज्यौ रह भाई, जानि दगा मति खाय रे ॥३॥
सुगुरु दयाल दया करि 'भूधर' सीख कहत समझाय रे।
आगैं जो भावै करि सोई, दीनी बात जताय रे ॥४॥

[२८१—राग ख्याल तमाशा व गजल]

मन हंस! हमारी लै शिक्षा हितकारी ॥ टेर ॥
श्रीभगवानचरन पिंजरे बसि, तजि विषयनिकी यारी ॥१॥

१—वन। २—भील। ३—धोखा। ४—रास्ते।

कुमति कागलीसों मति राचो, ना वह जात तिहारी।
कीजै प्रीत सुमति हंसीसों, बुध हंसनकी प्यारी ॥२॥
काहेको सेवत भव झीलर[१], दुखजल पूरित खारी।
निज बल पंख पसारि उड़ो किन, हो शिव सरवरचारी[२] ॥३॥
गुरुके वचन विमल मोती चुन, क्यों निज बान विसारी।
ह्वै है सुखी सीख सुधि राखैं, 'भूधर' भूलैं ख्वारी ॥४॥

[२८२—राग ख्याल तमाशा व गजल]

चरखा चलता नाहीं (रे) चरखा हुआ पुराना (वे)॥ टेर ॥
पग खूंटे दो हालन लागे, उर मदरा खखराना।
छीदी हुई पांखड़ी पांखू, फिरै नहीं मनमाना ॥१॥
रसना तकलीने बल खाया, सो अब कैसें खूटै।
शबद सूत सूधा नहिं निकसै, घड़ी घड़ी पल टूटै ॥२॥
आयु मालका नहीं भरोसा, अंग चलाचल सारे।
रोज इलाज मरम्मत चाहै, वैद बाढ़ही हारे ॥३॥
नया चरखला रंगा चंगा, सबका चित्त चुरावै।
पलटा वरन गये गुन अगले, अब देखैं नहिं भावै ॥४॥
मोटा महीं कातकर भाई!, कर अपना सुरझेरा।
अंत आग में इंधन होगा, 'भूधर' समझ सवेरा ॥५॥

१–झील। २–सरवर=तालाब में विचरण करने वाला।

[२८३—राग ख्याल तमाशा व गजल]

अपना कोई नहीं है रे जगत का झूठा है व्यवहार ॥टेर॥
माता कहै यह पुत्र हमारा, पिता कहै सुत मेरा ।
भाई कहै यह भुजा हमारी, त्रिया कहै पति मेरा ॥१॥
माता न्हाती घर के द्वारे, त्रिया न्हाती खूणै ।
भाई भतीजा सुरत का सीरी हंस अकेला धूणै ॥२॥
ऊंचे महल सुभट दरवाजे, भांत २ की टाटी ।
आतम राम अकेलो जासी पड़ी रहैगी माटी ॥३॥
घर में तिरया रोवण लागी, जोड़ी विछड़न लागी ।
'चन्द्रकृष्ण' कहै परभव जाता संग चलै नहिं तागी ॥४॥

[२८४—राग ख्याल तमाशा व गजल]

नेम पिया गिरनार गयो आली तेरो ॥ टेर ॥
पशुवन की उन टेर सुनत ही, विषयन से बिलखाय गयो ।१।
राजमती सुन उठ कर चौंकी आतम राम लखाय गयो ॥२॥
वन में जाय लौंच प्रभु कीनी, सिद्धन को शिर नवाय गयो ॥३॥

[२८५—राग ख्याल तमाशा व गजल]

सुनो तुम नेमिनाथ मोरी बात, मेटो भव दधि नवका पात ।टेर
नव भव से मैं संग फिरत हूँ-अब क्यों तजते साथ ।
पशुवन की तुम दया विचारी, मेरी चित ना लात ॥१॥

नारायण पद पाय कृष्ण ने, राज सम्पदा काज ।
करी तैयारी ब्याह की जी बांधे मृग गण साज ॥२॥
छप्पन कोड यादव संग लेकर आये तोरण पास ।
पशुवन रुदन कराय है जी मुझ को करी निराश ॥३॥
धिक संसार राज अरु सम्पद जिस कारण यह भाव ।
द्रव्य विनश्वर सर्व जगत में क्या रंक रु क्या राव ॥४॥
सर्व अथिर तुम जान के चढगये गढ गिरनार ।
मुझ को इस संसार में कुछ नहीं प्रीत लगार ॥५॥
पूर्वोपार्जित फल लहा, किसको देऊं दोष ।
त्याग "चिमन" में जोग धरूंगी भरूँ पुण्य का कोष ॥६॥

[२८६—राग ख्याल तमाशा व गजल]

आनन्द मंगल आज भये, हम श्री जिन दरशन पाये हैं ।
धन्य धन्य ये श्री जिन स्वामी नाशादृष्टि लगाये हैं ।
प्रभु जीवाजीव परयन जानी है, शुक्ल ध्यानी है-केवल ज्ञानी है ।
अरहन्त चरण शिवदानी है-प्रभु भजन 'चिमन' श्रद्धानी है ।

[२८७—राग ख्याल तमाशा व गजल

तैंने क्या किया नादान तैं तो अमृत तज विष पीया । टेर ।
लख चोरासी यौनि मांहि तैं श्रावक कुल में आया ।
अब तज तीन लोक के साहिब नव ग्रह पूजन धाया । १॥

वीतराग के दर्शन ही तें उदासीनता आवै ।
तूतो जिनके सन्मुख ठाडी सुत को ख्याल खिलावै ॥२॥
स्वर्ग संपदा सहज ही पावै निश्चै मुक्ति मिलावै ।
ऐसे जिनवर—पूजन सेती जगत कामना चाहै ॥३॥
'बुधजन' मिल के सलाह बतावै तू वाये खिन जावै ।
यथा योग्य की अनथा माने जनम जनम दुःख पावे ॥४॥

[२८८—राग ख्याल तमाशा व गजल]

जिन राज रहे अब लाज शरन यह बाल[१] सहैली आई । टेर ।
जग जीवन के प्रतिपाल सुरासुर पूजें चरण तुम्हारी ।
है सुयश जगत विख्यात, पतित पावन हो भक्ति तिहारी ॥
तेरे दर्शन से सब दुख टरते हैं, जिन आतम सरूप निरखते हैं ।
तेरी शान्ति छवि मन भाई ॥ १ ॥
निज आतम बुद्धि विसार रहे हम पर परणति में राचैं ।
तिसही में सब सुख मान, ग्यान विन चतुर गती में नाचैं ॥
कर्मों के बस संसारी हैं, भवभव में सहते ख्वारी हैं ।
अब इन से करो रिहाई ॥ २ ॥
अब कृपा तुम्हारी होय, भाव उन्नति हो नाथ हमारे ।
हम रहें भक्ति में लीन, भजन पूजन में तत्पर सारे ॥

१—शुक्रवार की सहैली का दूसरा नाम बाल सहेली है जिसकी कि ओर से यह पुस्तक प्रकाशित की जा रही है ।

जिन धर्म प्रभाव बढे जगमें, सहैली वश प्रेम बढे सब में।
हिल मिल सब करैं सहाई ॥३॥

सम्बत् उनसठ[२] के मांहि, हुई स्थापित सहैली सुखदाई।
हर शुक्रवार को करें, भजन पूजन प्रति मंदिर मांही ॥
मन्दिर चैत्यालय मन धारें, की अनेक बार पूजन सारे।
यह बाल सहैली शिर नाई। जिनरोज रहे०॥४॥

[२८६ - राग-ख्याल तमाशा व गजल]

हाँ जिया सुन सीख सयानी, वृथा होरहा क्यों अभिमानी,
धम जोबन के खेल में निज रूप भुलानी रे ॥ टेर ॥
तन का तनक भरोसा नांही, वृथा धरे धन धरती मांही।
पल में माल पराया होगा हाथ न आनीरे ॥ १ ॥
जिस कुटुम्ब को अपना जानों, वह नहि तेरा तू न पिछान्यो।
पल में उछल चलेगा यमपुर वन मर्त मानीरे ॥२॥
शरीर छिन में होय विरानो, सुख संपति को थिर मत जानो।
ज्यों पानी में उठे बुदबुदा तुरत विलानी रे ॥ ३ ॥
विषय भोग संयोग रोग वत्, चंचल लक्ष्मी जगको मोहत।
जैसे बिजली चमक दमक कर तुरत विलानी रे ॥४॥

२-इस सहैली (सघ) की स्थापना वि० सवत् १६५६ हुई थी तब से निरतर चालू है।

बालपने हंस खेल गुमाया, तरुण हुवा तरुणी बिलमाया।
वृद्ध हुवा कफ बात रोग कुबुधि बिलसानी रे ॥५॥
घटे आयु छिन छिन में प्रानी, कैसे भूल रहा अभिमानी।
घडी घडी गुरु देव पुकारे तोहि न जानी रे ॥६॥
गई गई जाने दे ताकों, रही राखले मेट बिथा को।
देव गुरु जिन शास्त्र भक्ति करि यह अघहानी रे ॥७॥
क्रोध मान माया को टारो, पक्ष मास संगति चित धारो।
चोथमल्ल जिन चरण शरण गहि चित्त लगानी रे ॥८॥

[२६०—राग-ख्याल तमासा व गजल]

देख्या बीच जहान के स्वपने का अजब तमाशा वे ॥टेर॥
एकौंके घर मंगल गावैं, पूगी[1] मनकी आसा।
एक वियोग भरे बहु रोवैं, भरि भरि नैन निरासा ॥१॥
तेज तुरंगनिपै चढ़ि चलते पहिरैं मलमल खासा।
रंक भये नागे अति डोलैं, ना कोइ देय दिलासा[2] ॥२॥
तरकैं[3] राज-तखतपर[4] बैठा, था खुशवक्त खुलासा।
ठीक दुपहरी मुद्दत आई, जंगल कीना वासा ॥३॥
तन धन अथिर निहायत[5] जगमें, पानी माहिं पतासा।
'भूधर' इनका गरब करैं जे फिट[6] तिनका जनमासा[7] ॥४॥

---

१ पूरी हुई। २ धीरज। ३ सवेरे। ४ सिंहासन। ५ सर्वथा। ६ धिक्। ७ मनुष्यजन्म।

[२६१—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

प्रभु गुन गाय रे, यह औसर फेर न पाय रे ॥ टेर ॥
मानुष भव जोग दुहेला, दुर्लभ सतसंगति मेला ।
सब बात भली बन आई, अरहन्त भजो रे भाई ॥१॥

पहलैं चित-चीर सँभारो कामादिक मैल उतारो ।
फिर प्रीति फिटकरी दीजे, तब सुमरन रंग रँगीजे ॥२॥
धन जोर भरा जो कूवा, परवार बढ़ैं क्या हूवा ।
हाथी चढि क्या कर लीया, प्रभु नाम विना धिक जीया ॥३॥
यह शिक्षा है व्यवहारी, निहचैकी साधनहारी ।
'भूधर' पैंडी पग धरिये, तब चढ़नेको चित करिये ॥४॥

[२६२—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

आज चमका है मेरा तारा हो जिन राज सांई,
तस्वीर तेरी देखो न कभी देखने में आई ॥ टेर ॥
हाथ प्रलंबित करके कृतकृत्य गुण धरिके ।
नाशका के अग्र भाग दोउ चश्म को लगाई सांई ॥१॥
श्रवण सुना न कछु चाहे कानन ठाडे ।
ऐसी ध्यान मुद्रा लखि दृग हर्ष ना उर में समाई ॥२॥
देखना न बाकी कछु विलोके लोक अर्थ बहु ।
जुगल पाद कंज उर निश्चल भूमि पें लगाई सांई ॥३॥

---

१ वस्त्र ।

कीजिये निहाल अब दुकृत पैमाल करि के ।
दीज़िये शिवालय चैन अनन्त काललौं गुसाई ॥४॥

[२६२—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

हेजी ऐसो कर्म बडोजी बलवान जगत में पीडत है ॥टेर॥
पवनंजय की नारी अंजना गरभ-बस्यो हनुमान ।
सगी सासने दियो निकालौ, किस विधरा खूं प्राण ॥१॥
घर से निकसि चली अंजना मात पिता के द्वार ।
भाई भतीजा सब ही जगमें कोईयन कियो सत्कार ॥२॥
बार बार यूं कहे अंजना कैसे लूं विश्वास ।
कहो सखी अब कैसे करिये टूटगई सब आस ॥३॥
सन्मुख होकर चली जो वनमें ध्यान धरें मुनिराय ।
अपना भव पती का सुनकर रोम रोम हुलसाय ॥४॥
ततृत्तण मांही करमन बांध्यो देवीदास गुण गाय ।
सुधि बुधि तो मैं कुछ नहीं जानू जैन धरम आधार ॥५॥

[२६४—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

अरे भाई सुनरे चतुर नर होवे जगत में यह बातां ॥टेर॥
जब प्रभु के दर्शन को जाता, निरखे पांव अधर धरता ।
शास्त्र श्रवण की वक्त हुई तब ऊंघण मांही रुलजाता ।
धरम पूजा में इक पल रहता कहे मेरा जीव दुख पाता ।१।

गनका नाचे ख्याल तमाशा, ऊभा रहे सारी रातां ।
बोलत सीधा बोल चलत है मद माता ॥२॥
खवाड्या सेती कपडा धोता दोप दैव सिर क्यूं धरता ।
पग बलती दीखे नहीं अपनी डूंगर बलती बतलाता ॥३॥
जो जो होय करे नहीं करणी शिव मारग कैसे जाता ।
किशना सुमरो देव जिनेश्वर मुक्ति पुरी को वह जाता ॥४॥

[२६५—राग—ख्याल तमाशा व गजल]

भाई तू सीख सुगुरु की मान, अरे तू मत कर मान गुमान ।टेर।
अशुचि स्थान में पड्यो गरभ में मल मूत्र लिपटाय ।
कबहुकि रोयो कबहूँ हंसायो रो रो भयो हैरान ॥१॥
युवा भयो वनिता संग राच्यो विषय भोग लिपटान ।
मोह गहल की नींद में सूतो घना किया तोफान ॥२॥
वृद्ध भयो जब सोचन लागो, कंपन लागी काय ।
हाय हाय कर झूरन लाग्यो अब निकसे तेरे प्राण ॥३॥
सप्त विसन अरु पांचों नागन अष्ट करम बलवान ।
खेमचंद जिव यूं कहे कर जिनवर को ध्यान ॥भाई तू सीख॥४॥

[२६६—राग—ख्याल तमाशा व गजल]

रखता नहीं तनकी खबर, अनहद बाजा बाजिया ।
घट बीच मंडल बाजता, बाहिर सुना तो क्या हुआ ॥१॥

जोगी तो जंगम सेवड़ा, बहु लाल कपड़े पहिरता।
उस रंगसे महरम नहीं, कपड़े रंगे तो क्या हुआ ॥२॥
काजी किताबैं खोलता, नसीहत बतावै और को।
अपना अमल कीन्हा नहीं, कामिल हुआ तो क्या हुआ ॥३॥
पोथी के पाना बांचता, घरघर कथा कहता फिरै।
निज ब्रह्म को चीन्हा नहीं, ब्राह्मण हुआ तो क्या हुआ ॥४॥
गांजारु भांग अफीम है, दारू शराबा पोशता।
प्याला न पीया प्रेम का, अमली हुआ तो क्या हुआ ॥५॥
शतरंज चौपर गजफा, बहु मर्द खेलैं हैं सभी।
बाजी न खेली प्रेमकी, ज्वारी हुआ तो क्या हुआ ॥६॥
'भूधर' बनाई बीनती, श्रोता सुनो सब कान दे।
गुरु का वचन माना नहीं, श्रोता हुआ तो क्या हुआ ॥७॥

[२६७—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

जिनराज ना बिसारो, मति जन्म बादि हारो ॥ टेर ॥
नर भव आसान नाहीं, देखो सोच समझ वारो ॥ १ ॥
सुत मात तात तरुनी, इनसौं ममत निवारो।
सबही सगे गरज के, दुखसीर नहि निहारो ॥ २ ॥
जे खॉय लाभ सब मिलि, दुर्गति में तुम सिधारो।
नटका कुटंब जैसा, यह खेल यों विचारो ॥ ३ ॥
नाहक परायें काजैं, आपा नरक मैं पारो।
'भूधर' न भूल जगमें, जाहिर दगा है यारो ॥ ४ ॥

[२९७—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

कुमति प्रीति के हम सताये हुए हैं,
विषय भोग धोखे में आये हुए हैं ॥ टेर ॥
न हम किसी के न कोई हमारा,
सिर्फ मोह के वश फँसाये हुए हैं ॥ १ ॥
कभी स्वर्ग में हैं कभी नरक में हैं,
अरहट की तरह से भ्रमाये हुए हैं ॥ २ ॥
पिता पुत्र माता और बन्धु भाई,
नहीं साथ आये न लाये हुए हैं।
सुमति से कभी हम मिलेंगे अय कुन्दन,
यही लौ प्रभु से लगाये हु.ए हैं ॥३॥

[२९८—राग-ख्याल तमाशा व ग़जल]

क्या किंकर पर जावोजी अपनो विरद संभारो ॥ टेर ॥
मैं दुखिया हूं अनादि काल को मेरी ओर निहारोजी ॥१॥
अष्ट कर्म तें बहुत दुःखी हूँ इन तें वेग छुडाओजी ॥२॥
अब सेवग हितकर गुण गावैं आवागमन निवारोजी ॥३।

[२९९—राग ख्याल तमाशा व गजल]

निश दिन तन मन धन वारोरी-प्राण पियारो नेम सॉवरो,
दरशवा दिखलाई मन मेरो लीनो जादू मोपे डारोरी ।टेर।
पिया के दरश विन कल ना परत मोहे कटत रैन दिन तारोरी ।

हेरी आली हेरी आली कछुना सुहावे आली मोहे तो
एक नेम श्याम याद आवेरी ।
सखी सजन मिलत कछु कल न पडत,
मुझे जाऊँगी गढ गिरनारोरी ॥२॥

[३००—राग—ख्याल तमाशा व जगल]

तारो तारो स्वामी तिहारे चरण बार वार पूजैं ।
हम गावें गुण माला तिहारे चरण वार वार पूजैं ॥ टेर ॥
कर्म से हैं पूर्ण दुखी स्वामी दुःख टारो ।
फिरते हैं मोह वश संसारी यह वार वार ॥
देखें कर्मों के खेल अय चिमन जिन वर शरण,
शिव पहुँचाने वाले, तत्वज्ञानी परमातम हो स्वामी ॥१॥

[३०१—राग—ख्याल तमाशा व गजल]

मोहे तार मोहेतार मोहेतार तार भवसे उवारले चरण
शरण जिन तोरी ॥ टेर ॥
चौरासी भ्रमण किये हैं, भव भव में दुःख सहे हैं ।
अव शरण आन गिरे हैं ॥
जगतारण हो तुम स्वामी, सुन ले अन्तर्यामी ।
सेवक अरज करत कर जोड, प्रभू अब तारो नैया मोरी ॥१॥

[३०२—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

न फूलो दिल में अय यारो पराई देखकर कामिन।
व हर सूरत गुजर करके छुडालो इससे अब दामिन ॥टेर॥
नजर तुम से मिलावेगी तेरे दिल को लुभावेगी।
मुफ्त में जान जायेगी, डसेगी जैसे वो नागिन ॥ १ ॥
इसीका खयाल जब आया बडा कीचकने दुख पाया।
लिखा है जैन शासन में नरक में वह गया रावण ॥२॥
अगर जो 'नैन सुख' चाहो, न इसके फंद में आवो।
नरक में मार खावोगे, न होगा कोई वहाँ जामिन ॥३॥

[३०३—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

करो कल्याण आतम का भरोसा है नहीं दमका ॥ टेर ॥
यह काया काचकी शीशी, फूल मत देख कर इसको।
छिनक में फूट जावेगी बबूला जैसे शबनम का ॥१॥
यह धन-दौलत मकाँ मंदिर, जो तू अपने बताता है।
नहीं हरगिज कभी तेरे छोड जंजाल सब गम का ॥२॥
स्वजन सुत नारि पितु मादर, सभी परिवार अरु बिरादर।
खडे सब देखते रहेंगे कूच होगा जब इस दमका ॥३॥
बडी अटवी यह जग रूपी फसें मत जान कर इसमें।
कहै 'चुन्नी' समझ दिल में सितारा ज्ञान का चिमका ॥४॥

[३०४—राग-ख्याल तमाशा व ग़ज़ल]

दुनिया में देखो सैकडों आये चले गये।
सब अपनी करामात दिखाये चले गये ॥ टेर ॥
अर्जुन रहा न भीम न रावण महाबली।
इस काल बली से सभी हारे चले गये ॥ १ ॥
क्या निर्धनी धनवंत और मूरख व गुणवंत।
सब अंत समय हाथ पसारे चले गये ॥ २ ॥
सब जंत्र मंत्र रह गये, कोई बचा नहीं।
इक वो बचे जो कर्म को मारे चले गये ॥ ३ ॥
सम्यक्त्व धार न्याऽऽमत यों दिल में समझले।
पछतावोगे जो प्राण तुम्हारे चले गये ॥ ४ ॥

५० [३०५—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

मुसाफिर क्यों पडा सोता भरोसा है न इक पलका।
दमादम बज रहा डंका तमाशा है चलाचल का ॥ टेर ॥
सुबह जो तख्तशाही पर बडे सज धज के बैठे थे।
दुपहरी वक्त में उनका हुवा है वास जँगल का ॥ १ ॥
कहां हैं राम और लक्ष्मण, कहां रावण से बलधारी।
कहां हनुमंत से जोधा, पता जिन के न था बल का ॥२॥
उन्हों को काल ने खाया, तुझे भी काल खावेगा।
सफर सामान करके तू बनाले बोझ को हलका ॥३॥

[२०६—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

तुमरे सुमरण से स्वामी करम कटै, करम कटै सब विघन
मिटै ॥ टेर ॥

भव भव में फिरते हारे दुःख सहे हम,
दरशन तेरे पाये, भाग्य जगे ॥ १ ॥

शरण तिहारे प्रभुजी आन पडे हम,
लाज रखावो प्रभू चरण लगे ॥ २ ॥

[२०७—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

जिसने छवि आपकी जिनदेव निहारी होगी ।
और कोई चीज उसें जगमें न प्यारी होगी ॥ टेर ॥
धर्म में आपके दृढ़ होवेंगे प्राणी जितने ।
उनके उड चलने को सम्यक्त्व सवारी होगी ॥ १ ॥
आसरा हमको यही है कि चरण हम परसैं ।
तुमरे चरणों के सबब मुक्ति हमारी होगी ॥ २ ॥
खान-ए-दिल वही तारीफ के काबिल होगा ।
प्रीति जिस दिल में श्री शांति तुम्हारी होगी ॥ ३ ॥
नाम जिन देव पें 'धूमन' जो किनारे बैंठे ।
उनकी नैया को तुम्हें पार लगानी होगी ॥ ४ ॥

[३०८—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

यह दुष्ट कर्मों का सब असर हैकि मैं जो रंजो अजाब में हूं।
तरह तरह के पडे हैं दुखडे अजीब हाले खराब मैं हूँ। टेर।
यह कर्म रस्सी जकड रही है, बुरी तरह से पकड़ रही है।
मुझे पकड कर अकड रही है, फँसा हुवा पेच ओ ताव में हूँ।१
जो हो हिये मेरे उजाला, दिखादो जलवा जनावे आला।
कि नीच कर्मोंने मार डाला इन्हीं के मैं इनकलाब में हूं।२।
जिनेन्द्र शासन जगा रहे हैं, मुक्ति का रस्ता बतारहे हैं।
वो हर तरह से जितारहे हैं, मगर मैं गफलत के ख्वाब में हूँ।३।
किसी के घर में जरो तिला हैं, किसी को भक्ति का धन-मिला है।
गरीब 'धूमन' यह कह रहा है, बतावो मैं किस हिसाब में हूं॥४॥

[३०९—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

जब ऐमाले गुजिस्ता को हम अपने याद करते हैं।
सिसक कर और बिलख कर आपसे फरयाद करते हैं।टेर।
कहाँ जावे कहैं किससे नहीं जब दूसरा कोई।
नहीं पाते हैं जब दीगर तुम्हीं को याद करते हैं॥१॥
यह बस जानते हो हम कि तुमही काम आवोगे।
भरोसा आपपर करके दिल अपना शाद करते हैं॥२॥
लडकपन खेल में बीता, जवानी नींद गफलत में।
बुढापा मोह वश खोकर उमर बरबाद करते हैं॥३॥

अगर सुख चाहते 'धूमन' भजो तुम सच्चिदानन्द को।
जो कर्मों से छुडाकर पाप से आजाद करते हैं ॥ ४ ॥

[३१०—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

हिल मिल भविजन करो जी ध्यान,
निश दिन करिये प्रभु गुण गान ॥ टेर ॥
जिनवर के सुमरण से कर्मों का नाश, हे जिनजी वे गरजी,
सब सुखकार, भव दुख हारी ॥१॥
मूरति जिनेश की, राग न द्वेष की, परम धरम सुमति दानी।
हे भवि कर्मों का चटपट करना जिन सुमरे भवसागर तिरना।२।

५। [३११—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

तू क्यों उम्र की शाख पर सो रहा है,
खबर भी है तुझको कि क्या होरहा है ॥ टेर ॥
कतरते हैं चूहे इसे रात दिन ही,
कि जिस डाल पर सी तू बे खबर सोरहा है ॥ १ ॥
है नीचे खडा मौत का मस्त हाथी सवार
तेरे गिरने का मुन्तजिर हो रहा है ॥ २ ॥
'न्यामत' यह टहनी गिरा चाहती है।
विषय बूंद पर अपनी जॉ खोरहा है ॥ ३ ॥

[३१२—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

हॉ कोई जावो ना, हॉ फिर जाके पिया को मनावो ना।
मैं मना के सुभा के गुना के जती ॥ टेर॥
कैसे सर्दी को सहेंगे वो सीसावन में।
लूए गरमी की पिया के जो लगेगी तन में॥ १॥
बिजलियॉ चमकेंगी वर्षात में काले घन में।
न्याऽऽमत सोचलो तब गुजरेगी क्या क्या मन में॥ २॥
कहे सुनावो ना, हां बन जावो ना।
घर आवो ना, तरसावो ना, जाके पिया को मनावो ना॥ ३॥

[३१३—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

तारोजी तारो डूबी नाव को तिराने वाले॥ टेर॥
पापों से बचाने वाले, आफत से छुडाने वाले।
जिनवर जगदीश प्रभु शरण रखाने वाले॥ १॥
अंजन से चौर को एक क्षण में तिराया तुमने।
श्रीपाल को प्रभु सागर से बचाया तुमने॥ २॥
मुझको भी तारो स्वामी भव से उबारो स्वामी।
सेवक शरणा, है जिन चरणा,
करके करुणा शिवपुर वास बसानेवाले॥ ३॥

[३१४—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

ठाडी अरज करे राजुल नारी।

नैनन ढलके नीर, पिया तकसीर माफ कीज्यो म्हारी। टेर।
सुन पशुवन की टेर, लिया रथ फेर गये प्रभु गिरनारी ॥१॥
सुनो प्रभु मोरी बात, मुझे लो साथ; पिया थाकी बलिहारी ॥२॥

[३१५—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

हम तो जिनवाणी सब को सुनाये जायेंगे।
मानो न मानो यह मंशा तुम्हारी, न समझानेसे हमतो
बाज आयेंगे ॥ टेर ॥
है यह जिनवाणी जो पाखंडका सब नाश करे।
झूठे मसलों को हटा तत्त्व का परकाश करे।
सिदके दिल से कोई सुनने की अरदास करे—
कर्मों को काट के मुक्ति वह जा वास करें।
फिर न दुनिया के झगडों में रगडों में लौट आयेंगे ॥१॥
नय प्रमाण से तत्त्वों को दिखाया इसने।
कर्त्ता हर्ता है यही जीव बताया इसने।
सदा उसके ही धनवाद गुणवाद गाये जायेंगे ॥ २ ॥

[३१६—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

घर आवोजी जियाजी सुख माणवाने।
थाने कुण जी नटै छै अठै आवताने ॥ टेक ॥
थाने हिंसारो काज छुडावस्यांजी।
सातों विसनारो संग निवारवाने ॥ १ ॥

थाकी पर परणति भी छुडायस्यांजी ।
रूढी निज परणति सो मिलायथाने ॥ २ ॥
थाने ज्ञान मई ढोलनी पोढायस्याजी ।
निज रूप में तिहु लोक लखायथाने ॥ ३ ॥
थाने मुक्ति वधू परणायस्यांजी ।
पारशदास को कारिज सारथाने ॥ ४ ॥

[३१७—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

तारण वाला नाम सुना जिनराज तिहारा ।
मैं आऽऽआऽऽआया ॥ टेर ॥
दुःखिया सु दीन हूँ, विषयों में लीन हूँ ।
करता हूं पाप रात दिन बिलकुल मलीन हूं ॥ १ ॥
अब तो मुझे बचा, जरा शिव का फल चखा ।
मैं तेरा बन्दा होय के, योंही फिरा करूं ॥ २ ॥

[३१८—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

जिया तुम चोरी त्यागोजी,
बिन दिया मत अनुरागोजी ॥ टेर ॥
पंच पाप के मध्य विराजे नाम सुनत दुख भाजे ।
हितू मिलापी लखिकर भाजे, सुख सुपने नहि छाजें ॥१॥

---

१ हदा—अच्छी=न्यारा ।

राजा दंडै लोकाँ भंडै, सज्जन पंच विहंडै।
पंच भेद युत समझ तजो जो, पदस्थ तिहारी मंढै ॥२॥
प्राण समान जान परधन को, मत कोई हरन विचारो।
हिंसा ते भी बडो पाप है, यह भाखी गणधारो ॥ ३ ॥
सत्यघोष यातैं दुख पायो, और भी कुगति डुलाये।
'पारश' त्याग किया सुख उपजे दोउ लोक उजलाये ॥४॥

[३१९—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

मोपै करुणा करो भगवानजी।
मत जावो गिरनारी अकेला छाँड के, मोरा प्राणजी ॥टेर।
नव भव संग में राख के मत जावो तुम छोड।
दसवें भव न विसारिये, अरज करूं कर जोड ॥ १ ॥
पशुवन की करुणा करी, मेरी सुधि दी बिसार।
तोरण से रथ तुम फेरिया मैं बैठ रही जिय हार ॥ २ ॥
राजुल की अरजी यही, सुनिये प्राणाधार।
संग मोहे ले चालिये, 'सेवक' ओर निहार ॥ ३ ॥

[३२०—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

विन काम ध्यानमुद्राभिराम, तुम हो जगनायकजी ॥टेक ॥
यद्यपि वीतरागमय तद्यपि, हो शिवदायकजी ॥ १ ॥
रागी देव आप ही दुखिया, सो क्या लायकजी ॥ २ ॥

दुर्जय मोह शत्रु हनवेको, तुम वच शायकजी ॥ ३ ॥
तुम भवमोचन ज्ञानसुलोचन, केवलज्ञायकजी ॥ ४ ॥
'भागचन्द' भागनतैं प्रापति, तुम सब ज्ञायकजी ॥ ५ ॥

[३७१ – राग–ख्याल तमाशा व गजल]

भजले श्री भगवान और सब बातें थोथी जान ॥ टेक ॥
प्रभु विन पालक कोई न तेरा, स्वारथ मीत जहान ॥१॥
परवनिता जननी सम गिननी, परधन जान पखान ।
इन अमलों परमेसुर राजा, भाषैं वेद पुराण ॥ २ ॥
जिस उर अन्तर वसत निरंतर, नारी औगुण खान ।
न हो वहां साहिब का वासा, दो खांडे इक म्यान ॥३॥
यह मत सत गुर का उर धरना, करना कहिं न गुमान ।
'भूधर' भजन न पलक विसरना मरना मित्र निदान ॥४॥

[३७२—राग–ख्याल, तमाशा व गजल]

सुनिये सुपारश अर्ज हमारी ॥ टेर ॥
लख चोरासी योनि फस्यों मैं पायो दुख अधिकारी ॥१॥
बडे पुण्य ते नरभव पायो शरण गही अब थारी ॥ २ ॥
रतनत्रयनिधि निजकी दीजे, कीजे विध निरवारी ॥ ३ ॥
अधम उधारक देव जिनेसुर आज हमारी वारी ॥ ४ ॥

[३२३—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

जिया तजो पराई नारि ये तो काली नागनी ॥ टेर ॥
नारी नहीं ये नागनि है-यह है विष की बेल ।
नागनि काटे क्रोध सों, या मारै हंस खेल ॥ १ ॥
बातें करती औरसों मन में राखे और ।
वाकूं तजके और कूं चाहै, वाकूं तज के और ॥ २ ॥
नैन मिलाये मन कू बांधे, अंग मिलाये कर्म ।
धोखा दे के दुःख में डारे याहि न आवे शर्म ॥ ३ ॥
तीर्थंकरसे वाकूं त्यागै, जो त्रिभुवन के राय ।
'नैनानद' नरक की नगरी सतगुरु दई बताय ॥ ४ ॥

[३२४—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

मैं तो रहा दरस बिन तरस नाथ थांकी महिमा न जानीजी ।
मैं पूजे रागी देव गुरु, सेये अभिमानी जी ।
हिंसा में माना धरम सुनी मिथ्यामत बानी जी ॥१॥
मैं फिरा पूजता भूत ऊत अरु सेढ मसानी जी ।
मैं जन्त्र मंत्र बहु करे मनाये नाग भवानी जी ॥ २ ॥
मैं भैंसे बकरे भेड़ हते बहुतेरे प्राणी जी ।
नहिं हुवा मनोरथ सिद्ध भये दुर्गति के दानी जी ॥३॥
मैं पढ़ लिये वेद पुराण जोग अरु भोग कहानी जी ।
नहीं आशा तृष्णा मरी सुगुरु की सीख न मानीजी ॥४॥

मैं फिरा रसायन हेत मिली नहीं कौड़ी कानी जी।
नहिं छुटा जन्म अरु मरन खाक बहुतेरी छानी जी ॥५॥
लई भुगत चौरासी लाख सुनी नहिं तेरी बानी जी।
हुवा जन्म जन्म में ख्वार धरम की सार न जानी जी ।६।
तेरी वीतराग छवि देखि मेरे घट मांहि समानी जी।
हो तुम ही तारण तरण तुम ही हो मुक्ति निसैनीजी ॥७॥
है दयामई उपदेश तेरा तुम हो गुरु ज्ञानी जी।
हो षटमत में परधान 'नैनसुखदास' बखानी जी ॥८॥

[३२५—राग ख्याल तमाशा व गजल]

पाये पायेजी पदम के दरशन जिया हरषाये।
सब टले हमारे पातक पुण्य कमाये ॥ टेर ॥
भूले भूले अबलौं भटके अब ना भटका जाये।
शिव सुखदानी तुमको पाकर कैसे भूला जाये ॥१॥
भवदधि तारण तरण जिनेश्वर सब ग्रंथन में गाये।
फिर भक्तों की नाव भंवर विच कैसे गोता खाये ॥२॥
विघन निवारो संकट टारो, राखो चरण निभाये।
सुख सौभाग्य बढे भारत का घर घर मंगल गाये ॥३॥

[३२६ - राग ख्याल तमाशा व गजल]

सुन नैन चैन जिन बैन अरे मत जन्म वृथा खोवे—
जन्म वृथा तू अब मत खोवै, मत शूली चढ निर्भय सोवे।

भींचदेगा चानचक काल गला, आन तवमूंड
पकड रोवै ॥ टेर ॥

जैसे कोई मूढराज साज गज राजनि को,
खैंच के जडाऊ होदा खात ढोय रीझै है।
कचन के भाजन में मोरी की समेटै कीच,
फूल हेत बोवे शूल अमृत तें सींचै है।
चिंतामणि रतन को पाय के चगाय सिंधु,
काग के उडायवे को मूढ दांत भीचै है।
त्योंही नरभव अब पाय के कियो न तप,
वासना मिटी न छिन छिन आयु छीजै है।
श्वासो श्वासो दुधाग वलै शिर आरा घाव धो पट्टी मत धोवै।१।
तरस तरस के निगोद से निकास भयो,
तहां एक श्वास में अठारा वार मरै थो।
सूक्षम ते सुक्षम थी तहां तेरी आयु काय,
पर्याय पूरण करै थो फिर मरै थो।
तहां से निकस पंच थावरा में पृथ्वी काय,
माहि तू समाय के अनंत दुःख भरै थो।
हीरामणि सज्जि सोरा गंधक पाषाण लूण,
लूण से लकड़िया पिंडौल तन धरै थो।
भया पारा हरताल रसायण कोई तुझ मेटो है ॥२॥

१—अचानक

जल में जन्म धरयो धरणी पे आय पड्यो,
मोरीन में जाय सड्यो, पोखर में रुक्यो है।
काहू ने झखोर डारयो, काहू ने बखेर डारयो;
ग्रीषम की धूप पौन लागी तन सूख्यो है।
काहू ने अचित्त कियो काहू ने सचित्त पियो,
मूत के बहाय दियो ऊपर से थूक्यो है।
पावक में गयो तोउ पायो चैन न काहु भांति,
काहू ने बुझायो काहु दाब्यो काहु धोक्यो है।
किनहु तपाकर घात करी घन घात तहाँ तेरा चकनाचूर होवै॥

पवन शरीर धारयो भीतन-से देदे मारयो,
अपनो ही अंग तहां पायो बहु त्रासरे।
कबहु बनसपति भयो कंदमूल जात,
फल फूल कली फली शाक पत्ता घासरे।
छील छूल भूनके भुलसके शरीर तेरा,
चूट मूट तोड प्राणी कर गये ग्रासरे।
भया तू विकल तीन भांत बे अकल जब,
कीडा चिटीं भोरा वो कहायो माखी डॉसरे।
नाना विध किये मरण नहीं कोई शरण,
सहाई दयाबिन को होवै॥ ४॥

मीन मृग सुस्सा अज पारधी पकड लियो,

गेर के उधेर डारो काहु न बचायो है।
मारो लादो बैल भैंसा ऊँट घोडा गज खर,
बांध्यो धूप शीत में खुवायो है न पायो हे।
स्वर्ग देख भूरा दूसरे की संपदा को,
नरक में मार मार चामडो उडायो है।
मानुष में इष्ट वा अनिष्ट को संजोग भयो,
चेत चेत जैन किंतु ऐन माहिं आयो है।
बैठ कही एकत यही है तंत आंगण में कांटे मत बोवैं ॥५॥

[३२७—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

किससे करिये प्यार यार खुदगर्ज जमाना है ॥ टेर ॥
मित्र कहै मैं जन्म का साथी हूँ सच्चा दिलदार।
वक्त पडे पर काम न आवे किया प्यार केइ बार,
न फिर आना अरु जाना है ॥ १ ॥
भाई कहे यह भुजा हमारी मैं सच्चागम ख्वार—
जर जमीन जन के झगडेपर किया मुकदमा त्यार।
न फिर वो प्रेम अरु खाना है ॥२॥
पुत्र कहै तुम पिता हो मेरे में फरमा बरदार,
व्याह हुये फिर आंख दिखाई अलग किया व्यवहार—
किया अब दूर ठिकाना है ॥३॥

स्त्री कहै प्राण पति मेरे जीवन के आधार—
सतान नहीं होने पर फिर वह करन लगी व्यभिचार—
हुवा अपना वेगानारे ॥ ४ ॥
जब घर वाली की यह गलती है और वे हैं मतलब दार,
सेवक अब चल शरण प्रभुकी वोही लगावे पार—
दुखी का वही ठिकाणा है ॥५॥

[३२८—राग—ख्याल तमाशा व गजल]

करो पार नैया मोरी डूबा मैं जारहा हूं ॥ टेर ॥
भव सिन्धु है अपारा, जिसका न वार पारा,
हैरत में आरहा हूं ॥ १ ॥
यह लोभ क्रोध माया, तूफान शिर पै आया,
चक्कर में खा रहा हूं ॥ २ ॥
मिथ्या अंधरे छाया, रस्ता मोरा भुलाया,
उलटा मैं जा रहा हूं ॥ ३ ॥
परमाद चोर आया, पुरुषार्थ धन चुराया—
आलस में आरहा हूं ॥ ४ ॥
तारण तरण तूही है भव दुख हरण तूही है—
निश्चय में लारहा हूं ॥ ५ ॥
न्यामत है मझधारा टुक दीजिये सहारा,
मैं शिर झुका रहा हूं ॥ ६ ॥

[३२६—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

आज तक प्रभु करुणापती तेरे चर्णों में जियरा गया ही नहीं।
मैं तो मोह की नींद में सोता रहा।
मुझे तत्वों का दर्श भया ही नहीं ॥ टेर ॥
मैंने आतम बुद्धि बिसार दई, मैंने ज्ञान की ज्योति बिगाड़ लई।
मुझे कर्मों ने योंहीं फँसा तो लिया।
तेरे चर्णों तक आने दिया ही नही ॥ १ ॥
नर्कों में जो दुख मैंने सहे, नहीं जात प्रभु अब मुझसे कहे।
कहीं छेदन भेदन सहना पड़ा।
मुझे खाने को अन्न मिला ही नहीं ॥ २ ॥
पशुवों में जाके जो पैदा हुवा, मेरे और भी दुःख ज्यादा हुवा।
मुझे मांस के भक्षी ने आके ग्रसा।
मुझ दीन को जीने दिया ही नहीं ॥ ३ ॥
स्वर्गों में जाके जो देव हुआ, मेरे दुख का तो वहां भी न छेह हवा।
मैं तो आयु को योंही गँवाता रहा।
मैंने संयम धार लिया ही नहीं ॥ ४ ॥
नर भव दुर्लभ मैंने लहा, मैं विषयों में निश दिन लिप्त रहा।
मात पिता त्रिय जन ने मुझे, चैन तो लेने दिया ही नहीं ॥५॥
मैंने जीवोंका निशदिन घात किया।
मैंने छल कर पर धन लूट लिया।
मेरी और की नारि पे चाह रही।

मैंने सत्य तो भाषण किया ही नहीं ॥ ६ ॥
जिनवर प्रभु अब कीजै दया, इन पापों से डरता है मेरा जिया।
पड़ा चर्णों में तेरे यह दास 'चिमन'।
मैंने और ठिकाना लिया ही नहीं ॥ ७ ॥

[३३० —राग–ख्याल तमाशा व गजल]

सुणज्यो पद्म प्रभु भगवान, हेलो दीनको जी ॥टेर॥
मैं तो दीन दुखी छूं भारी, म्हारी संपति लुट गई सारी।
पड़ौ मोह कर्म को जबरो म्हारी सुधि लीजियो जी ॥१॥
घर का मतलब का छै साथी, वैतो हो छै उलटा घाती।
सारी आफत मोपे आती भुगतूं येकलोजी ॥ २ ॥
बन रह्यो जाल कर्म को भारी, इसमें फंस रही अकल म्हारी।
म्हारा अष्ट करम को जाल भगवन काटद्योजी ॥ ३ ॥
गैलो मिलता ही भगजास्यूं, पकड में याकै अब नहीं आस्यूं।
कोल करूं हूँ म्हारा नाथ, पहली भूलको जी ॥ ४ ॥
अबकी बार बचादो प्रभुजी, अनुपम की छै याही अरजी।
म्हारो जन्म जरा दुख मेटो श्री जिनराजदेवजी ॥ ५ ॥

[३३१—राग–ख्याल तमाशा व गजल]

विरद सँवार के करुणा धार के अब सुधिलेना ॥ टेर ॥
भव सागर के बीच में यह नाव हमारी डूबी जावै।
हां कोई नहीं ऐसा जग में और तुम बिन पार लगावै ।१।

लाखों ही प्राणियों को आपने ही तार दिये।
हां लाखों ही पापियों के आपने उद्धार किये ॥ २ ॥
आप के दास हैं हम सब का बेडा पार लगावो।
हां चरणों में शीश रखैं हम सब को अब तो सुखी करावो ।३।

[३३१—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

व्याकुल मोरे नैननवा चरण शरण में आया,
दरश दिखावो स्वामी दरश दिखावो ॥ टेर ॥
कर्म शत्रु तो घिर घिर शिर पर आरहे आरहे-
भव सागर में दुःख अनंता पारहे पारहे।
इनसे वेग बचावोजी, दुःख मिटा दो स्वामी दुःख मिटादो ।१।
तीन भुवन में तुमसा और न पाते हैं पाते हैं-
तुम बिन स्वामी ठौर और नहीं पाते हैं पाते हैं।
पथ दिखलाओजी, दुःख मिटा दो स्वामी दुःख मिटा दो ।२।
सब जीवों का दुख से बेडा पार करो पार करो,
सेवक का भी स्वामी अब उद्धार करो उद्धार करो-
सब ही शीस नमावैंजी, दुःख मिटादो स्वामी दुःख मिटादो ।३।

[३३२—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

छोड के नेम चलदिये हाय सितम गजब सितम।
कुछ भी न की मेरी दया हाय सितम गजब सितम ॥ टेर ॥
नव भव संग में रही दशवें विसार क्यों दई,
तुमने तो शिव रमणी लई, हाय सितम गजब सितम ॥१॥

पशुवन शोर सुना दिया, पीछे ही रथ फिरा लिया।
मैंने कसूर क्या किया, हाय सितम गजब सितम॥ २ ॥
जब से गये वो छांडे के, जी में भई है वेकली।
कटते नहीं यह रात दिन, हाय सितम गजब सितम ॥३॥
कर्मों का फल मैंने लहा, इसमें किसी का दोष क्या ?
सारे 'चमन' को तज दिया, हाय सितम गजब सितम ॥४॥

[३३४—राग-ख्याल तमाशा व गजलें]

चेतन काहे को पछतावता, यहां कोई नहीं है तेरा ॥टेर॥
हम न किसी के कोई न हमारा, यह जग सारा द्वन्द्व पसारा।
पची का सा रैन गुजारा, भोर भये उड जावता,
कहीं और जगह कर डेरा ॥१॥
इक दिन है तुझ को भी जाना, फिर पीछै उलटा नहिं आना
पडा रहै सब माल खजाना, फिर काहे चित्त भ्रमावता,
झूठा घर वार वसेरा ॥ २ ॥
जिस को भाई बेटा बताता, वोही तेरी चिता बनाता।
खप्पन कोभी हर लेजाता बे रहम हो आग लगावता,
शिर फोड भस्म कर ढेरा ॥३॥
जो रोवे सो लोक दिखैया, या रोवै सुख अपने को भैया।
तेरे लिये कछु नाहिं करैया, क्यों न प्रभु गुण गावता,
जासु वेग मिटै भव फेरा ॥४॥

[३३५—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

छांड दे अभिमान जियरा छांड दे अभिमानरे । टेर ॥
कहां को तू और कौन तेरे सब ही हैं महमान रे ।
देखराजा रंक कोऊ थिर नहीं या थानरे ॥ १ ॥
जगत देखत तोर चलवो तूभी देखत आनरे ।
घडी पलकी खबर नाहीं कहां होय विहानरे ॥ २ ॥
त्याग क्रोधरु लोभ माया, मोह मदिरा पानरे,
राग दोष हि टार अन्तर, दूरकर अज्ञानरे ॥ ३ ॥
भयो सुर पुर देव कबहू कबहु नरक निदानरे ।
इक कर्म वश बहु नाच नाचे भइया आप पिछानरे ।.४॥

[३३६—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

चंदा प्रभु म्हाराज हम आये हैं पूजन काज ॥ टेर ॥
धन्य घडी धन भाग हमारा प्रभु आपका मिला है सहारा,
सरे सब आतम काज ॥ १ ॥
प्रभु किरपा हमपर कीजे, हमें भव २ भक्ती दीजे,
हमारी है तुम को लाज ॥२॥
म्हैली शीश नमावै तुमको, प्रभु शिव पद देवो हमको,
पडे हम चर्णों में आज ॥ ३ ॥

[३३७—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

सुन सुन बातां प्रेम की विणजारारे मिंता,
विणज सवेरे कीजिये तोहे चलने की चिंता ॥ टेर ॥
जो तू आयो विणज कूं विणजी नित कीजै ।
पूंजी है साहूकार की यातो नित उठ छीजे ॥ १ ॥
बारा मांगू नो पडै किस पर करूं रे पुकारा ।
नरद[१] हमारी कांची है घर दूर हमारा ॥ २ ॥
छिक्के पंजे नरद हूं तो अब क्यारे करीजे ।
इस बाजी के खेल में अपनो शिर दीजै ॥ ३ ॥
बाजी है जिन धरम की सब आलम शाखी ।
धन धन जिन जीव को जिन बाजी राखी ॥ ४ ॥

[३३८—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

डंका खूब बजाया वे मेरे सच्चे साहिबे ॥ टेर ॥
उपसम दल बादल चढ आये क्रोध क्षमा जड काटवे ॥१॥
जीत भगाये अरी गिराये, अपने दल की ध्यायावे ।
मान लोभ मद मारके स्वामी केवल ज्ञान उपाया वे ॥२॥
रूपचंद कहै नाथ निरंजन तुम त्रिभुवन के रायावे ॥ ३ ॥

१—नरद-चोपड की स्यार ।

[३३६—राग-ख्याल तमाशा व गजल]

नैना क्यों नहिं खोलै, गति गति डोलैरे अज्ञानी।
चेतो क्यों नहिं ज्ञानी, तूतो करता अपनी हानी ॥टेर॥
नरभव पाया, सुथल में जाया, सुकुल में आया।
सुनाकर जिनवानी, तजदे तू आनाकानी तेरीमति भई बोरानी १
विषयों से भाग, कषायों को त्याग, शुभ पथ लाग।
चली यह जिंदगानी ज्यों अंजुलि झरता पानी
तू करता है क्यों मनमानी ॥२॥
संयम धार काम को मार, अनुभव सार।
जग में सब जानी तू बनजा ज्ञानी ध्यानी,
'नानू' उत्तम सीख सयानी ॥३॥

[३४०—राग दादरा]

महावीर स्वामी अर्ज सुनो कान धर हुजूर।
बिलकुल मैं लुट गया हूँ मदद कीजिये जरूर ॥टेर॥
जब नाम सुना आपका तारण तिरण हुजूर।
जल्दी से आके शरण लई अब तारिये जरूर ॥१॥
काम क्रोध मान माया लोभ में गरूर।
ये मिलके सब सताते हैं मैं क्या करूँ हुजूर ॥२॥
ऐसा न हो निराश हो उम्मीद से हुजूर।
तब ऐसा कौन होगा जग में जो सुने हुजूर ॥३॥

जामन मरण के दुख सताते मुझे भरपूर ।
अब अर्ज दास ऐसी करे मुक्ति हो जरूर ॥४॥

[३४१—राग दादरा]

भगवान आदिनाथजी से मन मेरा लगा ।
आराम मुझे होत है दुख दर्श से भगा ॥टेक॥
मरु देवी नंद धर्म के कुल में सूर्य उगा ।
नृप नाभिराजा के कुमार नमत सुर खगा ॥१॥
जुगलिया निवार भर्म के जंजाल को तगा ।
वसुकर्म को जराय के शिव पंथ में पगा ॥२॥
अब तो करो सिताब[1] महरबान दिल लगा ।
कहै दास हीरालाल दीज्यो मुक्ति का मगा ॥३॥

[३४२—राग दादरा]

हो कृपा निधान म्हाने बेग तारोजी ।टेर।
कर्म शत्रु लैर[2] लागे दुःख भारोजी ।
जन्म मरण आदि रोग मेट म्हारोजी ॥१॥
अब लौं मैं नाहिं सुन्यो नाम थारोजी ।
गृद्ध आदि तार दिये विरद भारोजी ॥२॥
सुगरु सीख आन गहि शरण थारोजी ।
मोह जीत मुक्ति बरूँ दे नकारोजी ॥३॥

१—सिताब-जल्दी । २—लैर-साथ ।

[३४३—राग दादरा]

श्री आदिनाथ आदि ब्रह्मा याद कर आदम ।
सहस्र भुजाधार इन्द्र गयो उसी दम ॥
बनाय रूप अद्भुतम नचाइये कदम ।
निर्लजता खिरी निहार जिनेश जग अदम ॥१॥
हु के वैराग रूप करि कलिल सब छिदम् ।
करि 'चैन' अर्क पूरण भरि त्रिकाल शिव पदम ॥२॥

[३४४—राग दादरा]

गिरनार गया आज मेरा नेम दे दगा ।
साबिद विना मैं क्या करूं दिल, श्याम से लगा ॥टेर॥
बलभद्र कृष्ण यादव सब साथ ले सगा ।
ब्याहन को सज के आये जिन के लार सुर खगा ॥१॥
पशुवनकी सुन पुकार ज्ञान दिल में है जगा ।
चले छोड पशु बंध संयम ध्यान में पगा ॥२॥
अमोलक सुत कहत हीरालाल दिल लगा ।
तब राजमती ने ही घरबार को तजा ॥३॥

[३४५—राग दादरा]

दृग ज्ञान खोल देख जग में कोई ना सगा ।
इक धर्म विना सब असार, हंसे में ठगा ॥टेर॥
सुत मात तात भाई बंधु घर तिया जगा ।
संसार सिन्धु जलधि में करत हैं दगा ॥१॥

तन रूप आयु जोवन बल भोग संपदा—
जैसे डाब अनी, विन्दु नैन जु कगा ॥२॥
धन धान दासी दास नाग चपल जु लगा।
इन्द्र जाल के समान सकल राज सुख खगा ॥३॥
अमोलक सुत कहत हीरालाल दिल लगा।
जिनराज जिनागमसे गुरु चरण में पगा ॥४॥

[३४६—राग विहाग]

नर देही को धरी है तो कछु धरम भी करो।
विषयन के संग राच क्यों नाहक नरक परो॥ टेर॥
चोरासी लाख योनि तैंने केई बार धरी।
तू निज सरूप पाग के पर त्याग ना करी॥ १॥
तू आन देव पूजता है होय लोभ में।
तू जान बूझ क्यों पड़े हैवान कूप में॥ २॥
है धन नसीब जन्म तेरा जैन कुल भया।
अबतो मिथ्यात्व छोडदे कृतकृत्य हो गया॥ ३॥
पूर्व जन्म में जो करम तैंने कमाये हैं।
ताके उदय को पाय के सुख दुख आये हैं॥ ४॥
भला बुरा माने मति तू फेर फंसेगा।
'बुधजन' की सीख मान तेरा काज सधैगा॥ ५॥

[३४७—राग विहाग]

काहे को रूस कर गये अजी हे मेरे बालम ॥ टेर ॥
ब्याहे बिना ही तजदई ऐसा किया जुलम ।
गिरनार गिरि पे जाय के मुनिका लिया धरम ॥ १ ॥
नव भव से मैं चेरी हूं तुम प्यारे मेरे परम ।
दोष किसको दीजिये अशुभ अपने ही करम ॥ २ ॥
छप्पन कोड जादुवन की कीनी ना शरम ।
जाऊँगी मैं आनंद से तज मोहका भरम ॥ ३ ॥
रहूं नेम पिया के पादरविन्द में ही रम । काहे को०

[३४८—राग विहाग]

जिया तू दुख से काहे डरे रे ॥ टेर ॥
पहली पाप करत नहिं शंक्यो अब क्यों सांस भरे रे ।१
करम भोग भोगे ही छुटेंगे शिथिल भये न सरे रे ।
धीरज धार मार मन ममता, जो सब काज सरे रे ॥२
करत दीनता जन जन पे तू कोईयन सहाय करे रे ।
धर्मपाल कहै सुमरो जगतपति वे सब विपति हरे रे ॥३

[३४९—राग विहाग]

तू तो समझ समझ रे भाई ॥ टेर ॥
निश दिन विषय भोग लिपटाता धरम वचन ना सुहाई ।

कर मनका ले आसन मांड्यो बाहिर लोक रिझाई ।
कहा भयो बक ध्यान धरेतैं जो मन थिर ना रहाई ॥२॥
मास मास उपवास किये तैं काया बहुत सुखाई ।
क्रोध मान छल लोभ न जीत्यो कारज कौन सराई ॥३॥
मन वच काय जोग थिर करके त्यागो विषय कषाई ।
'द्यानत' स्वर्ग मोक्ष सुखदाई सत गुरु सीख बताई ॥४॥

[३५०—राग बिहाग]

ऐसी नीकी होरी प्रभु ही के बनि आवै ।
निज परनति रानी रंग भीनी अपने रंग खिलावै ॥टेर॥
ज्ञान सलिल दृग केसर चारित चोवा चरचि रचावै ।
दया गुलाल अबीर उड़ावै, सुख मद छक ने छकावै ॥१॥
नय वृज नृत्य कारिणी नाचे नाना भाव बतावै ।
[illegible]ादवाद सोई नाद आलापे, लय ताननिसों रिझावै ।२।
[illegible]से रस वश कर लीनो जो अनत न जान न पावे ।
सरवस फगवा ले जगपति को निज मंदिर बिरमावे ॥३॥

[३५१—राग बिहाग]

कारज मेरे को तुम ही प्रभु सार सार सार ।
मैं बेर बेर चितऊं मोहे तार तार तार ॥टेर॥
लख चोरासी माहिं भ्रम्यो बार बार बार ।
दुष्ट करम लैर लाग्या छार छार छार ॥ १ ॥

संसार कूप मांहि भटक्यो बार बार बार ।
मात पिता यश औ धरा कोई न राखन हार ॥
नरकों में मैने दुख सहे बार बार बार ।
बांधे व मारे नारकी तन किया छार छार छार ॥ ३
मेरे तो प्रभु एक तेरे नाम का आधार ।
प्यारे की येही विनती भव से उतारो पार ॥ ४ ।

[३५२—राग बिहाग]

यह मजा हमको मिला पुद्गल की यारी में ।
केई जन्म मरण किये निगोद ख्वारी में ॥
श्वास एक माहिं मरण ठारा वारि में,
अक्षर के अनन्त भाग सुज्ञान धारी मे ॥ १ ॥
अंगुल असंख भाग मांहिं देहधारी मै ।
करके निवास चिदानन्द हुवा भिखारी मैं ॥ २ ॥
चिद चैन गुण अनन्ते सब कू विसारी मैं ।
गुरु चरण की सहाय हुवा सुगुणधारी मैं ॥ ३ ॥

५५B [३५३—राग बिहाग] सल्हारी,

काहे को सोचत अति भारी रे मन ॥ टेक ॥
पूरब करमन की थिति बांधी सोतो टरत न टारी ॥ १ ॥
सब द्रव्यनकी तीन कालकी, विधि न्यारी की न्यारी ।
केवल ज्ञान विषै प्रतिभासी, सो सो ह्वै है सारी ॥२॥

सोच किये बहु बंध बढत हैं उपजत है दुख ख्वारी।
चिन्ता चिता समान बखानी, बुद्धि करत है कारी ॥३॥
रोग शोक उपजत चिन्ता ते, कहो कौन गुणवारी।
द्यानत अनुभव कर शिव पहुंचे जिन चिन्ता सब जारी ॥४

[३५४—राग बागेश्वरी]

राखोगे जिनेन्द्र प्रभु लाज हमारी ॥ टेक ॥
आन पड्यो हूं, तुम चरणन में,
मन वच तन कर शरण तिहारी ॥ १ ॥
दुष्ट कर्मदुख दे अनादि तैं दे अनादि तैं गति चारों में
गति चारों में भ्रमावे मोहे भारी ॥ २ ॥
तुम सम और न देव जगत में,
और जगत में तारणवाला तारणवाला तूही सुखकारी॥३
तुम प्रभु हो करुणा के सागर, करुणा सागर,
बलदेव को अब दीज्यो जी, अविचल सुखकारी ॥४॥

[३५५—बागेश्वरी]

शिखर सम्मेद निहारा, धन्य भाग हमारा ॥ टेक ॥
भरतखंड में जा सम नाहीं, यह तीर्थ सिरदारा ॥ १ ॥
नित प्रति देवी देव बजावें, दुन्दुभी शब्द अपारा ॥२॥
मोतीराम भक्ति दृढ करके, अपना जन्म सुधारा ॥३॥

[३५६—राग मालकोष]

जिया जग धोके की टाटी ॥ टेक ॥
झूंठा उद्यम लोक करत है, जिसमें निश दिन घाटी।१।
जान बूझ कर अंध बने हो, आंखिन बांधी पाटी ॥२॥
निकल जायेंगे प्राण छिणक में, पड़ी रहेगी माटी।
'दौलतराम' समझ मन अपनें, दिलकी खोल कपाटी।३।

[३५७—मालकोष]

तुम से पुकार मेरी, मेरी काटो कर्म की बेरी ॥ टेक ॥
यह पांचों में जो अकेला, कछु जोर चले नहीं मेरा।
यह चार बडे दुखदाई, तन मनमें आग लगाई।
'द्यानत' मन सुमन विचारो, मेरो कर्म काट अघ टारो।

[३५८—राग सोहनी]

इस नगरी में किस विधि रहना,
नित उठ तलब लगावेरी स्हैना[१] ॥ टेर ॥
एक कुवे पांचों पणिहारी,
नीर भरै सब न्यारी न्यारी ॥ १ ॥
बुर गया कुवा सूख गया पानी,
विलख रही पांचों पणिहारी ॥ २ ॥

१—स्हैना=मुकतर हका चपरासी

बालू की रेत ओसकी टाटी,

उड गया हंस पड़ी रही माटी ॥ ३ ॥

सोने का महल रूपे का छाजा,

छोड चले नगरी का राजा ॥ ४ ॥

'घासीराम' सहज का मेला,

उड गया हाकिम लुट गया डेरा ॥ ५ ॥

[३५६—राग सोहनी]

हम न किसी के कोई न हमारा,

झूठा है जग का ब्योहारा ॥ टेर ॥

तन संबंधी सब परिवारा, सो तन हमने जाना न्यारा ॥ १

पुन्य उदय सुख का बढवारा पाप उदय दुख होत अपारा।
पाप पुन्य दोऊ संसारा, मैं सब देखन जानन हारा ॥२॥
मैं तिहुंजग तिहुंकाल अकेला, पर संबंध हुवा बहु मेला।
थिति पूरी कर खिर खिरजाई, मेरे हरष शोक कछु नाहीं ।३।
राग भावते सज्जन माने, द्वेष भावते दुर्जन माने।
राग दोष दोऊ मम नाहीं, 'द्यानत' मैं चेतन पद माहीं ॥४॥

[३६०—राग सोहनी]

अरे मन बनिया बान न छोडे ॥ टेर ॥
पांच पाट को जामो पहरयो ऐंठ्यो ऐंठ्यो डोलै।

जन्म जन्म को मारयो कूट्यो तोहु सांच न बोलै ॥ १ ॥
घर में थारे कुमति वननिया छिन छिन में चित चौरै ।
कुटुंव थारो ऐसो हरामी, अमृत में विष घोलै ॥ २ ॥
पूरा बाट मांहि सरकावै घटती बाट टटोलै ।
पासग में चतुराई राखे पूरा कबहु न तोलै ॥ ३ ॥
चींथी लिख लिख वही वनाई कूडा लेखा जोडै ।
कहत बनारस इनसे डरियो कपट गांठि नहिं खोलै ।४॥

[३६१—राग सोहनी]

अरे निज बतियाँ क्यों नहीं जानै ॥ टेर ॥
चेतन रूप अनूप तिहारो, अचल अवाधि अडोलै ।
जन्म मरण को छेदनहारो, ग्यान अखंड अतोलै ॥१ ।
कुगुरुन को परसंग पाय के ओलों सोलों डोलै ।
पर पदार्थ निजरूप मान के मिथ्या करत किलोलै ॥२॥
एक समय भी आप लखे तो, पावे रतन अमोलै ।
मिथ्या दरशन ज्ञान चरण की फेर न माचत रोलै ।३॥
कर कर मोह शिथिल लखि आतम, स्यादवाद जुत तोलै ।
राम कहै उतपति नाशत है अर थिर थान विरोले ॥४॥

[३६२—राग परज]

हो प्यारा चेतन अब तो संभारो ज्ञान गुण धारो रे ॥टेक।
या पुद्गल संग वहुत लुभायो, यो नहीं छै तिहारो ॥१॥

तू चेतन, ज्ञान गुण रूपी, आपो आप संभारो रे ॥२॥
मन, वच, तन, कर माहीं देखो, शुद्ध स्वरूप तिहारो रे ।३।

[३६३—राग परज]

हो जागो जी चेतन अबतो सवेरो मोह नींद विसारोजी ।टेक
काल अनन्त बीते अब सोते, अबतो ग्रंथि विदारोजी ॥१।
नर भव पायो, सैनी कहायो, अब गुरु बैन चितारोजी ।२।
लब्धि देशना मिली भाग्य से, रसपति करण संभारोजी ।३।

[३६४—राग कालगडा]

तै मेंडा दरद न पायारे अज्ञानी। ॥ टेक ॥
मूरख देवी देव मनाया मुझ को क्यों मरवाया रे ॥१॥
मंगल काज दसेरा पूज्या मेरा मूल गुमाया।
तनक फांसि तन को अति पीडै यह दिल पर नहीं लायारे
तेरी मात जन्या जो तुझ को त्योंही मुझ को जाया।
अपना पूत जान जग पालै मैं भी पूत पराया रे ॥३॥
मैं मति हीन दीन तुम समरथ क्यां क्यां कर गीधाया।
भूधर इतनी पर असि वाहैं, किस गुरु ने फरमाया रे ।४।

[३६५—राग कालगडा]

सैली जयवन्ती जग हूजो,
शिव मारग की राह बतावै और न कोई दूजो ॥ टेक ॥
देव धरम गुरु सांचे जानै, झूठो मारग त्यागो।

सैली के परसाद हमारो, जिन चरनन चित लाग्यो ॥१॥
दुख चिरकाल सह्यो अति भारी, सो अब सहज विलायो।
दुरित हरन सुख करन मनोहर, धरम पदारथ पायो।२॥
द्यानत कहै सकल सन्तनको, नित प्रति प्रभुगुन गायो।
जैनधरम परधान ध्यान सौं सब ही शिवसुख पायो।३॥

५७ [३६६—राग कालगडा]

जिया तू तन में मत राचै,
तनकी प्रीति जीत नहीं तेरी चहुँगति दुख सांचै ॥ टेर ॥
यह तन अथिर जान जल वुदवुद, इक छिनमें विनसे।
पोषत पोषत विनश जात ज्यों बिजली नभ दरसै ॥१॥
अस्थि चाम श्रोणित सुमेद अरु मज्जा मांस मई।
अति गिलान उतपति वीरजकी मल भरती ज्यों थई ।२।
वात पित्त कफ जनित व्याधि की, पोट भरी सगरी।
चिदविलास आराधि ओट ये अवगुण की अगरी ॥३॥
जड लच्छण अरु जड करि चेतन दुर्गति में पटके।
याकी यारी भव भव खुवारी चित नाहक भटके ॥ ४ ॥
एक महूरत प्रीति त्याग तन ज्यों निज भूति रटै।
तो परतक्ष ज्ञान करि मंडित दृगवल चैन सटै ॥ ५ ॥

[३६७—राग कालगडा]

आज जादुपति खेलें होरी ॥ टेर ॥

समद विजयजीरा प्यारा,

जीवन प्राण हमारा, चले चित चोरी ॥ १ ॥

राज भार तज दीना,

पंच महा व्रत लीना, धरम के धोरी ॥ २ ॥

केवल ज्ञान उपायो,

हित कर शीस नमायो, नेम वर जोरी ॥ ३ ॥

[३६८—राग कालगडा]

अबतो कुमति शरम खा री हत्यारी ॥ टेर ॥

केवल वाणी शिव सुख दानी, सो तैंने नहिं धारी ।

कुगुरु कुदेवन कीनी सेवन वरती बिना विचारी ॥ १ ॥

प्रभु चर्णन तें प्रीत न तेरी, काया माया प्यारी ।

सो दिन च्यार में रेत रुलेगी, चले न तेरी लारी ॥२॥

गति गति डोलत फिर फिर बोलत, फिर फिर गावत गारी ।

पाप उपावत दुर्गति जावत, इसमें हांसिल क्या री ॥ ३ ॥

तुझे सिखावन एक न लागी, मैं तो कह कर हारी ।

जैतिराम कवि सुमति कहत है अपना पूर उठारी ॥ ४ ॥

[३६६—राग कालगडा]

या नित चितवो उठिकै भोर,
मैं हूं कौन कहांतैं आयो, कौन हमारी ठौर ॥ टेर ॥
दीसत कौन कौन यह चितवत, कौन करत है शोर ।
ईश्वर कौन कौन है सेवक, कौन करे झकझोर ॥१॥
उपजत कौन मरै को भाई, कौन डरे लखि घोर ।
गया नहीं आवत कछु नाहीं, परिपूरन सब ओर ॥२॥
और और मै और रूप हू, परनति करि लइ और ।
स्वांग धरैं डोलै याही तैं, बुधजन तेरी भोर ॥३॥

[३७०—राग कालगडा]

मेरा तुमही सो मन लगा ॥ टेर ॥
याद नहीं भूल हो वे सुना निशदिन आनद पगा ।
इस दुनिया विच ढूंढ थका मैं हो भाई तुम बिन कोई न सगा ।२।
शांति भया उर तुम वच सुनता हो साई जन्मांतर दुख दगा ।३।
थारे चरण विच बुधजन कर हो साइं निश दिन रंग रंगा ।४।

[३७१—राग कालगडा]

कहा चढ रहो मान शिखापैं, जासो सुर चक्री नहीं धापै।टेर
पुन्य उदय दोय दाम पायके करतो लापालापैं ।
दो अंगुली की लकडी लेकर, जंबूदीप की नापै ॥ १ ॥

---

१ – धार–श्मसान।

रावण से दुरगति में पहुंचे, जासु इन्द्रादिक कांपे ॥
भरत सरीसा मान भंग होय, नवनिधी है घर जाके ॥२॥
इस विधि इनका देख तमाशा अब क्यूं नैना ढांपे ।
वे नर ज्यो उतरे मान शिखरतें निश्चय शिवपुर थापें ।३।

[३७२—कालंगडा]

थारो मुख चंद्रमा देखत भ्रम तम भाग्यो, हेजी महाराज।टेर।
पाप ताप मिटि शान्ति भाव होय, चेतन निजरस पाग्यो।१
चित चकोर थिरता अब पाई, आनन्दरस सब लाग्यो ।२।
नैन छिनक अन्तर नहिं चाहत, शिवमग लालच लाग्यो।३।

[३७३—कालगड़ा]

मेरा मन लगिया, चरणन नाल ।
नाल वे हो सैयाँ होजी मांनो दिठिया जग जंजाल ॥ टेर ॥
देखत ही छबि अति हुलसायो, वे सैयाँ दिठिया जगजंजाल
आकुलता मेरी दूरभई हो सैयाँ कीनो जग निरधार ॥ २ ॥
साहिब तुम बिन और नहीं कोई, अजी मेरा मेटो अघदा भार ।३

[३७४—कालगड़ा]

कहाँ परदेशी को पतियारो ॥ टेर ॥
मनमाने तब चले पंथ को, सांझ गिनै न सवारो ॥
सबै कुटुंब छोड इतही फुनि, त्याग चले तन धारो ॥ १ ॥

दूर दिसावर चलत आपही कोऊ न राखन हारो ।
कोऊ प्रीति करो किन कोटिक, अन्त होयगो न्यारो ॥२॥
धन सु राचि धर्मसु भूलत, झूलत मोह मंझारा ।
इह विधि काल अनंत गमायो, पायो नहीं भव पारो ।३।
साँचे सुखसो विमुख होत है, भ्रम मदिरा मतवारो ।
चेतहु चेत सुनहु रे भैया, आपही आप संभारो ॥ ४ ॥

८० [२७५—राग भैरवी]

गाफिल हुवा कहाँ तू डोलै दिन जाते तेरे भरती में ॥टेर॥
चोकस करत रहत है नाहीं, ज्यो अंजुलि जल झरती में ।
तैसे तेरी आयु घटत है बचै न विरिया मरती में ॥ १ ॥
कंठ दबै तब नाहि बनेगो काज बनाले सरती में ।
फिर पछताये कुछ नहिं होवै, कूप खुदै नहीं जरती में ॥ २॥
मानुष भव तेरा श्रावक कुल यह कठिन मिला इस धरती में ।
'भूधर' भव दधि चढकर उतरो समकित नवका तरती में ।३।

८१ [२७६—राग भैरवी]

तनका तनक भरोसा नाहीं किस पर करत गुमाना रे ॥टेर॥
पैंड पैंड पर तक तक मारे, काल की चोट निशाना रे ॥१॥
देखत देखत विनश जात है, पानी बीच बुदासा रे ॥२॥
तेरे सिर पर काल खडा है जैसे तीर कमाना रे ॥ ३ ॥
कहत बनारसि सुनि भवि प्राणी यह जियरा योंही जाना रे ४।

[३७७—राग भैरवी]

चेतन भोरों पर तैं उरझ रह्यो रे,
छक मद मोह में अयानो भयो डोलें—
भोरो पर तैं उरझ रह्योरे ॥ टेर ॥
भव सुख सारे तैंने निहारे, थिर ना रहेंगे, प्रगट बिछुरेंगे
तदपि इनही में लिपट रह्योरे ॥ १ ॥
भ्रम बुद्धिधारी तैंने निहारी, अतुल गुणधारी, सुगुन हितदारी,
'थान' इन ही में निवस रह्योरे ॥ २ ॥

[३७८—राग भैरवी]

मोरी अरजी अजित जिन मानोजी।
मोह ठाडो मग रोकत जिया शिव नगर का ॥ टेर॥
इस दुरजन ने भव भव मांही,ख्वार कियो मुझ चेतनवानो १
तीनलोक इन किये जेर वश शक्ति प्रगट कर भयो है अमानो २
चैन पतित पर नजर महरकर,अब पकडो चरणों जुग वानो ३

[३७९—भैरवी]

मैं तो गिरनार जाऊंगी न मानूंगी न मानूंगी ॥ टेर ॥
सुनो तात तुमहो अविचारी, यह विपरीत कहा तुम धारी।
मेरे ब्याह करनकी बतिया कहो तो मैं नाहिं करूंगी ।१।
मेरे पियाने दीक्षा लीनी सोही शिक्षा हमको दीनी।
गिरनार गढ़पर जाय सखोरी,सैयाँ संग मैं जोग धरूंगी ।२।

गज़ुल कहै सुनोरी सखियाँ, मेरे पियाकी ऐसी मतिया।
परमानन्द होयगो तब ही करम शत्रुको नाश करूंगी ॥३॥

[३८०—भैरवी]

मैं तो थांकी आज महिमा जानी ॥ टेर ॥
काहे को भवभवमें भ्रमतो क्यों होतो दुखदानी ॥ १ ॥
नाम प्रताप तिरे अञ्जनसे, कीचक से अभिमानी ॥ २ ॥
ऐसी साख बहुत सुनियत है, जैन पुराण वखानी ॥ ३ ॥
'भूधर' को सेवा वर दीजे हम जाचक तुम दानी।

[३८१—भैरवी]

आदम जन्म खोया तैं नाहक खटका रह जायगा।
कागके उडाने को मणि वगा पछतायेगा ॥ टेर ॥
सागर हजदो सहस्र में, पोडस जन्म है मानुष के।
ताहि तू व्यतीत कर निगोद माहि जायगा ॥ १ ॥
आर्य क्षेत्र जन्म पाना, तीन वरणका उपजाना।
इन्द्रियावरण क्षयोपसमता यह अवसर न लहायगा ।२।
सुगुरु सीख समझ अब आतम अनुभव करके देख तू।
चैन तू शिवथान मांही शीघ्र ही हो जायगा ॥ ३ ॥

[३८२—भैरवी]

ऐसी चोसर जो नर खेलै सोही चतुर खिलाड़ी ॥ टेर ॥
तीन रतन हिरदामें धारे, च्यार तजो दुखदाई ॥

पंजडी पड़ी तजो विषयन की, छकडी दया विचारो रे ।१।
पाच दोय संजम को विचारो, पांच तीन मद टारोरे ।
नवधा भक्ति छै तीन संभालो धरम छह—चार विचारोरे।२
ग्यारे प्रतिमा को तुम धारो, द्वादसव्रत सिनगारोरे ।
पोबारा चारित्र संभालो, चोदह गुणस्थानधारोरे ॥ ३ ॥
पंद्रह तो परमाद विडारो सोलाकारण धारोरे ।
सतरा नेम धरम व्रतपालो, अठारे दोष निवारोरे ॥ ४ ॥
या वानी आनन्दहितकारी, आवागमन निवारोरे ।
जामन मरण मेटो जगनायक मैं छूँ शरण तिहारी रे ।७।

[३८३—भैरवी]

तूती म्हारी आदि जिनेश्वर बोल ॥ टेर ॥
दाना भी खाती तूती पानी भी पीती ।
पिंजरे में करती किलोल ॥ १ ॥
हरे वृक्षपर तूती बैठी, पचरंग लागी वाके डोर ।
"द्यानत" के गुरु ऐसे कहत हैं घट घट के पट खोल ।२।

[३८४—भैरवी]

मेरी सुमता सखी महरवान भईजी,
वीर जिनन्दा तोरी दोस्ती में ॥ टेर ॥
आप न आये मोह पठाये यही सुरत कुरवान भईजी ।१।
कीरत नाथ जगतपति स्वामी, दरश दिखा वडी वेर भईजी
आस दासकी पूरण कीजो चरण शरण लिपटाय रहीजी।२

[२८५—भैरवी]

शिव गौरी राजी थाकी चितवन मन वसकीनो
प्यारी थारी बतिया करत ॥ टेर ॥
विमल प्रभु तेरो चेरो नित चाहैं,
चरण कमल तेरो मन गहलीनो ॥१॥
सकल तत्त्व भासन निज माहीं,
दलन अविद्यातम उदयानो ॥२॥
अनल मोह की आग प्रबल को,
चैन करो अब घन बरसानी ॥३॥

[२८६—भैरवी]

मैं तो सारां जगमें भटक्यो तुम बिन हो जिनजी ॥ टेर ॥
शरण लही जिनराज तिहारी, दूर गयो करमन को खटको ॥१॥
लख चौरासी जीवाजूनमें, पार न पायो भवसिन्धु तटको ।
सेवककी अभिलाषा पूरो, मोकूं पिलादो शिवपुरको गुटको ॥२॥

[२८७—भैरवी]

म्हें तो थानें निशि दिन ध्यावां ले-ले बलहारियां ॥ टेर ॥
लोकालोक निहारत स्वामी, दीठा नैन तमारिया ॥ २ ॥
षट चालीसो गुणके धारक, दोष अठारह टारिया ॥ २ ॥
'बुधजन' शरणे आयो थाकी, शरणागत प्रतिपालिया ॥४॥

[३८८—भैरवी]

मोरा मन समझत क्यों न नादानिया ॥ टेर ॥
तेरा टांडा कैसे निभेगा आगे घास न पानिया ॥ १ ॥
बेचा खोची इहां ही करले आगै हाट न वानिया ॥२॥
सेवा तू सत्गुरुकी करले, जो पावे शिवथानिया ॥ ३ ॥

[३८९—भैरवी]

चरणन चिन्ह चितारि चित्तमें वन्दन जिन चोवीस करू रे।टेर।
रिषभ, वृषभ गज अजितनाथके संभवके पद वाज सरू ।
अभिनन्दन कपि, कोक सुमतिके पद्म पद्म प्रभु पायधरू।१।
स्वस्ति सुपारस चन्द चन्द्रके पुष्पदन्त के पद मधरू ।
सुर तरु शीतल चरण कमल में श्रेयांश गैंडा वन करू ॥२॥
भैंसा वास, वराह विमलपद अनन्तनाथके सेही परू ।
धर्मनाथ अंकुश शान्ति हिरन युत कुंथनाथ अजमीन धरू।३।
कलश मल्लि कर मुनिसुव्रत नमि कमल सतपत्र तरु ।
नेम शंख, फनि पास, वीर हरि, लखिबुधजन आनन्द भरू ।४।

[३९०—भैरवी]

किंकर अरज करै जिन साहिब मेरी ओर निहारो ॥ टेर ॥
पतित उधारण दीनदयानिधि सुन्यो तोहि उपकारो ।
मेरे अवगुन पै मत जाओ अपनो सुयश चितारो ॥ १ ॥

छवी गावरी नैना निरखी, आगम सुन्यो तिहारो ।
जात नहीं भ्रम अब क्यों मेरो, या दूषन को टारो ॥ २ ॥
अब ज्ञानी दीसत है तिनमें पक्षपात उरझारो ।
नाहिं मिलत महाव्रतधारी कैसे हो निरवारो ॥ ३ ॥
कोटि बात की बात कहत हूं, योही मतलब म्हारो ।
जोलौं भव तोलौं बुधजन को दीजे शरण सहारो ॥४॥

[३६१—भैरवी]

चेतनजी तुम जोरत हो धन सो धन चलत नहीं तुम लार।टेर।
जाकू आप जान पोषत हो सो तन जल के ह्वैंगें छार ॥ १ ॥
विषय भोग को सुख मानत हो, ताका फल है दुःख अपार ।
यह संसार वृक्ष सेमर को मान कह्यो हूँ कहत पुकार ॥२॥

[३६२—राग भैरवी]

काल अचानक ही ले जायगा गाफिल होकर रहना क्या रे ॥टेर
छिन हू तोकू नाहिं बचावै,तो सुभटन का रखना क्या रे ।१।
रंच सुवाद करन के काजैं, नरकन में दुख भरना क्या रे ।
कुलजन पथिकन के हित काजै, जगत जाल में फँसना क्या रे ।२
इन्द्रादिक कोउ नाहिं बचैया, और लोक का शरणा क्या रे ।
निश्चय हुवा जगत में मरना कष्ट पडे तब डरना क्या रे ३
अपना ध्यान किये खिर जावै तो करमनि का हरना क्या रे ।
अब हितकर आरत तज बुधजन जन्म जन्म में जरना क्या रे ।।

[३६३—राग भैरवी]

जिया तोहे समझायो सौ सौ बार ॥ टेर ॥
देख सुगरु की परहित में रति हित उपदेश सुनायो ॥१॥
विषय भुजंग सेय सुख पायो पुनि तिनसु लिपटायो ।
स्वपद विसार रच्यो परपद में, मदरत ज्यों बोरायो ॥ २ ॥
तन धन स्वजन नहीं हैं तेरे, नाहक नेह लगायो ।
क्यों न तजे भ्रम चाख समामृत, जो नित संत सुहायो ।३॥
अबहु समझ कठिन यह नरभव, जिनवृष विना गमायो ।
ते विलखे मणि डार उदधि में 'दौलत' को पछतायो ॥४॥

[३६४—राग भैरवी]

चेतन अखियाँ खोलो ना तेरे पीछे लागे चोर ॥ टेर ॥
मोह रूपी मद पान कर रे पडे रहे बेसुद्धि ।
नैना मींचि सो रहे रे हित की खोई बुद्धि ॥ १ ॥
याहि दशा लख तेरी चेतन, लीनो इन्द्रिन घेर ।
लूटी गठरी ज्ञान की रे, अब क्यों कीनी देर ॥ २ ॥
फांसी करमन डाल गलेरे नर्कन माहि दे गेर ।
पडे वहाँ दुख भोगने रे कहा करोगे फेर ॥ ३ ॥
जागो चेतन चातुरां तुम दीज्यो निद्रा त्याग ।
ज्ञान खडग ल्यो हाथ में रे, इन्द्रिय ठग भग जाय ॥ ४ ॥
उत्तम अवसर आ मिल्यो रे छांडो विषयन प्रीति ।
'ज्योति' आतम हित करोरे, नहि जाय अवसर बीति ॥५॥

[२६५—राग भैरवी]

घड़ी धन आज की येही सरे सब काज मोमन का।
गये अघ दूर मन भज के लगा शुभ आज जिनवरका।टेग
बिपति नाशी सकल मेरी, भरे भंडार संपति का।
सुधाके मेघ बरषे लगा सुख आज जिनवर का॥ १ ॥
भई परतीति यह मेरे नहीं हो देव देवन का।
टूटी मिथ्यात्व की डोरी, लगा सुख आज जिनवर का।२॥
विरद ऐसा सुना मैंने जगत के पार करने का।
'नवल' आनन्द हू पायो लगा सुख आदि जिनवरका ॥३॥

[२६६—राग भैरवी]

तिहारा चन्द मुख निरखे स्वपद रुचि मुझको आई है।
ज्ञान चमका परापर की मुझे पहिचान आई है ॥ टेर ॥
कला बढ़ती है दिन दिन काम की रजनी विलाई है।
अमृत आनन्द शासन ने शोक तृष्णा बुझाई है ॥ १ ॥
जो इष्टानिष्ट में मेरी, कल्पना थी नशाई है।
मैंने निज साध को साधा उपाधी सब मिटाई है ॥ २ ॥
धन्य दिन आज का 'न्यामत' छबि जिन देख पाई है।
सुधर गई आज सब बिगड़ी, अचल ऋधि हाथ आई है।३

[२६७—राग भैरवी]

नाचे छुम छुम छुम प्यारी, सखियन संग सारी,

गावो जिनगुण सारी हा हा हा ॥ टेर ॥
श्री जिन देव सुगुरु की मूरत देखत ही सब पाप गये-
छुम छुम छुम छुम-दरशन पाये मंगल छाये-
गावो जिन गुण सारी हा हा हा सारी हा हा हा ।
गावो जिन गुण सारी, हा हा हा ॥ १ ॥

[३६८—राग भैरवी]

प्यारी रसना वे श्री जिनवर क्यों न बोल ॥ टेर ॥
मिथ्यावाद विवाद जगत है अजब गजब मत बोल ॥टेर॥
क्रोध लोभ मोह मद माया, दिलदा पडदा खोल ॥२॥
'द्यानत' के गुरु ऐसे कहत हैं घट घट के पटखोल ॥३॥

[३६६—राग भैरवी]

मूलन बेटा जायोरे साधो, जाने खोज कुटम्ब सब खायो ।टेर
जनमत माता ममता खाई मोह लोभ दोऊ भाई ।
काम क्रोध दोउ काका खाये खाई तृष्णा दाई ॥ १ ॥
पाँच पाप पडोसी खाये अशुभ करम दोउ मामा ।
मान नगर को राजा खायो फैल पड्यो सब गामा ॥२॥
दुरमति दादी विकथा दादो मुख देखत ही मूवो ।
मंगलाचार वधाई बाजे जब यह बालक हुवो ॥ ३ ॥
नाम धरयो बालक को सूधो रूपवरण कछु नाहीं ।
नाम धरन्ता पंडित खाया कहत बनारसि भाई ॥ ४ ॥

[४००—राग भैरवी]

थे तो म्हाने प्यारा लागो जी राज ॥ टेर ॥
व्याह न काज लिये संग जादू और कृष्ण महाराज ॥१॥
सब जग अथिर जान कर छांडे आपन काज सुधार ॥२॥
मेरी चूक कहां है स्वामी न्याय करो निरधार ॥३॥
या संसार-कूपतैं साहिब तुमही काढनहार ॥ ४ ॥

[४०१—राग बिलावल]

सुन जियारे खोवो छो दिन रातडी ॥ टेर ॥
घडी घडी तेरी आयु घटत है आवत देगो जम लातडी ।१।
पूजा दान शील व्रत पालो और करो शुभ जातडी ॥२॥
आतम काज किया जो चाहो सुन सतगुरु की बातडी ॥३॥

[४०२—राग बिलावल]

यह महबूब हमारा मैंडे जान,
पास रहन्दा सांडे नजर न आवन्दा ॥ टेर ॥
काया की नगरी दस दरवाजा,
न्याय चुकाजा हमारा, मैंडे जान०॥ १ ॥
देह विनाशी चामको वासी,
क्या गुण देख लुभाया, मैंडे जान०॥ २ ॥
शुद्ध स्वरूप सदा अविनाशी,
'द्यानत' देख सयाना, मैंडे जान०॥ ३ ॥

[४०३—राग बिलावल]

देख्यो री ! कहीं नेमिकुमार ॥ टेर ॥

नैननि प्यारो नाथ हमारो, प्रान जीवन प्रानन आधार ॥१॥

पीव वियोग विथा बहु पीरी[1] पीरी[2] भई हल्दी उनहार[3] ।

होऊँ हरी तबही जब मेटौं, श्यामवरन सुंदर भरतार ॥२॥

विरह नदी असराल[4] बहै उर, बूड़त हौं वामैं निरधार ।

'भूधर' प्रभु पिय खेवटिया बिन, समरथ कौन उतारनहार ।३

[४०४—राग बिलावल]
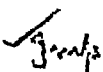
मंगल गावोरी भई है बधाई,
प्रभु को आज जन्म दिन ॥ टेर ॥

धन्य अयोध्या पिता थे नाभि,
धन्य मोरा देवी माता धन धन ॥ १ ॥

वंश इच्वाकु भयो बडभागी,
जामें प्रकटे रिषभ जिनन्द ।

प्रथम तीर्थंकर आदि जिनेश्वर ।
जग प्रभु वन्दत छिन छिन ॥ २ ॥

[४०५—राग बिलावल]

सुमर सदा मन आतमराम, सुमर सदा मन आतमराम ।टेर।

स्वजन कुटुम्बी जन तू पोखे, तिनको होय सदैव गुलाम ।

१—पीरी = [illegible] । २—पीली । ३—समान । ४—अथाह ।

सो तो हैं स्वारथ के साथी, अन्तकाल नहि आवत काम ।१।
जिमि मरीचिका में मृग भटके, परत सो जब ग्रीषम अति घाम ।
तैसे तू भव माहीं भटके धरत न इक छिनहू विसराम ।।२।।
करत न ग्लानी अब भोगन में धरत न वीतराग परिनाम ।
फिरकिमि नरकमाहिं दुखसहसी, जहां सुख लेश न आठोंजाम।३
तातैं आकुलता अब तजिकै, थिर ह्वै बैठो अपने धाम ।
'भागचन्द' वसि ज्ञान नगर में, तजि रागादिक ठग सबग्राम ।४

[४०६—राग प्रभाती)

मेटो विथा हमारी प्रभूजी मेटो विथा हमारी ।। टेर ।।
मोह विषमज्वर आन सतायो देत महा दुःखभारी ।
योतो रोग मिटनेको नाहीं,, औषध विना तिहारी ।।१।।
तुम ही वैद धन्वन्तर कहिये, तुमही मूल पसारी ।
घट घट की प्रभु आपही जानो क्या जाने वैद अनारी ।२।
तुम हकीम त्रिभुवनपति नायक, पाऊँ टहल तुम्हारी ।।
संकट हरण चरण जिनजी का नैनसुख शर्ण तिहारी ।।२।।

[४०७—प्रभाती]

मैं तो आऊं तुम दरशनचा, कर्मशत्रु आवै आडो ।।टेर।।
लख चौरासी में भटकावे पकड गहै मोकूं गाढो ।
चहूँ दरश तुम दिलसे मैं तो यही मोसे करै राडो ।।

नरभव जमा करूँ शुभ क्रिया, लूटत है येही दे के धाडो।
जमके दूत सजे यों डोले, ज्यों तोरण आवे लाडो ॥२॥
बंध तुडाकर तुमपै आयो, इन शत्रुन को तुम ताडो।
शरण गहे को विरद निहारो, शिव द्यो 'रतन' जजै ठाडो॥३

[४०८—प्रभाती]

जिनवाणी सु मेरो मन लाग्योजी ॥ टेर ॥
मोह नींद मेरी दूर भई है बहुत दिनन में जाग्योजी ॥१॥
ज्ञान भानु परकाश भयो है, भव भव को भ्रम भाग्योजी।२।
कान सुनत ही आनन्द उपजत, आत्मीक रस पाग्योजी ।३।

[४०९—प्रभाती]

भोर भयो सब भविजन मिलिकै, जिनवर पूजन आवो।टेर।
अशुभ मिटावो, पुण्य बढावो, नैनन नींद गमाओ ॥१॥
तनको धोय धारि उजरे पट, सुभग जलादिक ल्यावो ।२।
वीतराग छवि हरखि निरखिकै, आगमोक्त गुण गावो ।३।
शास्तर सुनो भनो जिनवानी, तप संजम उपजावो ।
धरि सरधान देव गुरु आतम, सात तत्त्व रुचि लावो ।
दुःखित जनकी दया लाय उर, दान चार विधि ध्यावो ।
राग दोष तजि भजि निजपद को 'बुधजन' शिवपद पावो।४।

[४१०—राग आसावरी]

प्रभु तुम सुमरन ही में तारे ॥ टेर ॥
सूअर सिंह नौल वानरने, कहो कौन व्रत धारे ॥१॥

सांप आप करि सुरपद पाया, स्वान स्याल भय जारे।
भेक वोक गज अमर कहाये, दुरगति भाव विदारे ॥२॥
भील चोर मातंग जु गनिका, बहुतनि के दुख टारे।
चक्री भरत कहा तप कीनों, लोकालोक निहारे ॥३॥
उत्तम मध्यम भेद न कीन्हों, आये शरण उबारे।
'द्यानत' राग दोष बिन स्वामी, पाये भाग हमारे ॥४॥

[४११—राग आसावरी]

महमानों से काहे को लड़िये,
वह तो आज रहेंगे कल होंगे विदा ॥ टेर ॥
यतन जतन कर नगर बसाया, नेह का मेला भराया।
अपने सतगुरु सांची कहत हैं, सतगुरु कहे सोही करिये ।१।

५५ [४१२—राग आसावरी]

जीव ! तू भ्रमत सदीव अकेला, संग साथी कोई नहिं तेरा ।टेर।
अपना सुख दुख आप हि भुगतै, होत कुटुंब न भेला।
स्वार्थ भयैं सब बिछुरि जात हैं, विघट जात ज्यों मेला ।१।
रच्छक कोई न पूरन ह्वै जब, आयु अन्त की वेला।
फूटत पारि बधत नहीं जैसे, दुद्धर जल को ठेला ॥२॥
तन धन जीवन विनशि जात ज्यों, इन्द्र जाल का खेला।
'भागचन्द' इमि लख करि भाई, हो सतगुरु का चेला ॥३॥

[४१३—राग आसावरी]

श्री अरहंत शरण तोरी आयो ॥ टेर ॥
सुरनर मुनि तुमको सब ध्यावे जिन सुमरे तिनही सुखपायो १
सेठ धनंजय स्तोत्र रच्यो तब ताके सुत को विष उतरायो ।
मानतुङ्ग के बंधन तोडे वादिराज के कोढ मिटायो ॥२॥
कुमदचन्द्र प्रभु पारस भेट्यो, सागर में श्रीपाल बचायो ।
समंतभद्र शिव को नहीं वंद्यो, चंदप्रभु तबही प्रगटायो ३
उर्मिला की वांछा पूरी भविष्यदत्त को घर पहुंचायो ।
सिंहोदर के संकट मांही, वज्र करण को मान घटायो ।४
भक्त सहाय करो बहु तेरी, तिनको कथन पुरान बतायो ।
भई प्रतीति सुनी जब महिमा तब 'जगराम' शरण चितलायो ।५

[४१४—राग आसावरी]

जब निज ग्यान कला घट आवै, तब भोग जगत न सुहावै टेर
मैं तनमय अरु तन है मेरा फिर यह बात न भावै ॥१॥
खाज खुजावत मधुर सी लागे फिर तन अति दुख पावे ।
त्यों यह विषय जान विषवत तज काल अनन्त गुमावे ।२।
स्वपनेवत् सब जग की माया तापै नांही लुभावे ।
'चैन' छांड मनकी कुटिलाई तैं शीघ्र ही शिव जावे ॥३॥

(४१५—राग आसावरी)

और सबै जगद्वन्द मिटावो, लो लावो जिन आगम ओरी टेर
है असार जगद्वन्द बन्धकर, यह कछु गरज न सारत तोरी ।

कमला चपला यौवन सुरधनु, स्वजन पथिकजन क्यों रति जोरी
विषय कषाय दुखद दोनों ये, इनतै तोर नेहकी डोरी ।
पर द्रव्यन को तू अपनावत, क्यों न तजे ऐसी बुधिभोरी ।२
बीत जाय सागरथिति सुरकी, नरपरजायतनी अति थोरी ।
अवसर पाय 'दौल' अब चूको, फिर न मिलै मणि सागरबोरी ३

५८ [४१६—आसावरी]

और अबै न कुदेव सुहावै, जिन थाके चरनन रति जोरी।टेक।
काम मोहवश गहैं असन असि अङ्क निशङ्क धरै तियगोरी ।
औरनके किम भाव सुधारै, आप कुभाव-भावधर धोरी ।१।
तुम विनमोह अकोह छोहविन, छके शान्तरस पीय कटोरी ।
तुम तज सेय अमेय भरी जो, जानत हो विपदा सब मोरी ।२
तुम तज तिनै भजै शठ जो सो दाख न चाखत खात निमोरी ।
हे जगतार उधार दौल को निकट विकट भव जलधि हिलोरी ३

[४१७—आसावरी]

मेरी बेर कहा ढील करी जी ।। टेक ।।
सूली सौं सिंहासन कीनों, सेठ सुदर्शन विपति हरीजी ।।१।।
सीता सती अगनि में बैठी, पावक नीर करी सगरीजी ।।
वारिसेन परि खड्ग चलायो, फूलमाल कीनी सुथरीजी २

धन्य। वापी परयो निकाल्यो, ता घर रिद्धि अनेक भरीजी।
श्रीपाल सागरतें तारयो राजभोग के मुक्ति वरीजी ॥ ३ ॥
सांप हुयो फूलनकी माला, सोया पर तुम दया धरीजी।
'द्यानत' मैं कछु याचत नांही, करि वैराग दशा हमरीजी ॥

[४१८—आसावरी]

अरे मन पापनसों नित डरिये ॥ टेर ॥
हिंसा झूंठ वचन अरु चोरी, परनारी नहीं हरिये ।
निज परको दुखदायन डायन तृष्णा वेग विसरिये ॥१॥
जासों परभव बिगडे वीरा ऐसो काज न करिये।
क्यों मधु-बिन्दु विषय को कारण अंधकूप में परिये ॥२॥
गुरु उपदेश विमान बैठके यहांते वेग निकरिये।
'नयनानन्द' अचल पद पावें भवसागर सो तिरिये ॥३॥

[४१९—आसावरी]

तू काहेको करत रति तनमें,
यह अहितमूल जिम कारा सदन ॥ टेक ॥
चरमपिहित पलरुधिरलिप्त मलद्वार स्रवे छिनछिनमें ॥१॥
आयु-निगड़ फंसि विपति भरै सो, क्यों न चितारत मनमें ।२।
सुचरन लाग त्याग अब याको, जो न भ्रमै भव-वनमें ।
'दौल' देहसौं नेह देहको, हेतु कह्यो ग्रन्थनमें ॥ ४ ॥

57 [४२०—आसावरी]

आतम अनुभव करना रे भाई ॥ टेक ॥
जब लौं भेद-ज्ञान नहि उपजै, जनम मरन दुख भरना रे ।१।
आगम पढ़ नव तत्त्व बखानै, व्रत तप संजम धरना रे ।
आतम-ज्ञान बिना नहिं कारज, जोनी संकट परना रे ॥२॥
सकल ग्रन्थ दीपक हैं भाई, मिथ्या तमके हरना रे ।
कहा करैं ते अन्ध पुरुपको, जिन्हैं उपजना मरना रे ॥३॥
द्यानत जे भवि सुख चाहत हैं तिनको यह अनुसरना रे ।
'सोहं' ये दो अक्षर जपकै, भव-जल पार उतरना रे ॥४॥

[४२१—आसावरी]

नरभव पाय फेर दुख भरना ऐसा काज न करना हो ॥टेर॥
नाहक ममत ठान पुद्गलसौं, करमजाल क्यों परना हो ।१।
यह तो जड, तू ज्ञान अरूपी तिल तुप ज्यों गुरु वरना हो ।
राग दोष तजि भजि समताको, कर्मसाथके हरना हो ।२।
यो भव पाय विषय सुख सेना, गजचढ इंधन ढोना हो ।
'बुधजन' समझ सेय जिनवर पद, जो भवसागर तिरना हो ४

58 [४२२—आसावरी]

कबै निर्ग्रन्थ स्वरूप धरूंगा, तप करके मुक्ति वरूंगा ।टेक।
कब गृहवास आस सब छांड़ू कब वनमें विचरूंगा ॥
बाह्य अभ्यन्तर त्याग परिग्रह उभय लिंग सुधरूंगा ॥१॥

होय एकाकी परम उदासी पंचाचार चरूंगा ।
कब थिर योग करूं पद्मासन, इन्द्रिय दमन करूंगा ॥२॥
आतमध्यान सजि दिल अपनो, मोह अरी सू लरूंगा ।
त्याग उपाधि समाधि लगाकर,परिषह सहन करूंगा ।३।
कब गुणथान श्रेणी पै चढके, कर्म कलंक हरूंगा ॥
आनन्दकन्द चिदानन्द साहिब, बिन सुमरे सुमरूंगा ।४।
ऐसी लब्धि जब पाऊं तब मैं, आपहि आप तरूंगा ।
अमोलक सुत हीराचन्द कहत है बहुरि न जगमें परूंगा ।

[४२३—आसावरी]

रे भाई मोह महा दुखदाता ॥ टेक ॥
वस्तु बिरानी अपनी माने विनशत होत असाता ॥१॥
जास मास जिस दिन छिन विरियां जाको होसी घाता ।
ताको राख सके ना कोई सुरनर नाग विख्याता ॥ २ ॥
सब जग मरत जात नित प्रति नहीं राग बिना बिललाता ।
बालक मरै करै दुख धाय न रुदन करै बहुमाता ॥ ३ ॥
मूंसे हने बिलाव दुखी नहीं मुरग हने रिस खाता ।
'द्यानत' मोह मूल ममता को नाश करै सो ज्ञाता ॥४॥

[४२४—आसावरी]

प्रभु तेरी महिमा वरणी न जाई ॥ टेक ॥
इन्द्रादिक सब तुम गुण गावत, मैं कछु पार न पाई ॥१॥

षट द्रव्य में गुण व्यापत जेते, एक समय में लखाई ।
ताकी कथनी विधि निषेधकर द्वादस अंग सवाई ॥ २ ॥
क्षायिक समकित तुम ढिग पावत और ठौर नहीं पाई ।
जिन पाई तिन भव तिथि गाही, ज्ञानकी रीति बढ़ाई ॥३॥
मो से अल्प बुधि तुम ध्यावत श्रावक पदवी पाई ।
तुमही तें अभिराम लखूं निज राग दोष बिसराई ॥४॥

५९ [४२५—राग जौनपुरी]

भजन सम नहीं काज दूजो ॥ टेक ॥
धर्म अंग अनेक यामें एक ही सिरताज ।
करत जाके, दुरत पातक, जुरत संत समाज ॥
भरत पुण्य भण्डार यातें, मिलत सब सुख साज ॥१॥
भक्त को यह इष्ट ऐसो ज्यों क्षुधित को नाज ।
कर्म इंधन को अगनि सम, भव जलधि को पाज ।
इन्द्र जाकी करत महिमा, कहो तो कैसी लाज ॥
जगतराम प्रसाद यातें, होत अविचल राज ॥ २ ॥

६० [४२६—राग जौनपुरी]

आनन्द मंगल आज हमारे ॥ टेक ॥
श्री जिन चरण कमल परसत ही, विघ्न गए सब भाज ।१।
सफल भई अब धार कामना, समकित हृदय विराज ।२।
नैन वचन सुन तन मन, हरषे, निरखे श्री जिनराज ॥३ ॥

[४२७—राग सारंग]

दरशन की छवि सोहै भारी ॥ टेर ॥

पद्मासन दृगदृष्टी धारै, ध्यानारूढ वीतरागी ॥१॥

अतिशयकारी मंगलकारी, शिव सुखधारी भयहारी ।२॥

शिवपद गामी जगविच नामी, त्रिभुवन स्वामी अघहारी ।३।

'चोथमल्ल' भव भय टारनको, शरण गही जिनवर थारी ।४।

[४२८—राग सारग]

इक अरज सुनो साहिब मेरी ॥ टेर ॥

चेतन एक बहुत जड घेरयो, दई आपदा बहुतेरी ॥१॥

हम तुम एक दोय इन कीने, बिन कारन बेडी गेरी ॥२॥

'द्यानत' तुम तिहुँ जगके राजा, करो जु कछु करुणा मेरी ।३।
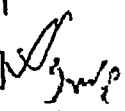
[४२९—राग सारग]

तुमको जिनराज लाज मोरी ॥ टेर ॥

अशुभ कर्म मोहे घेर रहे हैं, यातें छुडावो कर नेरी ॥१॥

तुम सम और न देव जगत में, सब जग में देख्यो हेरी ।२॥

तुमको दीन दयाल जानके, याते शरण गही तोरी ॥३॥

बलदेव को निज दास जान के मेटो भव भव की फेरी ।४।

[४३०—राग सारग]

देख्यो थारो शुद्ध स्वरूप रे,

ज्ञानी जिया जान के दर्पण ऊजलो ॥ टेर ॥

कर कर ममत कुबानरे, जिया म्हारा

गति गति में रुलतो फिरयो ॥ १ ॥
थारे देह के ठेठ को मिलाप रे, जिया म्हारा
तू ही छुडावै तो छूटसी ॥ २ ॥
यो ही थारो सहज सुभाव रे, ज्ञानी जिया
सब आ झलके ज्ञान में ॥ ३ ॥
बुधजन आपो संभाल रे, जिया म्हारा
तूं निकसे जग जाल से ॥ ४ ॥

61 [४३१—राग सारग]

मन लाग्यो मेरो जैन फकीरी में ॥ टेर ॥
जो सुख है जिनराज भजन में, सो सुख नाहिं अमीरीमें ।१।
भली बुरी सबकी सुन लीजे, कर गुजरान गरीबी में ॥२॥
नवल तनी अरदास यही है, मत रहना मगरुरी में ॥२॥

62 [४३२—राग सारग]

निजपुर पें आज मची होरी ॥ टेर ॥
उमंग चिदानदजी इन आये, इत आई सुमती गोरी ।१।
लोकलाज कुलकाणि गमाई, ज्ञान गुलाल भरी झोरी ।२॥
समकित केसर रंग बनायो, चारित की पिचुकी छोरी ।३।
गावत अजपा गान मनोहर, अनहद झरसौं बरस्योरी ।४।
देखन आये बुधजन भीगे, निरख्यौ ख्याल अनोखोरी ।५।

[४३३—राग सारग]

भवि देखि छवी भगवान की ॥ टेर ॥

सुन्दर सहज सोम आनन्दमय, दाता परम कल्यानकी ।१।

नासादृष्टि मुदित मुखवारिज, सीमा सब उपमानकी ।

अंग अडोल अचल आसन दिढ़, वही दशा निजध्यानकी ।

इस जोगासन जोगरीतिसौं, सिद्ध भई शिवथानकी ।

ऐसें प्रगट दिखावै मारग, मुद्रा धात पखानकी ॥ ३ ॥

जिस देखें देखन अभिलाषा, रहत न रंचक आनकी ।

तृपत होत 'भूधर' जो अब ये, अंजुलि अमृतपान की ॥४॥

[४३४—राग सारग]

तेरो करि लै काज वखत फिर ना ॥ टेक ॥

नरभव तेरो वश चालत है, फिर परभव परवश परना ।१।

आन अचानक कंठ दबेंगे, तब तोकौं नाहीं शरना ।

यातैं विलंब न ल्याय बावरे, अब ही कर जो है करना ।२।

सब जीवन की दया धार उर, दान सुपात्रनि कर धरना ।

जिनवर पूजि शास्त्र सुनि नित प्रति, बुधजन संवर आचरना ।

[४३५—राग सारग]

केशरिया के द्वार मची होरी ॥ टेर ॥

केसर चंदन अगर मिला के चरणों पर चरचूं भौरी ॥१॥

या पूजन ते दूर होत हैं, अशुभ करम की झकझोरी ।२।

सेवक की अब यही अरज है, भव भव शरण लेहूँ तोरी ।३।

[४३६—राग सारग]

महिमा है अगम जिनागम की ॥ टेक ॥
जाहि सुनत जड भिन्न पिछानी, हम चिन्मूरति आतमकी ।१।
रागादिक दुखकारन जाने, त्याग बुद्धि दीनी भ्रमकी ।
ज्ञान ज्योति जागी घर अन्तर, रुचि बाढी पुनि शमदमकी २।
कर्म बंधकी भई निरजरा, कारण परंपरा क्रमकी ।
भागचन्द शिव लालच लागो, पहुँच नहीं है जहं जमकी ।३।।

[४३७—राग सारग]

नित ध्यावो कर जिन जासों शिव पासी ॥ टेर ॥
अष्ट करम के बंधन तेरें, आपहीं खुलता जासी ।। १।।
ध्यान किया निज रूप लखावै, स्वर्ग संपदा होय दासी ।२।।
जिन ध्याये तिन शिव सुख पाये, आगम में सतगुरु भाषी ।३।
'पारश' ध्यान किया तिनके घट, ज्ञान जोति परगट भासी ।४

[४३८—राग सारग]

चेतै छै तो आछी वेल्यां चेतरे ज्ञानीजिया,
मोह अन्धेरी शिवपुर आंतरो ॥ टेक ॥
या देही को झूंठो छै अभिमानरे ज्ञानी जिय।
विनश होवैरे ढेरी राखकी ॥ १ ॥
तू मत जाने यो मेरो परिवार रे, ज्ञानी जिया
लैर न आयो नाहीं जावसी ॥ २ ॥

लक्ष्मी तो दिन चार रे ज्ञानी जिया
काज सुधारे क्यों न आपनो ॥ ३ ॥
पूरब पुन्य प्रभावरे ज्ञानी जिया
उत्तम श्रावक कुल लियो ॥ ४ ॥
पाये २ श्री जिनराजरे ज्ञानी जिया
"जौंहरी" चित्त चरणन धरो ॥ ५ ॥

[४४०—राग मारग]

जिन थाकी छवि मो मन भावै, म्हारो अंगअंग हुलसावैं ।टेर।
सहस्र नेत्र कर सुरपति निरखे तोहू तृप्ति न थावै ।
निरख निरख तोहू पद स्वामी, रंचक मन नहिं धावै ।१।
कोटि दिवाकर और निशाकर, गणधर पार न पावै ।
पूर्व पुन्य उदय तैं प्रभुजी, तुमसे स्वामी पावै ॥ २ ॥
पतित उधारन विरद तिहारो, सुन सुन मन हरपावै ।
"नेम" तिहारो चेरो स्वामी, तीन रतन बकसावै ॥ ३ ॥

[४४०—राग सारग]

दर्शन को उमावो म्हारे लागि रह्यो ॥ टेर ॥
निशि वासर मेरे ध्यान तिहारो—
चरणन सों चित पाग रह्यो ॥ १ ॥
जब तें मूरति नैना निरखी,
तब तैं पातिक भाग रह्यो ॥ २ ॥

जगत राम प्रभु गुण सुमरण तैं,
निज गुण अनुभव जाग रह्यो ॥ ३ ॥

[४४१ - राग सारग]

उजरो पथ है शिव ओरी को ॥ टेर ॥
पंच पाप को त्याग है जामें, संग्रह समता गौरी को ॥१॥
उन्नति समिति गुप्ति की बढावो, तज असंजम थोरी को ।२।
दुरलभ मिल्यो तजो नहिं पारश ज्यों चिंतामणि जौंहरी को ।३

[४४२—राग सारङ्ग]

मोकों तारोजी तारो किरपा करके ॥ टेर ॥
अनादिकाल को दुखी रहत हूं टेरत हूॅ जमते डरके ॥१॥
भ्रमत फिरत चारों गति भीतर, भवभवमाहिं मरिमरिके ।
डूबत अगम अथाह जलधि में,राखो हाथ पकड करिके।२।
मोह भरम विपरीत वसत उर, आपन जानो निज करिके ।
तुम सब ज्ञायक मोहि उबारो,'बुधजन' को अपनो करिके।३

[४४३—राग सारङ्ग]

समकित बिन जीव जगत भटक्यो ॥ टेर ॥
मारन ताडन सह्या नरकमें, काट करोत शिला पटक्यो ।१।
क्रोध लोभ छल मान बुराई, सात व्यसन मांही लिपट्यो२
बार बार श्रीगुरु समझावै, प्रभु चरणन में मन अटक्यो।३
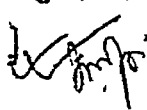
[४४४—राग सारङ्ग]

भजले श्री भगवान तेरो दाव लग्यो है ॥ टेर ॥
ज्ञान सहित नरदेही पाई, कथा सुनन को कार्न ॥ १ ॥
नैननसे सुन्दर प्रभु निरखो, रसनातें गुणगान ॥ २ ॥
विषय कषाय त्याग उर सेती, कर जग प्रभुको ध्यान ॥३

८५ [४४५—राग सारङ्ग]

तन देख्या अथिर घिनावना ॥ टेर ॥
बाहर चाम चमक दिखलावै माहीं मैल अपावना।
बालक ज्वान बुढापा मरना, रोग शोक उपजावना।
अलख अमूरति नित्य निरंजन, एक रूप निज जानना।
वरन फरस रस गंध न जाके, पुन्य पाप विन मानना ॥२
कर विवेक उर धार परीक्षा, भेद-विज्ञान विचारना।
'बुधजन' तनतें ममत मेटना, चिदानंद पद धारना ॥३।

[४४६—राग सारंग]

कीज्यो गुरुवाणी मोरी सहाय, माता जिनवाणी महाराणी।
अर्हंत मुखसे तू निकसी है, स्याद्वादमय वाणी।
आतमध्यानी तोकूं ध्यावै पावै शिव तिय राणी ॥ १ ॥
सप्त तत्त्वको तैं दरसाया, सबका भरम मिटाया।
लोकालोक सरूप चताया, भविजन आनन्द पाया ॥२॥
पूर्वापर में भेद नहीं कछु हेत न कोउ बाधै।

नैगम संग्रह आदिक नयसे, द्रव्यों को सब साधै ॥३॥
द्वादशांग में गणधर गुरुने मुनिजन को सिखलाई ।
राग द्वेष तज देखै लोक उनहीके मनभाई ॥ ४ ॥
जीव अनन्ता भवदधि तारे, अविचल सुख सब पाया ।
'चिमन'सदा यह सेवक तेरो,तुम गुण निश दिन गाया॥५॥

[४४८—राग सारंग]

होजी मद छक मानीजी, थे समझो आतम ज्ञानीजी,
ज्ञानीजी थे, आछयोजी नरभव अबके पाइयो ॥ टेर ॥
लखि चौरासी योनि में जी, (चेतन) थिरता कबहु न पाय ।
रागद्वेष वैंरी लाग्या कोई लीना नाच नचाय ॥ १ ॥
जीव करम संजोगसे जी वरण वरण के पाय ।
जैसे बहुरू प्यावने भिन भिन स्वांग बनाय ॥ २ ॥
चहुंदिशि बाजी खेलताजी बाजी हारया पाय ।
अबके दाव भलो लग्योजी, लीज्यो धन अधिकाय ॥३॥
आयो मूंठी बांधके जी जासी हाथ झुलाय ।
थे पूंजी जो लाईया सो दिन दिन बीती जाय ॥४॥
पूरब पुन्य उदय भयोजी, दुरलभ नर भव पाय ।
जैन धरम पालो सदा, यह अवसर बीता जाय ॥ ५ ॥
गुरु उपदेश भला दियोजी, सांची श्रद्धा लाय ।
करम काट निर्भय 'चिमन' कोई निराकार पद पाय ॥६॥

६९ [४४८—राग सारग]

चेतन निज भ्रमतैं भ्रमत रहै ॥ टेर ॥

आप अभंग तथापि अंग के, संग महा दुख पुंज वहै।
लोहपिंड संगति पावक ज्यों, दुर्धर घनकी चोट सहै ॥
नामकर्म के उदय प्राप्त नर नरकादिक परजाय धरै।
तामें मान अपनपौ विरथा, जन्म जरा मृतु पाय डरै ।२।
कर्ता होय रागरुप ठानै, परको साक्षी रहत न यहै।
व्याप्य सुव्यापक भाव विना किमि, परको करता होत न यहै ३।
जब भ्रमनींद त्याग निजमें निज, हित हेत सम्हारत है।
वीतराग सर्वज्ञ होत जब, भागचन्द हित सीख कहै ॥ ४ ॥

[४४९—राग सारग]

कर कर आतमहित रे प्रानी ॥ टेर ॥

जिन परिणामनि बंध होत सो परनति तज दुखदानी ॥१॥
कौन पुरुष तुम कहां रहत हौ, किहिकी संगति रति मानी।
जे परजाय प्रकट पुद्गल मय, ते तैं क्यों अपनी जानी ॥२।
चेतनजोति झलक तुझ माही, अनुपम सो तैं विसरानी।
जाकी पटतर लगत आन नहिं, दीप रतन शशि सूरानी ।३।
आपमें आप लखो अपनो पद, 'द्यानत' करि तन मन वानी।
परमेश्वर पद आप पाइये, यौं भाषैं केवलज्ञानी ॥ ४ ॥

[४४८—राग निहालदे]

कहिवे को मन सूरमा करने को काचा।
विषय छुडावें औरको आपहि अति माचा ॥ टेर ॥
मिश्री मिश्री के कहे मुख होय न मीठा।
नीम कहें मुख कटु हुआ कहूं सुना न दीठा ॥ १ ॥
कहने वाले बहुत हैं करने को कोई।
कथनी लोक रीझावनी, करनी हित होई ॥ २ ॥
कोटि जनम कथनी कथैं, करनी विन दुखिया।
कथनी विन करणी करैं द्यानत सो सुखिया ॥ ३ ॥

[४४९—निहालदे]

मानुषभव पानी दिया, जिन राम न जाना,
पाप अनेक उपायके गये नरक निदाना ॥ टेर ॥
पुन्य उदय संपति मिली, फूल्या न समाना।
पाप उदय सब खिरगई, हाहा बिललाना ॥ १ ॥
तीरथ बहुतेरे फिरे, अरचे पापाना।
राम कहू नहिं पाइयो हुये हैराना ॥ २ ॥
राम मिलन के कारणे दिये बहु दाना।
आठ पहर शुकज्यों रटैं नहीं रूप पिछाना ॥३॥
तलै कहे ऊपर कहे पावै न ठिकाना।
देखे जाने कौन है यह ज्ञान न आना ॥ ४ ॥

वेद पढ़ै केई तप तपै, केई जाप जपाना।
ज्ञान बिना खोटी बढ़ै चाहै कल्याना ॥ ५ ॥
राम मजे घट घट बसै कहीं दूर न जाना।
ज्यों चकमक में आग त्यों तनमें भगवाना ॥ ६ ॥
तिलकी ओट पहाड है जानी न अयाना।
द्यानत निपट नजीक है लखि चेतन बाना ॥ ७ ॥

[४५२—राग निहालदे]

चेतरे प्राणी चेतरे थारी आयु छै थोरी,
सागरां थिति धर खिरगए बंधे कालकी डोरी ॥टेक॥
पाप अनेक कमायके, माया बहु जोरी।
अन्त समय संग ना चले, चले पाप की बोरी ॥१॥
मात पिता सुत कामिनी, तू कहत है मोरी।
देहकी देह तेरी नहीं, जासूं प्रीति है तोरी ॥२॥
सीख तू सुनले कान दे हो धरमके धोरी।
कह द्यानत यह सार है और सब बातें कोरी ॥३॥

[४५३—राग बरवा]

देखोजी आदीश्वर स्वामी कैसा ध्यान लगाया है ।टेर।
कर ऊपर कर सुभग विराजे,आसन थिर ठहराया है ।१।

जगतविभूति भूतिसम तजकर, निजानन्द पद ध्याया है।
सुरभित श्वासा आसावासा नासा दृष्टि सुहाया है ॥२॥
कंचन वरन चलैं मन रंचन, सुरगिर ज्यों थिर थाया है।
जास पास अहि मोर मृगी हरि,जाति विरोध नशाया है ३
शुध उपयोग हुताशन में जिन वसुविधि समिध जलाया है
श्यामलि अलिकावलि सिर सोहे,मानो धुआं उडाया है ।४
जीवन मरण अलाभ लाभ जिन, तृण मणिको सम भायाहै।
सुरनर नाग नमहिं पद जाकै "दौल" तास यश गायाहै॥५

(४७४—बरवा)

सुख दुख दाता कोई नहि जीवका पुण्य पाप कारण वरवीरा।
अन्य सव मित्र मात्र हैं ज्ञानी, यह लख निज मन धरना धीरा
इन्द्र फणीन्द्र नरेन्द्र सभी मिल, टार सके नहीं विधिफल पीरा।१।
सीताजी को अग्निकुन्ड में किया सुरों ने निर्मल नीरा।
जब हरलीनी थी रावणने, तव क्यों नहीं आये कोई सुरवीरा।२।
वारिषेण पर खड्ग चलायो, फूलमाल कीनो सुरवीरा।
जब क्यों न आये तीन दिवस तईं,गिद्धनी भखें सुकमालशरीरा।३
कृष्ण हरे शिशुपाल जरासिन्धु-भोगे भोग हली संग केरा।
कछु न चली जब अरंड कसूमी,जरतकुमार शरसे तन चीरा।४

१-भस्म। २-दिशारूपी वस्त्र = दिगम्बरत्व।

मानतुंग अडतालिस ताले, तोडके छेद्या बंध जंजीरा ।
पान्डव मुनि जारे दुश्मनने, पाप निकांचित फल गंभीरा।५।
ऐसे ही सुखदुख होय जीवको, पुण्यपाप जब चलत समीरा
'मंगत' हरप विपाद न करना, थिर रखना चहिए निज हियरा ।

(४५५—वरवा)

हो तुम शठ अविचारी जियरा,
जिन वृष पाय वृथा खोवत हो ।।टेर।।
पी अनादि मदमोह स्वगुण निधि,
भूल अचेत नींद सोवत हो ।। १ ।।
स्वहितसीख वच सुगुरु पुकारत,
क्यों न खोल उर दृग जोवत हो ।
ज्ञान विसार विषय विष चाखत,
सुर तरु जार कनक बोवत हो ।। २ ।।
स्वारथ सगे सकल जन कारन,
क्यों निज पाप भार ढोवत हो ।
नरभव सुकुल जैन वृष नौका,
लहि निज क्यों भव जल डोवत हो ।।३।।
पुन्य पाप फल वात व्याधि वश
छिन में हंसत छिनक रोवत हो ।
संयम सलिल लेय निज उरके,
कलिमल क्यों न "दौल" धोवत हो ।।४।।

(४५६—वरवा)

हे मन तेरी को कुटेव यह, करन विषय में धावे है ॥टेर॥
इनही के वश तू अनादितैं, निज स्वरूप न लखावै है ।
पराधीन छिन छीन समाकुल, दुरगति विपति चखावैं है ।१
फरस विषय के कारन वारन, गरत परत दुख पावैं है ।
रसना इन्द्रीकेवश झष जल कंटक कंठ छिदावै है ॥२॥
गंध लोल पंकज मुद्रित में, अलि निज प्राण खपावैं है ।
नयन विषय वश दीपशिखा में,अंग पतंग जरावे है ॥३॥
करन विषय वश हिरन अरन में खलकर प्राण लुनावे है ।
'दौलत' तज इनको जिनको भज, यह गुरु सीख सुनावैं है ।

(४५७—वरवा)

और सबै जगद्वन्द मिटावो, लो लावो जिन आगम ओरी॥
है असार जगद्वन्द बंधकर, यह कछु गरज न सारत तोरी।
कमला चपला यौवन सुरधनु,स्वजन पथिकजन क्यों रति जोरी
विषय कषाय दुखद दोनो भव इनते तोरि नेह की डोरी ।
पर द्रव्यनको तू अपनावत क्यों न तजे ऐसी बुधि भोरी ।२
बीत जाय सागर थिति सुरकी, नर परयाय तनी अति थोरी।
अवसर पाय दौल अब चूको फिर न मिले मणि सागरनोरी३

[४५८—राग पीलू]

घुघरु बाजत झन नन नन नन नन ॥ टेर ॥
त्रिशला माता की गोद में जी आवत हैं, मन नन नन नन नन ।१।

'मोती' बाल पने की मुद्रा, देत ढोक चरणन नन नन नन नन ।२

[४५६—राग पीलू]

प्यारी लागे छै म्हाने थाकी बतियाँ सैयां ॥ टेर ॥

दूर होत मिथ्यात्व अंधेरो,

निजपरणति की बढत लतिया[1] सैयाँ ॥ १ ॥

सम्यक्ज्ञान जग्यो उर अंतर,

विषयन संग छूटत लतिया सैयाँ ॥ २ ॥

राम कहै तुम वदन विलोकत,

जोवत शिव सुन्दर सखिया सैयाँ ॥ ३ ॥

[४६०—राग पीलू]

तेरे दरशन के देखे से मुझे आराम होता है ॥ टेर ॥

दरश मोहे दीजिये प्रभुजी दरश में दिल हमारा है ।
अंधेरी रैन में जैसे कि चंदनी का पसारा है ॥ १ ॥
करूँ कछु और बने कछु और, यही जंजाल होता है ।
जरा साधू के मिलनें से सरासर काज होता है ॥ २ ॥
मेरे म्हाराज दिल जामी मंदिर के बीच बसते हैं ।
उन्ही के ध्यान में 'मोती' झलाझल झल झलकता है ॥३॥

१—लतिया-रुचि-आदत ।

[४६१—राग पीलू]

विना प्रभु पार्श्व के देखे, मेरा दिल बेकरारी है ॥ टेर ॥
चौरासी लाख में भटका बहुतसी देह धारी है ।
मुसीबत जो सही मैंने हकीकत सब गुजारी है ॥१॥
घेरा मुझे आठ कर्मों ने, गले जंजीर डारी है ।
विरद तारन सुनो मैंने प्रभु सब दुख निवारी है ॥ २ ॥
जगत के देव सब देखे, सभी के लोभ भारी है ।
कोई कामी कोई क्रोधी किसी के संग नारी है ॥ ३ ॥
सही हो देव देवन के सभी विपदा निवारी है ।
'पना' को कुगति से काढो, यही अरजी हमारी है ॥ ४ ॥

[४६२ – राग पीलू]

लगा है ध्यान जिन तुम से निभालोगे तो क्या होगा ॥टेर॥
भवसागर बीच में नैया, पडी मेरी मेरे प्रभुजी ।
दया कर पार तुम उसको लगा दोगे तो क्या होगा ॥ १ ॥
करूँ मैं याद जब तुमरी कुमति अज्ञान अघ हेरी ।
मेरा कुछ खयाल कर प्रभुजी, बचालोगे तो क्या होगा ॥२॥
मेरा दिल यह महा चंचल, कभीभी थिर नहीं रहता ।
इसे तुम ज्ञान की बूंटी पिला दोगे तो क्या होगा ॥ ३ ॥
पांचों दल्लाल संग फिरते लदाते खेप ओगुण की ।
दया कर धर्म का सोदा, पटा दोगे तो क्या होगा ॥ ४ ॥

सदा जिन मोहनी मूरति के सेवक चाहता दरशन।
मोक्ष का रास्ता सीधा बता दोगे तो क्या होगा ॥ ५ ॥

[४६३—राग पीलू]

मैं चितहूं चंदा प्रभुजी को,
चितवत ही सुख होत अपारा ॥ टेर ॥
अनादि काल की तपत बुझत है,
बरपत आनन्द घन जु धारा ॥ १ ॥
दुष्ट करम को नाश करत है,
आतम का दुख मिट गया सारा ॥ २ ॥
दास किशन यह पूजै ध्यावै,
स्वामी करद्यो भव दधि पारा ॥ ३ ॥

[४६४—राग पीलू]

भूल क्यों गयाजी म्हाने तारबो हो सैयां ॥ टेर ॥
या दिल तैंडी दिल पर रैंडो,
निश दिन सांझ औस वार हो हो सैयाँ ॥ १ ॥
मो से पतित अनेक उबारे,
कीनी नाहिं अवार हो हो सैयाँ ॥ २ ॥
अब मोकूं भी थारो हितकर,
यह निश्चय उर धार हो हो सैयाँ ॥ ३ ॥

[४६५—राग पीलू]

पानी में मीन पियासी, मोहे रह रह आवे हांसीरे ॥ टेर ॥
ज्ञान विना भव वन में भटक्यो,
कित जमुना कित काशी रे ॥ १ ॥
जैसे हिरण नाभि किस्तूरी,
वन वन फिरत उदासीरे ॥ २ ॥
'भूधर' भरम जाल को त्यागो,
मिट जाये जम की फांसीरे ॥ ३ ॥

[४६६—राग पीलू]

मेरो मन मधुकर अटक्योजी,
पार्श्व प्रभुजी का चरण कमल पर ॥ टेर ॥
भ्रमत फिर्यो कहूं चैन न पायो
लख चौरासी में भटक्यो जी ॥ १ ॥
दरशन देखत दुरमति नाशी
भव भव को दुख सटक्यो जी ॥
वक्त भलो मैं अब ही पायो।
ज्ञान हिया बिच खटक्यो जी ॥ ३ ॥

[४६७—राग पीलू]

बाजै छै बधाई राजा नाभि के दरबार जी ॥ टेर ॥
मौरां देवी बेटो जायो जायो रिषभकँवारजी।

तीन लोक सुक्ख पायो हरष अपारजी ॥ १ ॥
ता धिन्ना धिन्ना बाजै मृदंग साज जी।
नौबत के टंकारो लाग्यो झांझां झणकारजी।२।
गुणी जन नाचे गावे हरष अपारजी।
नाभिराय दान दीनो द्रव्य अपार जी ॥ ३ ॥
देत अशीष नर नारी द्वारे द्वारे जी।
चिरंजी रहो बालक 'हितकार' जी ॥ ४ ॥

[४६८—राग पीलू]

हुजूरियां ठाडो हुजूरियां ठाडो,
हो जिन थांकी हुजूरियां ठाडो ॥ टेर ॥
प्रभुजी थांकी सुरति पर वारूं कोटि रवि वारों ॥ १ ॥
प्रभुजी तारण तिरण सुन्यो छै विरद थांको बांको ॥ २ ॥
प्रभुजी हितकर अरज करै छै करम म्हारो काटो ॥ ३ ॥

[४६९—राग पीलू]

मारी लागी लगन नेम प्यारे से ॥ टेर ॥
सुनरी सखी इक बात हमारी, कहियो कंत हमारे से ॥१॥
जोगन हो तेरे संग रहूंगी, प्रीति तजूं जग सारे से ॥२॥
नाम लिये तैं आनंद उपजै, कीरत हो गुणधारे से ॥ ३ ॥

[४७०—राग पीलू]

सुने हम बैन श्रीगुरु ज्ञानी से ॥ टेक ॥
सब तत्त्वन में सार है जी आतमा ज्यों मुख ऊपर नैन ॥१॥

याही लखे सबही लखैंजी आतमा या विन मिले न सुख चैन।२
याकी महिमा को कहै जी, आतमा जाकूं ध्यावत मुनि दिनरैन।३
पारस ध्यावो तासको जी, आतमा पावो शिव वच जैन।४।

[४७१—राग पीलू]

कुमता के संग जाय चेतन वरज्यो नहीं मानत मानी।टेर।
या कुमता म्हारी जनम की वैरन, मोह लियो जी ज्ञानी रे
याही विषयन संग लिपटानी ॥१॥
चोरासी के दुख भुगताये—तोहू दिल विच आनी रे
है यह दुरगति दुख दानी ॥ २ ॥
पारस सीख सुगरु की धर कर, तज कुमता दुख दानीरे
याते पावोगे शिवरानी ॥ ३ ॥

[४७२—राग पीलू]

मुझे है चाव दरशन का निहारोगे तो क्या होगा ॥टेर॥
सुनो तुम नाभिके नन्दन परम सुख देन जग बन्दन।
मेरी विनती अपावन की विचारोगे तो क्या होगा ॥१॥
फँसा हूं करम के फंदे, मुझे तुम क्यों छुडावो ना।
तुम्हीं दातार हो जगके, सुधारोगे तो क्या होगा ॥२॥
यह भवसागर अथाह ही है झकोरे करम के निश दिन।
मेरी है नाव अति जरजरी उभारोगे तो क्या होगा ॥३॥
अरज सुन लीजियें मेरी, करूं विनती प्रभु तुमसे।
नवल को जगके दुःखों से छुडादोगे तो क्या होगा ॥४॥

इक दिन सभा विस्तारी है,
जहां पांडव हरि गिरधारी है,
जहां बात चली बलकारी है,
तहां अंगुरी सांसर डारी है।
सब ही जोधा मिल खींचत हैं,
तहां कृष्ण गोपका मुसकत हैं।
हरि हर्ष धार मन में विलखे,
अब कारन कौन करेला है ॥ २ ॥
बलभद्र कृष्ण बतलाया है,
गोपियन कूं जाय सिखाया है।
उग्रसेन सूं नेह लगाया है,
प्रभू ब्याह कबूल कराया है।
छपन कोडि जादू सब मिलके,
सजि चाले जूनागढ़ कूं।
जहां तोरण पे गये नेम प्रभू,
तहां देख्या पशु सकेला है ॥ १
प्रभु द्वादश भावना भाया है,
गिरनारी पे ध्यान लगाया है।
तहां घातिया कर्म खिपाया है,
प्रभू केवलज्ञान उपाया है।

आप मुक्ति का राज किया,
मैं शर्न आपकी आन लिया
करि इन्द्र चन्द्र कर जोर कहैं,
मोये जगसे पार करेला है ॥ ५ ॥

[४७७—राग पीलू]

सुरतिया पैं जाऊं मैं बलि बलि हारी ।
दरशन दीनों आदीश्वर भगवान,
कि जन्म सफल कर लीनो ॥ टेर ॥
कभी न भक्ति तेरी दिल के बीच ठानी मैं,
यों ही खराब की हाय जिन्दगानी मैं ।
न जाना भेद इस जिन धर्म का कभी मैंने,
यों ही भ्रमता फिरा दुनिया की खाक छानी मैं ।
लिया है लिया है प्रभु तुम्हारा शरण,
वेग मिटावो दुख जामन मरण ॥ १ ॥

[४७८—राग पीलू]

रंग बधाईयां सुनो सखि हे सेवा सुत जाईयो,
भला वे आज बाजै छै० ॥ टेर ॥
सब सखियन मिल मंगल गावै, देदे ताल सवाईयां ॥१॥
नरनारी मिल चोक पुरावै, मन में हरष सवाईयां ॥२॥
ऐरावत हस्ती सजकरके, ता पर प्रभु पधराईयां ॥३॥

मेरू शिखर लेजाय प्रभुको, मघवा कलश ढुराईयाँ ॥४॥
पोंछ सिनगार कियो शचियनने, निरखत अंग नवाईयाँ ॥५॥
नेम नाम धर सोंपे नृपतिको, तांडव नृत्य कराईयाँ ॥६॥
जन्म कल्याणक उत्सव करिके, इन्द्र स्वर्ग को जाईयाँ ॥७॥
अब सेवग हितकर गुण गावै—जामनमरण मिटाईयाँ ॥८॥

[४७९—राग पीलू]

लिया आज प्रभुजी ने जन्म सखी,
चलो अवधपुरी गुण गावन को ॥ टेर ॥
तुम सुनोरी सुहागन राग भरी,
चलो मोतियन चोक पुरावन को ॥ १ ॥
सुवरण कलश धरो शिर ऊपर,
जल लावो प्रभु न्हावन को ॥ २ ॥
भर भर थाल द्रव्य के लेकर,
चालोरी अर्घ चढावन को ॥ ३ ॥
नैनानन्द कहै सुन सजनी,
फेर न अवसर आवन को ॥ ४ ॥

[४८०—राग पीलू]

सफल भई मोरी आज नगरिया ॥ टेर ॥
बहुत दिनन से भटकत भटकत,
आज मिली शिवपुरकी डगरिया ॥ १ ॥

पारस प्रभु के न्हवन करन को,
भरभर लावा क्षीरोदधि से गगरिया ॥२॥
हम सुर नैन दोऊकर जोड़े,
मेटो प्रभु भव भव की भ्रमरिया ॥३॥

[४८१—पील]

बधइयां बे आज रहियाबे ॥ टेर ॥
नाभिराय मोरा देवी घर, पुत्र भयो सुखदैया ॥ १ ॥
मेरु शिखर लेजाय प्रभुको, कलश हजार ढुरैया ॥ २ ॥
इन्द्र शची ऐरावत सजकर, तांडव नृत्य करैया ॥ ३ ॥
कर शृंगार इन्द्राणी प्रभूको, सहस्र नेत्र निरखैया ॥ ४ ॥
'धर्मानन्द' की याही अरज है, भवभवदुख हरलैया ॥५॥

[४८२—पील]

वन्दों नेम उदासी, मद मारिवेकों ॥ टेर ॥
रजमतनी जिन नारी छांडी, जाय भये वनवासी ॥१॥
हयगयरथ पायक सब छांडे, तोरी ममता फांसी ।
पंच महाव्रत दुद्धर धारे, राखी प्रकृति पिच्यासी ॥२॥
जाके दरशन ज्ञान विराजत, लहि वीरज सुखराशी ।
जाके वंदत त्रिभुवन नायक, लोकालोक प्रकाशी ॥३॥
सिद्ध शुद्ध परमारथ राजे, अविचल थान निवासी ।
'द्यानत' मन अलि प्रभुपदपंकज, रमत रमत अघ जासी ॥४॥

[४८३—पीलू]

मुझे निर्वाण पहुँचन की लगी लौ है अनादिसौं ।
मै किसविध कार्य साधूंगा, यही इच्छा अनादिसौं ॥टेर॥
लिया व्यवहार का शरणा, न निश्चयसे करी मिल्लत ।
इसी से होरहा रुलना, चतुर्गति में अनादिसौं ॥ १ ॥
परम निश्चय उमड आया, देखा जिनराजका दर्शन ।
मिटाया ध्यान सब परका, जो छाया था अनादिसौं ॥२॥
लखा निजको किये ही है, परम आतम परम ज्ञानी ।
येही शान्ति सुख सागर न जाना था अनादिसौं ॥ ३ ॥
मुझे निज दुर्गमें बसना, यही आनन्द कर्मोंका ।
जो सुख सागर नहाना है न पाया था अनादिसौं ॥४॥

[४८४—पीलू]

थांका चरणा में चित ल्याऊँ म्हारा स्वामीजी ॥ टेक ॥
अष्टकर्म मोहे घेर रह्याजी. इनसे वेग छुडावो ॥ १ ॥
थाका चरणन याही बलिहारी, दुर्गति नशे दुखकारी ।
भंवरजालमें उलझ रह्यो छं, उरझे को सुरझावो म्हारास्वामी ।

[४८५—पीलू]

मेंडा जिनसाहिब मुशकिल करले हो आसान तू ॥ टेर ॥
कर्म प्रबल मोहे घेर रहे हैं, न्याय कीजिये छांड तू ॥१॥
ढील न करिये मेंडा वेग त्यारिये, अरज दीन की मान तू ।२।
मोह शांत कर उदय दूरकर, सीधी सुधातम ज्ञान तू ॥३॥

[४८६—पीलू]

अब पूरीकर नींदड़ी, सुन जिया रे ! चिरकाल तू सोया ।
माया मैली रातमें केता काल विगोया ॥ १ ॥ अब० ॥
धर्म न भूल अयान रे ! विषयोंवश वाला !
सार सुधारस छोड़के, पीवै जहर पियाला ॥२॥ अब०॥
मानुष भवकी पैठमें, जग विणजी आया ।
चतुर कमाई कर चले, मूढौं मूल गुमाया ॥३॥ अब०॥
तिसना तज तप जिन किया, तिन बहु हित जोया ।
भोगमगन शठ जे रहे, तिन सरवस खोया ॥४॥ अब०
काम विथा पीडित जिया, भोगहि भले जानैं ।
खाज खुजावत अंगमें, रोगी सुख मानैं ॥५॥ अब०॥
राग उरगनी[2] जोरतैं, जग डसिया भाई ।
सब जिय गाफिल हो रहे मोह लहर चढ़ाई ॥६॥ अब०
गुरु उपकारी गारुडी[3], दुख देख निवारैं ।
हित उपदेश सुमन्त्रसों, पढ़ि जहर उतारैं ॥७॥ अब०
गुरु माता गुरु ही पिता, गुरु सज्जन भाई ।
"भूधर" या संसार में, गुरु शरण सहाई ॥८॥ अब०॥

[४८७—राग भीम पलासी]

अरज सुनो प्रभु करुणापती,
मुझे करमोंने आकर घेर लिया ।

१—खोया । २—सर्पनी, । ३—जहर उतारनेवाले ।

मेरा दर्शन ज्ञान जो लूट लिया,
मुझे दीन बनाकर जेर किया ॥ टेर ॥
मोहका प्याला पिला जो दिया,
मुझे स्वपर विवेक न होने दिया।
आतम शक्ति दवा जो दई,
मुझे संशय के जालमें डाल दिया ॥१॥
मेरे ज्ञानको घात अज्ञान किया,
मुझे तत्त्वों का बोध न होने दिया।
मिथ्यात्व के फंद में फांस लिया,
मुझे सम्यक् दरश न होने दिया ॥२॥
विधि आठों ने आकर घेरलिया,
मैंने याही तैं आके पुकार किया।
तुमसे न कहूँ तो कहूँ किससे,
इन कर्मोंका नाश तुम्हीं ने किया ॥३॥
दीनके नाथ दयालु प्रभु,
मैंने याही तैं आपसे अर्ज किया।
कर्मोंके जेलसे काढो प्रभु,
अब 'चम्पा'ने शरण तुम्हारा लिया ॥४॥

[४८८—भीमपलासी]
श्री नाभिके नंदा जगचंदा,
मोरी नैया को पार लगादेना।

मुझे अपना समझ कर श्रीचन्दा,
अपनी सोहनी सूरत दिखादेना ॥ टेर ॥

मेरे पापों की सरपर है पोट घनी,
कोई करनी धर्मकी न मुझसे बनी ।
पर तुमसे मैं चाहूँ यह इष्ट धनी,
मेरे कर्मों के फंद छुडा देना ॥ १ ॥
कुछ ज्ञान ध्यान मैं ना जानूं,
अरु धर्म अधर्म न पहिचानूं ।
तुम चंद जगतपति जग भानू,
मेरे मोह तिमिर को हटा देना ॥२॥
कभी दान हाथ से नाहिं दिया,
कभी सुमरन मुखसे नाहिं किया ।
कभी पगसे मैं तीरथ नाहिं गया,
मोहे धरम की रीति सिखादेना ॥३॥
यही विनती है मोरी जगतपति,
सब जीवन के रखवाले यती ।
तुम दया धुरन्धर धीर सती,
जग दया की धूम मचादेना ॥४॥

[४८९—राग पहाडी]

तारण तरण जिनेश्वर स्वामी,
अपना विरद निभाना होगा ॥ टेर ॥
सब के नाथं जगविख्यातं नरकों सेती बचाना होगा ॥१॥
कर्मों ने मारा कैद में डारा, यमराजा से बचाना होगा ।२॥
चोरी भी कीन्ही दिक्षा हू न लीनी ।
सब मेरे ऐब छिपाना होगा ॥ ३ ॥
जब लग मुक्ति न होय चैन की ।
चरणों सेती लगाना होगा ॥ ४ ॥

[४९०—राग पहाडी]

प्रभु देख मगन भया मेरा मनुवा ॥ टेर ॥
तीनलोक पति आज निहारे नगन दिगंबर जाके तनवा ।१॥
शुभ को उदय होत भयो मेरे अशुभ झरे जैसे सूखे पनवा ।२॥
दास भवानी दोऊ कर जोडे नितगाऊँ तुमरे गुणवा ॥३॥

[४९१—राग पहाडी]

तन का तनक भरोसा नाहीं किसपर करत गुमाना रे ॥ टेर ॥
पैंड पैंड पै तक तक मारे काल की चोट निशाना रे ॥१॥
देखत देखत विनश जात है पानी बीच बुदासा रे ॥२॥
तेरे सिर पर काल फिरत है जैसे तीर कबाना रे ॥३॥
कहत बनारसि सुन भवि प्राणी, यह जिवडा यूंही जाना रे ।४॥

[४६२—राग धनाश्री]

अरजी चित्त धरो, जिनन्द म्हारी ॥ टेर ॥
तारण तरण सकल दुख टारन, थांको बिरद खरो ।
है मम भूल अनादि कालकी सो सब माफ करो ॥
निज पद बख्श भक्त थाना को, मन की आश भरो ।

[४६२—राग धनाश्री]

तौरी सी निधि दे, जिनन्द या ॥ टेक ॥
अनन्त ज्ञान सुख वीरज जामें कछु दुःख नाहीं ये ॥१॥
अग्नि चौर जल तें विनशै नहीं, पर वश कबहुं न होय ॥२॥
'नयन' देख उर आनन्द उपजे, आकुलता मिट जैहै ॥३॥

[४६४—राग गौरी]

प्रभु अब हमको होहु सहाय,
तुम बिन हम बहु युग दुःख पायो, अबतो परसे पांय ।टेक॥
तीन लोक में नाम तिहारो, है सबको सुखदाय ।
सो ही नाम सदा हम गावें, रीझ जाहु पतियाय ॥१॥
हम तो नाथ कहावें तेरे, जावें कहाँ सो बताय ।
बांह गहे की लाज निभावो, जो हो त्रिभुवन राय ॥२॥
द्यानत सेवक ने प्रभु इतनी, विनती करी बनाय ।
दीन दयाल दया धर मन में, यम तें लेहु बचाय ॥३॥

[४६५—राग गौरी]

प्रभु तेरी महिमा कहिय न जाय ॥ टेक ॥
स्तुति करि सुखी, दुःखी निन्दातैं तेरे समता भाय ।१।
जो तुम ध्यावे, थिर मन लावे, सो किंचित सुख पाय।
जो नहि ध्यावे ताहि करत हो, तीन भुवन के राय ।२।
अंजन चौर महा अपराधी, दियो मुक्ति पहुंचाय।
कथा नाथ श्रेणिक समदृष्टि, गयो नर्क दुःख दाय ॥३॥
सेव असेव कहा चले जिय की, जो तुम करो सु न्याय।
"द्यानत" सेवक गुण गहि लीजे, दोष सर्व छिटकाय ॥४॥

[४६६—राग मल्हार]

दरशन विन जिया निशि दिन तरसत,
मोहे कल न परत मोरी आली,
पलछिन मन धृति ना धरत दृग जल बरसत ॥ टेर ॥
श्यामसुन्दर छवि अति विशाल,
अनुपम दयाल सबकों री।
पशुवनको शोर सुन चित चकोर भयो—
अति निठोर नर हरि करसत ॥ १ ॥
तुम बिसार दई मैं ना विसरूँ,
उन कीन्ही सो मैं कर हूँ।
मैं अनाथ तुम से नाथ प्रभु,
तुम बिन हिरणी मृग बिन विचरत ॥ २ ॥

नव भव सेवा व्यर्थ गई,
तुम तज अन्य न पति काहूँ ।
अब तो प्रभु के चरण शरण,
धनि 'चिमन' प्रभु पद परसत ॥ ३ ॥

[४६७—राग मल्हार]

लागी हो जिनजी म्हाने चूप[1], चूप तुम दरशनकी,
लाग रही हो जिनजी म्हाने चूप ॥ टेर ॥
वीतराग सर्वज्ञ जगतपति नाशादृष्टि अनूप ॥ १ ॥
देव सरागी राग बढावै डारत दुख के कूप ॥ २ ॥
पुन्य प्रताप निरख मन छकिया पायो त्रिभुवन भूप ॥३॥

[४६८—राग मल्हार]

अब मेरे समकित सावन आयो ॥ टेक ॥
बीति कुरीति मिथ्यामति ग्रीषम, पावस[2] सहज सुहायो ॥१॥
अनुभव दामिनि दमकन लागी, सुरति घटा घन छायो ।
बोलै विमल विवेक पपीहा, सुमति सुहागिन भायो ॥२॥
गुरुधुनि गरज सुनत सुख उपजै, मोर सुमन विहसायो ।
साधक भाव अंकूर उठे बहु, जित तित हरष सवायो ॥३॥
भूल धूल कहिं मूल न सूझत, समरस जल झर लायो ।
भूधर को निकसै अब बाहिर, निज निरचू[3] घर पायो ॥४॥

---
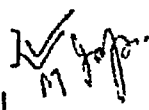
१ लगन । २ वर्षा ऋतु । ३ जिसमें पानी नहीं चूता है ।

[४९९—मल्हार]

रूमझूम बदरवा अति बरसैं, मुनिन तहाँ ध्यान लगाई ॥टेर॥
रैन अंधेरी वायु बजत है, बिजली अति चिमकाई ॥१॥
तरु टपकत जिय देत परीषह तो पन गिरिसम थाई।
आतम रस पी मगन भये हैं, नवल नमैं शिरनाई॥

[५००—मल्हार]

देखे जिनराज आज जीवन मूलवे ॥ टेर ॥
शीश चढावत सुरनर मुनिजन, चरणकमल की धूलवे ॥१
सूखी सरिता नीर बहत है, वैर तज्यो मृगनाहर सूरवे।
चालत मन्द सुगन्ध पवन तहँ, फूल रहें बनफूल वे ॥२॥
तन की तनक खबर नहीं तिनको, जरजावो जैसे तूल वे।
रंक राव से नाहीं ममता, मानत कनक को धूल वे ॥३॥
जड चेतनको भेद करत है मेटत है भविजनकी भूल वे।
उपकारी लख 'बुधजन' तिनको मानत हुकम कबूलवे ।४।

[५०१—मल्हार सूरदास को]

या ऋतु धनि मुनिराई करत तप ॥ टेक ॥
उमड घुमड घन बरसत अतिजहां चपला चमक डराई ।१।
झंझावायु चलत अति सीरी, तरु टपकत अधिकाई।
डंस मशक काटत तन चाटत, सहत परीषह आई ॥२॥

तन सुधि बिसरि रहे कछु ऐसी अंतर निजनिधि पाई ।
जगतराम लख ध्यान साधुको वंदत शीस नमाई ॥३॥

[५०२—राग मल्हार]

देखोरी माई गरज गरज घन बरसे ॥ टेर ॥
नेमीसुर प्रभु जोग धर्यो है, जित तित दामिनि दरसे ॥१॥
यह कोमल तन यह सावन घन दरशन बिन जिया तरसे ।
'धरमपाल' जगपति जब देखूं तब ही मो मन सरसे ॥२॥

[५०३—राग मल्हार]

झूम झूम बरसे बदरवा श्री गुरु ठाडे तरुवर तलवा ॥टेर॥
काली घटा जैसी बिजली डरावै,
वह न डरै मानु काठ पुतरवा ॥ १ ॥
बाहर को निकसे ऐसे में,
बडे बडे धरह गिर गिरवा ।
झंझा वायु बजत असि सियरी,
वह न हिले निज बल के धरैवा ॥२॥
देखे बिन जो आन सुनावै,
ताकी तो करिहु नोछरवा ।
सफल होय शिर पॉय परस के ।
'बुधजन' के सब काज सरैवा ॥ ३ ॥

[५०४—राग मल्हार]

परमगुरु वरसत ज्ञान झरी ॥ टेक ॥

हरषि हरषि वहु गरजि गरजिकै, मिथ्यातपन हरी ॥१॥

सरधा भूमि सुहावनि लागै, संशय बेल हरी ।
भविजन मन सरवर भरि उमड़े, समुझि पवन सियरी ॥२॥

स्यादवाद बिजली चमकै पर मत शिखर परी ।
चातक मोर साधु श्रावकके, हृदय सुभक्ति भरी ॥ ३ ॥

जप तप परमानन्द वढ्यो है, सुसमय नींव धरी ।
'द्यानत' पावन पावस आयो, थिरता शुद्ध करी ॥ ४ ॥

[५०५—राग मल्हार]

जिनराज चरन मन मति बिसरै ॥ टेक ॥

को जानै किहिं बार कालकी, धार अचानक आनि परै ।१।

देखत दुख भजि जाहिं दशौं दिश पूजत पातक पुंज गिरै ।
इस संसार-क्षारसागरसौं, और न कोई पार करै ॥ २ ॥

इक चित ध्यावत वांछित पावत, आवत मंगल विघन टरै ।
मोहनी धूलि परी माथैं चिर, सिर नावत ततकाल झरै ॥३॥

तबलौं भजन सँवार सयानै, जबलौं कफ नहिं कंठ अरै ।
अगनि प्रवेश भयो घर 'भूधर', खोदत कूप न काज सरै ॥४॥

75 [५०६—राग मल्हार]

आदि पुरुष मेरी आस भरो जी।

औगुन मेरे माफ करो जी ॥ टेर ॥

दीनदयाल विरद बिसरो जी।

कै विनती मोरी श्रवण धरो जी ॥ १ ॥

काल अनादि वस्यों जगमाहीं,

तुमसे जगपति जानें नाहीं।

पॉय न पूजे अन्तरजामी,

यह अपराध छमा कर स्वामी ॥ २ ॥

भक्ति प्रसाद परम पद ह्वै है,

बंधी बंधदशा मिट जै है।

तब न करौं तेरी फिर पूजा,

यह अपराध खमों प्रभु दूजा ॥ ३ ॥

'भूधर' दोष किया बकसावै[1],

अरु आगेको लारे लावै।

देखो सेवक की ढिठवाई[2],

गरुवे साहिबसों बनियाई[3] ॥ ४ ॥

१—माफ करता है। २—ढीठता। ३—बनियापन।

76 [५०७—राग बहार]

हम न किसी के कोई न हमारा,

झूठा है जग का व्योहारा ॥ टेक ॥

तन सम्बन्धी सब परवारा,

सो तन हमने जाना न्यारा ॥ हम० ॥ १ ॥

पुन्य उदय सुखका बढ़वारा,

पाप उदय दुख होत अपारा ।

पाप पुन्य दोऊ संसारा,

मैं सब देखन जानन हारा ॥ हम० ॥ २ ॥

मैं तिहुं जग तिहुं काल अकेला,

पर-संजोग भया बहु मेला ।

थिति पूरी करि खिरखिर जाहीं,

मेरे हर्ष शोक कछु नाहीं ॥ ३ ॥

राग भावतैं सज्जन मानैं,

दोष भावतैं दुर्जन जानैं ।

राग दोष दोऊ मम नाहीं,

'द्यानत' मैं चेतन पद मांही ॥ ४ ॥

77 [५०८—राग बहार]

जम आन अचानक दावैगा ॥ टेर ॥

छिन छिन कटत घटत थित ज्यौं जल

अंजुलि को झर जावैगा ॥ १ ॥

जन्म तालतरुतैं पर जियफल,
को लग बीच रहावैगा।
क्यों न विचार करै नर आखिर,
मरन मही में आवैगा ॥ २ ॥
सोवत मृत जागत जीवत ही,
श्वासा जो थिर थावैगा।
जैसै कोऊ छिपैं सदासौं,
कबहूँ अवसि पलावैगा ॥ ३ ॥
कहूं कबहूँ कैसे हूं कोऊ,
अन्तकसे न बचावैगा।
सम्यक्‌ज्ञान पियूष पिये सौं,
'दौल' अमर पद पावैगा ॥ ४ ॥

[५०६—राग वहार]

जिनवर संग हमरे दृग रलिया,
रूप अनूप दिगम्बर मुद्रा
कर्म काटके दृग नाशा धर,
सकल लोक के दुख हरिया ॥ टेर ॥
अतिशय अर गुण मंडित,
सब द्रव्यन की सत्ता सुभाव
पर देश मुकरवत झलक परत,
चर अचर पदार्थ गिलत अखिल केवल विथार ॥१॥

जिन ज्ञान शक्ति अति प्रकटी,
धर्म चक्रकर खण्ड अविद्या
करी देशना आरिज खेत,
भव्यन वृष अमृत सींच पुष्टकर सुख आपार ॥२॥
भव भव शरण चरण की हम,
याचत तुम तज और कोऊ नहीं
चाहत स्वर्ग फल नरेश पद,
भवबन्धन कांठ पुष्टकर सुख अपार ॥ ३ ॥
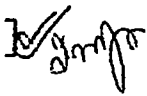
[५१०—राग वसन्त]

संत निरंतर चिंतत ऐसैं,
आतमरूप अबाधित ज्ञानी ॥ टेर ॥
रोगादिक तो देहाश्रित है,
इनतें होत न मेरी हानी ।
दहन दहत ज्यों दहन न तदगत,
गगन दहन ताकी विधि ठानी ॥ १ ॥
वरणादिक विकार पुद्गल के,
इनमें नहिं चैतन्य निशानी ।
यद्यपि एक क्षेत्र अवगाही,
तद्यपि लक्षण भिन्न पिछानी ॥ २ ।
मैं सर्वांग पूर्ण ज्ञायक रस,
लवण खिल्लवत लीला ठानी ।
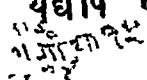
मिलो निराकुल स्वाद न यावत,
तावत परपरनति हित मानी ॥ ३ ॥
"भागचन्द्र" निरद्वन्द निरामय,
मूरति निश्चय सिद्धसमानी ।
नित अकलंक अवंक शंक विन,
निर्मल पंक विना जिमि पानी ॥ ४ ॥
कीचड़ रहित

[५११—राग बसन्त]

आई बसंत सुसंत चलो मिल वन जिन पूजन काजा ॥टेर॥
लेले अष्ट द्रव्य अति उत्तम, सजि सजि रथ गज वाजा ॥१॥
कोई वीन वजावत गावत, जिनगुण मधुर अवाजा ।
केई ताल मृदंग वांसुरी पूरित चित्त समाजा ॥ २ ॥
चलो सखी आनंद हूजिये, अद्भुत मंगल आजा ।
'जगतराम' नर भव फल लीजे पूजिये श्री जिनराजा ॥३॥

[५१२—राग वसन्त]

अरे इस दमका क्या है भरोसा,
आया न आया आया न आया ॥ टेर ॥
जैसे रतन उदधि के माहीं,
पाया न पाया पाया न पाया ॥ १ ॥
जैसे बाल उदर के मांही,
जाया न जाया जाया न जाया ॥ २ ॥

जैसे ग्रास हाथ के मांही,

खाया न खाया खाया न खाया ॥३॥

रूपचंद अब नाम प्रभुका,

विना भक्ति मन भाया न भाया ॥ ४ ॥

[५१३—राग वसन्त]

रंग लावो वनाय सखी झटपट,

होली खेलूंगी आज अली अटपट ॥ टेर ॥

पांच सखी इक मंदिर अन्दर,

एक से एक वडी नट खट ॥ १ ॥

एक होयतो पकड मंगाऊं,

पांचों को कैसे करूँ गट पट ॥ २ ॥

'चुन्नी' आतम रसपी मगन हो,

देख सु गुरु की अनोखी लटक ॥ ३ ॥

[५१४—काफी होरी]

थांहीका नित गुण गाऊँजी जिन मेरी ओर निहारो सैयांमैं ॥

थांही को पूजन, थांही को सुमरण, थांहीसे ध्यान लगाऊंजी १ ।

कुगुरु कुदेव कुगुरु पंथ में भूल नहीं चित ल्याऊंजी ॥२॥

'ज्ञानचन्द' के उदय होत ही भवाताप नशाऊंजी ॥ ३ ॥

[५१५—काफी होरी]

अपने ही रंगमें रंगद्यो,साहिब आप जिनन्द कहावो मोहे ।।
रंगमिथ्यात लग्यो अनादिको, सो अब इनको खिणद्यो ।१।
रत्नत्रय निधि तुमपे देखी, सो अब हमको सजद्यो ।।२।।
तुमसे साहिब और न दूजा, आप समाना करद्यो ।। ३ ।।

[५१६—काफी होरी]

नेमने मोरी एक न मानी,
एजी न मानी श्याम ने मोरी एक न मानी ।। टेर ।।

ठाडी थी मैं अपने महलमें, पिया दर्शन की लुभानी ।
तोरण से रथ फेरचले प्रभु सुन पशुवन किलकारी,
दया मोरी मनमें न आनी ।।१।।

बिन व्यवहार मोक्ष मग नाहीं, जिन शासन में गानी ।
छांड मुझे शिव रमणी चाहो जगमें होगी हंसानी,
देखो जादुरायकी राणी ।। २ ।।

जगतप्रसिद्ध बालब्रह्मचारी, यह क्या दिलमें ठानी ।
और तीर्थङ्कर भोग जगत सुख, पीछै दिक्षा लहानी,
सुनी ऐसी लोक कहानी ।। ३ ।।

गढ़ गिरनार लई प्रभु दीक्षा, मुक्तिपुरी की निशानी ।
त्याग विभूति 'चिमन' जब राजुल, प्रभुपद शीस नमानी,
मुझे संगलीज्योजी ज्ञानो ।।४।।

[५१७—राग काफी होरी]

कबै ऐसा अवसर पाऊं श्री जिन पूजा रचाऊं ॥ टेर ॥
शर्करादि घृत दुग्ध दही ले, पंचामृत कर ल्याऊँ।
करपूरादि सुगंध मिला कर प्रभुजी कोन्हवन कराऊं,
तबै भव भ्रमण मिटाऊँ ॥ १ ॥
रतन जटित कंचन की झारी, गंगा जल भरि ल्याऊँ।
केसर अगर कपूर मिला कर तंदुल धवल धुपाऊँ,
माल पुष्पन की चढाऊँ ॥ २ ॥
षट रस व्यंजन खाजे साजे, ताजे तुरत बनाऊँ।
दीप प्रजाल आरती उतारूँ धूप की धूम्र उडाऊं,
श्रीफल भेंट चढाऊँ ॥ ३ ॥
ताल मृदंग अरु बीन बांसुरी, लेकर ताल बजाऊँ।
नाचत चतुर प्रभु पद आगैं, बार बार शिर नाऊँ,
निछरावल दरशन पाऊँ ॥ ४ ॥

[५१८—राग काफी होरी]

एजी कांई उरझै श्याम जोगन मैं,
मैंतो ढूंढ फिरी शीशावन में ॥ टेर ॥
ऐसा जतन कोई मोकू बतावो,
जो पिया आवै आंगण में ॥ १ ॥
जो पिया आवेतो जाने न दूंगी, खूब रंगूगी रगने में ॥२॥
राजमती सुन कर, उठ चौंकी पारस ध्याऊँ विपिन में ॥३॥

[५१६ — राग काफी होरी]

भईजी आज दरशन की लगन,
जिनवर की ओर, जाके सुनत वचन सुखकारी छक छक
म्हारै० ॥ टेर ॥
एक तो भयोरी मेरे लाभ ज्ञान को,
प्रगट भयो निजगुण झक झक ।
मोह सेना सब पाछी फिरन लागी,
विषयाँ डरन लागी हारी तक तक, म्हारै०॥१॥
आयोरी अंत भ्रमण को आज मेरे,
प्रकृति भ्रमारी करत लक लक ।
आनन को अब नहीं झगडो है,
आतम राम लखूँ तक तक ॥ २ ॥

[५२० — राग काफी होरी]

ऐसी होरी खेलन को नहीं जी चाहे,
मेरे मन वैराग भयोरी आज ॥ टेर ॥
सुनरी सखी एक अरज हमारी, संजम ल्यूं गिरवर पे जाय॥१॥
यासैं करम कटे पूरवले सफल होय निज काय ।
सेवा चरण कमल की करूंगी मंत्र जपूं मन वचन काय ॥२॥

[५२१—राग काफी होरी]

हम तज माई गिरनारी मोरे सैयां सुखकारी फाग रचायोरी ।टेर।
तन जोरी मन देत मरोरी, ज्ञान गुलाल भराईरी ।
शील सुरतकर शिवसुन्दरपें निजहित कारण वाही री ॥१॥
तप सुरंग गुण जल प्रसंग सुमतापिचकारी चलाईरी ।
क्षमा शक्ति ध्यानादिक ठाडे, धीरजमई धूम मचाईरी ॥२॥
सकल सभा सें सीख करत अब, नेम निकट तहाँ जाईरी ।
ऐसो फाग रचायो श्यामने, रतनत्रय निधि पाईरी ॥३॥

[५२२—राग काफी होरी]

कैसी होरी मचाई आज पिया भूल गुमाई ॥ टेर ॥
अनुभव रंग बनाय अनूपम, बुधि पिचकारी बनाई ।
तीन करण की रंग भूमि में, ज्ञानकी रौल मचाई ॥ १ ॥
भाव पोटरी कीनी सूक्षम, लोभ की धूलि उडाई ।
उपशम मोह छिपो बलहारक, तास की खबर न पाई ॥२॥
बारहवें गुणस्थान सलिल में 'राम' करी उजलाई ।
तेरहवें गुणस्थान महल में केवल सेज बिछाई ॥ ३ ॥

[५२३—राग काफी होरी]

आयु रही अब थोडी कहां करै मोरी मोरी ॥टेर॥
मात तात परलोक सिधारे, पास रही ना गौरी ।
सुत मित बांधव राज संपदा, छिन छिन विनशत सो री,
फेर नहीं मिलत बहोरी ।१।

तन पिंजर अब जरजर दीखत, लाल पड़े गुन थोरी ।
रींट गींट कफ मिटने नाहीं, दांत दाढ जड छोडी,
सहे दुख दरद घनोरी ॥२॥

रोग पिशाच लगे तन भीतर. अग्नि भई मंदोरी ।
वात पित्त कफ नित घटबट है, यो बहु विपति सहोरी,
कहत नहीं शारै ओरी ॥ ३ ॥

कर पग कंपन नाड दरद सिर, कमर कुब निकसो री ।
लकडी डिगत हाथ टोकरके तोभी समके न थोरी
याकी मति मोह मरोरी ॥ ४ ॥

या विधि परख विज्ञान जोहरी, तनसे ममत तजो री ।
आपही आप रमो निज उरमें, आय मिले शिव गोरी ।
होय परमानन्द बहोरी ॥ ५ ॥

७९ [४२४—राग काफी होरी]

छांडि दे या बुधि भोरी, वृथा तनसे रति जोरी ॥ टेर ॥

यह पर है न रहै थिर पोपत, सकल कुमल की भोरी ।
यासौं ममता कर अनादितैं, बंधो करमकी डोरी ।
सहै दुख जलधि हिलोरी, छांडि दे या बुधि भोरी ॥१॥

यह जड है तू चेतन यों ही अपनावत बरजोरी ।
सम्यकदर्शन ज्ञान चरण निधि, ये हैं संपत तोरी ।
सदा विलसो शिवगोरी, छांडि दे या बुधि भोरी ॥ २ ॥

सुखिया भये सदीव जीव जिन, यासों ममता तोरी।
'दौल' सीख यह लीजै पीजे, ज्ञानपियूष कटोरी।
मिटै पर चाह कठोरी, छांडदे या बुद्धि भोरी ॥ वृथा० ॥३॥

[४२५—राग काफी होरी]

श्रीजिन पूजा रचाई, भली ये वसंत रितु आई ।' टेर ॥
कंचन झारी गंगा जल भरि, श्रीजिन न्होन कराई :
फिर वसु द्रव्य धोय शुभ उत्तम, पूजन मन लवलाई,
जातैं बहु पुन्य बढाई, श्रीजिन पूज रचाई ॥ १ ॥
फिर जल चदन अच्चत लेकर, द्रव्य सुगंध मंगाई ।
नैवज दीपक फल उत्तम, वसु विधि अर्घ चढाई,
जन्म अब सफल कराई, श्रीजिन पूज रचाई ॥ २ ॥
ताल मृदंग झांझ ढफ मोचंग, ताल सुरनमों गाई ।
गीत नृतजु महोत्सव करिकै, पाप की धूलि उडाई,
सुमति सों प्रीति लगाई, श्रीजिन पूज रचाई ॥ ३ ॥
सम्यक् रंग गुलाल छाय सुभ, ध्यान अतर गरणाई ।
निज परणति सों होरी खेली, तो बलदेव जिन गुणगाई,
मोय शिव द्यौ जिन राई, श्रीजिन पूज रचाई ॥ ४ ॥

[४२६—राग काफी होरी]

नाथ भये ब्रह्मचारी, सखी घर में न रहोंगी ॥ टेर ॥
पाणिग्रहण काज प्रभु आये, सहित समाज अपारी ।
ततछिन ही वैराग भये हैं, पशु करुना उर धारी ॥ १ ॥

एक सहस्र अष्ट लच्छनजुत, वो छवि की बलिहारी।
ज्ञानानद मगन निशिवासर, हमरी सुरत बिसारी ॥ २ ॥
मैं भी जिनदीक्षा धरिहौं अब जाकर श्रीगिरनारी।
'भागचन्द' इमि भनत सखिनसों, उग्रसेनकी कुमारी ॥३॥

[५२७—राग काफी होरी]

आयो पर्व अठाई चलो भवि पूजन जाई ॥ टेर ॥
श्री नंदीसुर के चहुँदिशि में, बावन मंदिर गाई।
एक अंजन गिर चार दधि मुख, रतिकर आठ बनाई,
एक इक दिशि में गाई ॥१॥
अंजन गिरी अंजन के रंग, दधिमुख दधि सम पई।
रतिकर स्वर्ण वरण है ताकी उपमा वरणी न जाई,
निरूपम ता छवि छाई ॥ २ ॥
स्वर्गलोक के सर्व देव मिलि, तहां पूजन को जाई।
पूजन वन्दन को हमरो जी, बहुत रह्यो ललचाई,
करूँ क्या जान सकाई ॥ ३ ॥
यातै निज थानक जिन मंदिर तामें थाप्यो भाई।
पूजन वंदन हरष से कीनो, तनमन प्रीति लगाई,
शिखर मनसा हुलसाई ॥४॥

[५२८—राग काफी होरी]

पिया बिन कैसे खेलूँ होरी ॥ टेर ॥
आतम राम पिया नहिं आये, मोकूँ कैसी होरी ॥ १ ॥

एक बार प्रीतम संग खेलैं, समकित केसर घोरी।
'द्यानत' मैं वो समय कब पाऊँ सुमति कहै कर जोरी।२।

[५१६—राग काफी होरी]

मान ले या सिख मोरी, झुकै मत भोगन ओरी॥ टेर॥
भोग भुजंगभोगसम जानो, जिन इनसे रति जोरी।
ते अनन्त भव भीम भरे दुख, परे अधोगति पोरी,
बंधे दृढ़ पातक डोरी॥ १॥
इनको त्याग विरागी जे जन, भये ज्ञानवृषधोरी।
तिन सुख लह्यो अचल अविनाशी, भवफांसी दई तोरी,
रमैं तिन संग शिवगोरी॥ २॥
भोगनकी अभिलाष हरनको त्रिजगसंपदा थोरी।
यातैं ज्ञानानन्द 'दौल' अब, पियौ पियूष कटोरी,
मिटै भवव्याधि कठोरी॥३॥

[५२०—राग काफी होरी]

ऐसो नर भव पाय गंवायो, हे गंवायो अरे तू० ॥टेक॥
धनकूं पाय दान नहि दीनो, चारित चित नहिं लायो।
श्री जिनदेव की सेव न कीनो, मानुष जन्म लजायो,
जगत में आयो न आयो॥१॥
विषय कषाय बढ़ो प्रति दिन दिन, आतम बल सु घटायो।
तजि सतसंग भयो तू कुसंगी, मोक्ष कपाट लगायो,
नरक को राज कमायो॥ २॥

रजक श्वान सम फिरत निरंकुश, मानत नाहि मनायो।
त्रिभुवन पति होय भयो है भिखारी, यह अचरज मोहि आयो
कहाते कनक फल खायो ॥ ३ ॥
कंद मूल मद मांस भखन कूं, नित प्रति चित्त लुभायो।
श्री जिन वचन सुधा सम तजि कै, नयनानंद पछतायो,
श्री जिन गुण नहीं गायो ॥ ४ ॥

४० [५३१—राग काफी होरी

मेरो मन ऐसी खेलत होरी ॥ टेक ॥
मन मिरदंग साजकरि त्यारी, तनको तमूरा बनोरी।
सुमति सुरंग सरंगी बजाई, ताल दोऊ कर जोरी,
राग पांचौं पद कोरी ॥ मेरो० ॥१॥
समकित रूप नीर भर झारी, करुना केशर घोरी।
ज्ञानमई लेकर पिचकारी, दोउ कर माहिं सम्होरी,
इन्द्री पांचौं सखि बोरी। मेरो मन ॥ २ ॥
चतुरदानको है गुलाल सों, भरि भरि मूठि चलोरी।
तप मेवाकी भरि निज झोरी, यशको अबीर उडोरी,
रंग जिनधाम मचोरी। मेरो मन० ॥ ३ ॥
दौलत बाल खेले अस होरी, भवभव दुःख टलोरी।
शरना ले इक श्रीजनको री, जगमें लाज हो तोरी,
मिलै फगुआ शिव होरी। मेरो मन० ॥४॥

[५३१—राग-काफी होरी]

भाखूं हित तेरा, सुनि हो मन मेरा, भाखूं ॥ टेक ॥
नर नरकादिक चारों गतिमें, भटक्यो तू अधिकानी।
परपरणति में प्रीति करी निज परनति नाहिं पिछानी,
सहै दुख क्यों न घनेरा। भाखूं ॥ १ ॥
कुगुरू कुदेव कुपंथ पंक फंसि, तैं बहु खेद लहायो।
शिवसुख दैन जैन जगदीपक, सो तैं कबहुं न पायो,
मिट्यो न अज्ञान अंधेरा। भाखूं ॥२॥
दर्शनज्ञान चरण तेरी निधि सो विधि ठगन ठगी है।
पांचों इन्द्रियन के विषयनमें तेरी बुद्धि लगी है।
भया इनका तू चेरा। भाखूं ॥३॥
तू जगजाल विषै बहु उरझ्यो, अब कर ले सुरझेरा।
दौलत नेमिचरन पंकजका हो तू भ्रमर सवेरा।
नशै ज्यों दुख भवकेरा। भाखूं ॥४।

[५३२—राग सिन्धकाफी]

मैं आयो प्रभुजी तोरी शरण ॥ टेर ॥
लख चोरासी के माहीं प्रभुजी,
करतो फिरयो मैं जामण-मरण ॥ १ ॥
आन देव मैं भूलर सेवे,
तुम हो प्रभूजी तारण तरण ॥ २ ॥

सेवक को लखि अपनो प्रभूजी,
सेवा दीजिये निज ही चरण ॥ ३ ॥

[५३४—राग काफी होरी]

नेम ने मोरी एक न मानी—न मानी ॥ टेर ॥
गिरि के जवैया तू मेरे भैया टुक सुन जाना कहानी ।
नेम पियासूं यों जा कहियो, तुम रजमति की न मानी,
नाथ कैसी मन में ठानी ॥ १ ॥
शरमकी वतिया मैं पतिया लिखतहूँ, लिखत भई शरमानी ।
संगकी सहेली देत मोहे तानो, कैसी भई है खिसानी
वात कछु वन नहिं आनी ॥ २ ॥
दीक्षाधारी मुझको विडारी मुक्ति के संग लगानी ।
शिवतिय चाह निजतिय छांडी, भव भव प्रीति तुडानी,
किन दई शिक्षा सयानी ॥ ३ ॥
अतरजामी हो जगनामी तुमते ना कछु छानी ।
नैया पडी भवदधि के बीचमें सुधि लेनाजी सुज्ञानी,
आनके मुझको तिरानी ॥ ४ ॥
नेमयति थाकी एक न मानी, जगतृणवत जु जानी ।
नगन भये कचलोच कियो है, सम्यक रतन सहानी,
चली हर श्याम जुवानी ॥ ५ ॥

[५२५—राग काफी होरी]

समझाओ जी आज कोई करुनाधरन,
आये थे ब्याहन काज वे तो भये हैं
विरागी पशुदया लख लख ॥ टेक ॥
विमल चरन पागी करन विषय त्यागी।
उनने परम ज्ञानानंद चख चख ॥ समझाओ० ॥ १ ॥
सुभग सुकति नारी, उनहिं लगी प्यारी,
हमसों नेह कछू नहीं रख रख ॥ समझाओ० ॥ २ ॥
वे त्रिभुवनस्वामी, मदनरहित नामी,
उनके अमर पूजे पद नख नख ॥ समझाओ० ॥ ३ ॥
'भागचन्द' मैं तो तलफत अति
जैसे जलसों तुरत न्यारी जक झख झख ॥ समझाओ० ॥४॥

[५२६—राग सिन्दूरिया]

अशरण शरण कृपाल लाल कैसे जावोगे ॥ टेर ॥
इक दिन सरस बसंत समय में केशव की सब नारी।
प्रभू प्रदक्षण रूप खडी ह्वै कहत नेम पर वारी ॥ १ ॥
कुंकुम ले मुख मलत रुकमणि, रंग छिरकत गांधारी।
सतभामा प्रभू ओर जोरकर छोरत है पिचकारी ॥ २ ॥
ब्याह कबूल करोतो छूटो इतनी अरज हमारी।
ओंकार कहके प्रभु मुलके छॉड दिये जगतारी ॥ ३ ॥

पुलकित बदन मदन पितु भामिनी निज निज सदन सिधारी ।
डोलत यादव संग व्योम शशि ज्यों नगन हितकारी ॥४॥

[४३७—राग बिन्द्रदिया]

कैसा ध्यान धरा है जोगी ॥ टेक ॥
नयन मूंद दोउ भुजा झुलावे नासादृष्टि धरा है जोगी ॥१॥
बाहर तन मलिनता दीखत अंतरंग उजला है ।
विषय कषाय त्याग धर धीरज. समता रंग भरा है ॥२॥
क्षुधा तृषा परीषह सहै ते आतम रंग भरा है ।
'ज्ञान राय' लख धन्य साधु को नमूं नमूं उचरा है ॥३॥

[५३६—राग गणगौर]

जानो ओ तो म्हारी सुन लीजोजी हो जिन म्हाका स्वामी ।टेर।
म्हे भूल्या म्हाने ई विधि बांध्या, थे छुटकारौ कीज्योजी ॥
अब म्हे थाकै शरणे आया थे निरवाह करीज्योजी ।२।
जौ लौं रहे 'बुधजन' जगमांही तौ लों दर्शन दीज्योजी ॥३॥

[५४०—राग गणगौर]

बिन देख्या रह्यो नहीं जाय, जिनजी लागे छवि प्यारी०॥
सहस नेत्र कर सुरपति निरखे, तोउ तृपति न थाय ॥१॥
कोटि दिवाकर और निशाकर, इन द्युति ते अधिकाय॥२॥
आनन्द होत हियामें तब ही रोम रोम हुलसाय ॥३॥
नेम दरश को जो उर धारै, भवसागर तिर जाय ॥४॥

[५४१—राग गणगौर]

के दिन के जी मिजमान कीं पर करोजी गुमान ॥ टेक ॥
आये कहां ते कहां जावोगे ये राखो उर ध्यान ॥ १ ॥
नारायण बलभद्र चक्रवर्ति नाना निधि के निधान ।
अपनी अपनी वारी भुगतके पहुंचे परभव स्थान ॥ २ ॥
झूंठ बोल पापाचारी कर मत पीडो पर प्राण ।
तन मन धन अपनो दे 'बुधजन' कर उपकार जहान ॥ ३ ॥

[५४२ राग—गणगौर]

म्हारी सुनजो परम दयाल तुमसे अरज करूं ॥ टेर ॥
आन उपाय नहीं इस जगमें, जग तारक जिनराय
तोरे पाय परूं ॥ १ ॥
साथ अनादि लगे विधि मेरे, करत रहत बेहाल
इनको कोलौं भरूं ॥ २ ॥
कर करुणा करमनको काटो, जनम मरण दुखदाय
इनते बहुत डरूं ॥ ३ ॥
चरण शरण तुम पाय अनूपम बुधजन मांगत येह
गति गति नाहिं फिरूं ॥४॥

[५४३—राग गणगौर]

म्हारी कौन सुनै थे सुनज्यो श्री जिनराज ॥ टेर ॥
और सभी मतलबके गाहक म्हारो सरत न काज ।
मो से दीन अनाथ रंक कू तुमसे बनत इलाज ॥ १ ॥
निज पर नेक दिखावत नाहीं, मिथ्या तिमिर समाज ।
चन्दप्रभु प्रकाश करो उर ध्याऊँ धाम निजाज ॥ २ ॥
थकित भयो हु गति गति फिरता, दरशन पायो आज ।
बारंबार बीनवै 'बुधजन' शरण गहे की लाज ॥ ३ ॥

[५४४ - राग गणगौर]

हे जीया एती तो विचारो जगमें पावणा ॥ टेक ॥
यह संसार महाजग झूंठो यामें सार न पावना ॥१॥

लख चोरासी में तू भरम्यो भौरा जन्म मरण दुख भावना।
तेरा साहिब तुझमें बसत है 'बुधजन' आपो संभारना॥३॥

❀ श्रीपतिजी पत राखहु मेरी ❀

श्रीत्रिशला जिनकी जननी, तिनकी भगिनी लघु चंदना हेरी।
रम्य कशील सुरूपनिधानके, संकटमाहिं परी पग बेरी॥
वीर जिनेश गये तहँ आप, कटी दुखफंद रटी सुर भेरी।
मैं अति आतुर टेरतहों, अब श्रीपतिजी पत राखहु मेरी।१।

यानविषैं सिरिपालि तिया लखि, सेठ कुबुद्धि धरी जिहंवेरी।
शील विनाशनको शठ सो, हठ कीन मलीन उपाय घनेरी।
नारि पुकार सुनो मंझधार, उबार लियो दुखदंद निवेरी।
मैं शरनागत आन परयो, अब श्रीपतिजी पत राखहु मेरी।२।

झूठ कलंक लगाय सतीकहं, राय गिराय दियो पदसेरी।
फाटक बंद भयो पुरको न, खुलै तहं कोटि उपाय कियेरी॥
ध्याय तुम्हें जल चालनिमें भरि, सींच्यो सती तब द्वार खुलेरी
क्यों न सुनो हमरी विनती अब, श्रीपतिजी पत राखहु मेरी।३।

आगविषैं जुगनाग जरंत, विलोकि तुरन्त तिन्हें तिहि बेरी।
पास कुमार दियो नवकार, उबार दियो दुख दुर्गति सेरी॥

सो तत्काल भये धरनेश्वर, श्री पद्मावति पुण्य भरेरी ।
मैं प्रभुकों तज जाऊं कहां अब, श्रीपतिजी पत राखहु मेरी ।४।

चर्मशरीर श्रीपाल नरेसुरको, जब कोढ महा गद घेरी ।
मैना सती तिनकी वनिता, तुम भक्तिविषै अनुराग धरेरी ॥
ध्याय लगाय दियो चरनोदक, कंचन काय करी तिहिं बेरी॥
हो जन रंजन आरत भंजन, श्रीपतिजी पत राखहु मेरी ।५।

सागरमध्य परे शिरिपाल, कुचाल करी जब सेठ तबेरी ।
पावन नाम जप्यो अभिराम, जो तारत है भवसिन्धु सबेरी॥
ताहि उबार लियो सुखकार, सो राज कियो फिर मुक्ति बरेरी।
आज विलम्बको कारन कौन है, श्रीपतिजी पत राखहु मेरी ।६।

सेठ सुबुद्ध श्रीधन्नाविशुद्धको, पापिन वापीविषैं जब गेरी ।
नाम अधार रह्यो तिहिं बार, पुकारत आरत तासु निवेरी॥
वेद उचारत आरत भंजन, वत्सल लच्छन है प्रभु तेरी ।
आज विलंबको कारन कौनहै, श्रीपतिजी पत राखहु मेरी ।७।

श्रीजिनवीर विराजै जबै, विपुलाचलपै सुनिके सुरभेरी ।
मींडक जात लिये जलजात, प्रफुल्लितगात सुभक्ति धरेरी ॥
दंतिपदैं मरते तुरिते तिहिं, कीन्हों प्रभा सुर देव बडेरी ।
मो दुखदेख द्रवौ किन साहिब, श्रीपतिजी पत राखहु मेरी ।८।

आम चढ़ाय सुआ सुख पाय, भयो सुर जाय विमान चढेरी
जो तुमको धरि नेह जजे, भवि दर्वित भावित भक्त भरेरी॥

देत तिन्हें अविनश्वर आनन्द, हो तुम दीनदयाल
मोहि न है अवलम्बन दूसरो, श्रीपतिजी पत राखहु मे

श्रीमत मानतुङ्ग मुनिन्दको, भूपति बंद कियो भरि
श्री भगतामर पाठ रच्यो तहँ, आनि चक्रेश्वरी मोद व
बंधन काट दियो ततकार, भयो जयकार बजी सुरभेरी,
मोहि नहीं अवलंब है दूसरो, श्रीपतिजी पत राखहु मेरी

मंगलमूरत श्रीगुरु वादि, सुराजको कोढ भयो जिहिं वे
सो तुमसों चित लाय कियो, थुति नामसु एकियभाव ...
होय सहाय ततच्छिन ही, तन कीन सुवर्ण लगी नहिं
मोहि पुकारत बार भई, अब श्रीपतिजी पत राखहु मेरी।

कर्मकलंक विनाशत ही, प्रगटी अविनश्वर रिद्धि तुमेरी
जानत हो सब लोक अलोकको, केवलबोध अगाध धरे
विघ्न विनाशन उन्नतशासन, शासनमाहिं महामुनि टेरी।
मैं यह जानि गही शरनागत, श्रीपतिजी पत राखहु मेरी।१

फुटकर दोहे

ध्यावै सो पावै सही, कहत बाल गोपाल।
बनिया देत कपर्दिका, नरपति करै निहाल ॥ १ ॥
उलझे सुलझिर सुध भये, त्यों तू उलझ्यौ मान।
सुलझनिको साधन करै, तो पहुंचे निजथान ॥ २ ॥

ष्णा मिटै संतोषतैं, सेयें अति बढि जाय।
न डारैं आग न बुझै, तृनारहित बुझ जाय ॥ ३ ॥
ाहि करै सो ना मिलै, चाहि समान न पाप।
ाहि रखैं चाकरि करै, चाहि विना प्रभु आप ॥ ४ ॥
पति परैं सोच न करौ, कीजे जतन विचार।
ोच कियेतैं होत है, तन धन धर्म विगार ॥ ५ ॥
श काल वय देखिकै, करि है वैद इलाज।
यौं गेही घर बसि करै, धर्म कर्मका काज ॥ ६ ॥
र्म मोक्षको भूलिकै, कारज करि है कोय।
ो परभव विपदा लहै, या भव निंदक होय ॥ ७ ॥
ाक्ति समाखिर कीजिये, दान धर्म कुल काज।
स पावै मतलब सधै, सुखिया रहै मिजाज ॥ ८ ॥
बिना विचारै शक्तिके, करै न कारज होय।
थाह विना ज्यौं नदिनिमैं, परै सु बूडे सोय ॥ ९ ॥
मुखतैं जाप कियो नहीं, कियौ न करतैं दान।
सदा भार वहतै फिरैं, ते नर पशू समान ॥ १० ॥
सागर संपति विपति मैं, राखे धीरज ज्ञान।
कायर व्याकुल धीर तजि, सहै वचन अपमान ॥ ११ ॥
दुख मैं हाय न बोलिये, मन में प्रभुको ध्याय।
मिटै असाता मिट गयैं, करै जोग उपाय ॥ १२ ॥
धूप छांह ज्यौं फिरत है, संपति विपति सदीव।
हरष शोक करि फँसते यौं, मूढ अज्ञानी जीव ॥ १३ ॥

दुष्ट दुष्टता ना तजैं, निंदत है हर कोय ।
सुजन सुजनता क्यों तजैं, जग जस निजहित होय ।१।
दुष्ट कही सुनि चुप रहौ, बोलें है है हान ।
भाटा मारैं कीचमें, छीटे लागें आन ॥ १६ ॥
मन तुरंग चंचल मिल्या, बाग हाथ में राखि ।
जा छिन ही गाफिल रहें, ताछिन डारैं नाखि ॥१७॥
थोरा ही लेना भला, बुरा न लेना भीत ।
अपजस सुन जीना बुरा, तातैं आछी मौत ॥ [illegible]
दान धर्म व्योपार रन, करिये सकति विचार ।
बिन विचार चालैं गिरै, औंडे खाड़ [illegible] ॥१६॥
केश पकरि पलट्या [illegible], [illegible] मन बाँक ।
[illegible] परी, [illegible] मर चुके निसांक ॥२०॥
अरे जीव [illegible] तेरां कौन सहाय ।
काल [illegible] पकरे तुझे, सब को लेत बचाय ॥२१॥
को है सुत को है तिया, काको धन परिवार ।
आके मिले सराय में, बिछुरेंगे [illegible] ॥ २२ ॥
बहुत गई तुछ सी रही, उरमें धरो विचार ।
अब तो भूले डूबना, निपट नजीक [illegible] ॥ २३

सुमति